वेद मंत्र:-

पुरी में रहने वाले ‘पुरुष’ दो हैं

MAY 14, 2016 LEAVE A COMMENT

पुरी में रहने वाले ‘पुरुष’ दो हैं

– इन्द्रजित् देव

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ ‘‘सत्यार्थप्रकाश’’ के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं कि ईश्वर के अनेक नाम हैं। ये नाम गुणवाचक, सबन्धवाचक, कर्मवाचक हैं। इनके अतिरिक्त एक नाम मुखय व निज (= ओ3म्) है। इसी समुल्लास में एक नाम ‘पुरुष’ भी है। इस नाम के आधार पर एक पौराणिक विद्वान् प. गिरिधर शर्मा ने एक शास्त्रार्थ में तत्कालीन आर्य प्रतिनिधि सभा, पञ्जाब के प्रधान महात्मा मुंशीराम (=स्वामी श्रद्धानन्द जी) से एक शास्त्रार्थ में प्रश्न किया था- ‘‘स्वामी दयानन्द ने ईश्वर को पुरुष घोषित किया है। यह प्रमाण वेद में नहीं है तो स्वामी जी ने क्यों ऐसा घोषित किया?’’ इस प्रश्न के उत्तर में महात्मा मुंशीराम जी ने कहा कि वेद में ईश्वर को पुरुष कहा गया है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्

तमेवविदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

– यजुर्वेद 31-18

अर्थात् मैं ऐसे महानतम् पुरुष को जानता हूँ जो आदित्य-सूर्य के समान तेजस्वी, अन्धकार से परे है। वे ब्रह्माण्ड रूपी नगरी में निवास करने वाले प्रभु पुरुष हैं, सर्वव्यापक हैं, सर्वाधिक महान् हैं ,विभू हैं अथवा ‘मह पूजायाम्’ पूजा के योग्य हैं। उस ज्योतिर्मय प्रभु को जानकार ही मनुष्य मृत्यु को लाँघ जाता है तथा मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अन्य कोई उपाय या मार्ग नहीं है।

वेद से कुछ अन्य मन्त्रों में भी ईश्वर को पुरुष कहा गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिंविश्वतो वृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम्।

– ऋ. 10-90-1

भावार्थः–वे पुरुष विशेष प्रभु ‘अनन्त सिरों, आँखों व पाँव’ वाले हैं। सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके इसको लाँघ कर रह रहे हैं।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यज्ज भव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिहति।

– ऋ. 10-90-2

भावार्थः– ब्रह्माण्ड नगर में निवास व शयन करने वाले प्रभु सब प्राणियों पर शासन करने वाले हैं। इनके जो कर्मानुसार जन्म को ग्रहण कर चुके हैं तथा जो समीप भविष्य में ही जन्म ग्रहण करेंगे, इन प्राणियों के भी वे प्रभु ईश हैं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।

– ऋ. 10-90-3

भावार्थः– समस्त ब्रह्माण्ड पुरुष विशेष प्रभु की महिमा का प्रतिपादन कर रहा है। वे प्रभु इस ब्रह्माण्ड से बहुत बड़े हैं। यह ब्रह्माण्ड तो प्रभु के एक देश में ही है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्युपुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।

– यजुर्वेद 31/4

भावार्थः– यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत् से पृथक् तीन अंश से प्रकाशित हुआ।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षण पुरुषं जातमग्रतः

– यजुर्वेद 31/9

भावार्थः– हम अपने हृदयों को पवित्र बना वहाँ प्रभु की ज्योति को जगाएँ।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।

– य. **31/3**

भावार्थः–सारा ब्रह्माण्ड प्रभु के एक देश में है।

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।

– य. **31/5**

भावार्थः– यह संसार प्रभु द्वारा प्रारमभ में एक विराट् पिण्ड के रूप में उत्पन्न किया जाता है।

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।

– ऋ. 1-90-2

भावार्थः– यह जो कुछ भूत, वर्तमान और भविष्य है, यह सब उपलबध जगत् इस जगत् के आधार सनातन भगवान् में ही है।

वेदों में अन्य प्रमाण भी उपलबध हैं, परन्तु विस्तार भय से वेद-प्रमाण और न देकर दर्शनों के कुछ प्रमाण उद्धृत हैं-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वरः।

– योगदर्शनम् 1/24

अर्थः- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश- इन पाँच क्लेशों, शुभाशुभ कर्मों, कर्मफल तथा वासनाओं से असमबद्ध पुरुष विशेष ईश्वर कहलाता है।

आत्मा का भी यत्र-तत्र पुरुष अर्थ में प्रयोग किया गया हैं-

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्। – वेद

अर्थः – हे जीव! तुम ऊर्ध्वगतिवाला हो। तेरा नाम 'पुरुष' है। तेरी सार्थकता पुरुषार्थ करने में है।

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः।

– सांखयदर्शन 1/1

अर्थः–आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक- इन तीन प्रकार के दुःखों से अतिशय निवृत्ति परम पुरुषार्थ (=पुरुष का प्रयोजन) है। इसका प्रतिपादन करने वाले शास्त्र का प्रारमभ करते हैं।

न सर्वोच्छित्तिरपुरुषार्थत्वादि दोषात्।

– सांखयदर्शन 5/74

अर्थः– आत्मा और अनात्मा सबका उच्छेद (= नाश) भी मोक्ष नहीं है, अपुरुषार्थता होने आदि दोष से।

पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः। – सांखयदर्शन 6/45

अर्थः–पुरुष (= आत्माएँ) बहुत हैं, व्यवस्था के कारण ।

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याभावात्।

– सांखयदर्शन 5/46

अर्थः– शबद राशि वेद भी पौरुषेय नहीं है (=किसी पुरुष अर्थात् आत्मा द्वारा रचे नहीं गए) उसकी रचना करने वाले पुरुष के न होने से।

ना पौरुषेयत्वान्नित्यत्वमङ्कुरादिवत्।

– सांखयदर्शन 5/48

अर्थः–किसी पुरुष (= आत्मा) द्वारा न लिखे होने से वेदों का नित्य होना नहीं कहा जा सकता, अङ्कुरादि के समान।

यस्मिन्नदृष्टेऽपिकृतबुद्धिरुपजायते तत् पौरुषेयम्।

– सांखयदर्शन 5/50

अर्थः– जिस वस्तु में कर्त्ता के द्वारा अदृष्ट होने पर भी यह रची गई है, ऐसी बुद्धि होती है, वह वस्तु पौरुषेय (= आत्मा द्वारा रची गई) कही जाती है।

सत्व पुरुषयोः शुद्धिसामये कैवल्यम्।

– योगदर्शनम् 3/54

अर्थः– सत्व और पुरुष (= आत्मा, जीव) की शुद्धि समान होने पर कैवल्य (= मोक्ष) हो जाता है।

ब्राह्मणः पुरं वेदेति पुरष उच्यते।

-अर्थववेद 10/2/30

अथर्व. की दृष्टि से ''पुरं वेत्तीति पुरुषः' 'ऐसा पुरुष निर्वचन है। श्रुति की दृष्टि से यह निर्वचन जीव (= आत्मा) का ही प्रतीत होता है, क्योंकि ब्रह्मपुर का ज्ञान वही करेगा। जहाँ ब्रह्म ओत-प्रोत है, वह सब ही ब्रह्म का पुर हुआ तथा वह है सर्व जगत्, उसे समपूर्णतः प्रभु ही जानते हैं, इस दृष्टि से वे भी पुरुष कहे जा सकते हैं।

आत्मा को 'पुरुष' क्यों कहते हैं? वह पूः अर्थात शरीर में रहता है, अतः पुरिषादः कहाता हुआ पुरुष कहा जाने लगा अथवा उसमें सोता है, वह पुरिशय होता हुआ 'पुरुष' हो गया- पुरुषः पुरिषादः पुरिशयः।

पूरयति अन्तः अन्तर पुरुषम् अभिप्रेत्य- अर्थात् अन्दर से समपूर्ण जगत् को भरपूर कर रहा है, अन्तर्यामी होने से सर्वत्र व्याप्त है, ऐसा विग्रह परमेश्वर को लक्ष्य करके ही किया जाता है।

इससे सिद्ध होता है कि 'पुरुष' शबद का अर्थ प्रसंग व परिस्थिवशात् आत्मा तथा परमात्मा – इन दोनों में से कोई भी अर्थग्रहण किया जाना चाहिए।

आत्मा रूपी 'पुरुष' और परमात्मा रूपी 'पुरुष' में अन्तर भी समझना अपेक्षित है। इस विषय में निवेदन यह है परमात्मा विशेष महान्तम् पुरुष है। यह यजुर्वेद के मन्त्र 31/18 में तथा योगदर्शन के सूत्र 1/24 में इस लेख में उद्धृत किया जा चुका है, जबकि आत्मा सामान्य है। परमात्मा व आत्मा काल की दृष्टि से अनन्त हैं, परन्तु व्यापकता की दृष्टि से परमात्मा सर्वत्रव्यापक है और आत्मा की व्यापकता सीमित है। आत्मा सत्वचित् है तो परमात्मा सत्, चित्त था आनन्द स्वरूप है। आत्मा सर्वशक्तिमान् नहीं है, अर्थात् उसे करणीय कार्य करने के लिए दूसरे व्यक्तियों तथा परमात्मा से सहायता लेनी पड़ती है, जबकि परमात्मा अपने कार्य करने के लिए किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं समझता। परमात्मा अनुपम है, परन्तु आत्मा अनुपम नहीं है। परमात्मा सृष्टिकर्ता है, परन्तु आत्मा ऐसा नहीं है।

ईश्वर अभय है तो जीव अधिकतर भयशील ही रहता है। परमात्मा सर्वान्तर्यामी है, परन्तु आत्मा अन्तर्यामी हो नहीं सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है, परन्तु आत्मा अल्पज्ञ है। आत्मा शरीर को प्राप्त करता है, परन्तु परमात्मा ने कभी शरीर धारण नहीं किया तथा न ही ऐसा करेगा। परमात्मा अकाम है, परन्तु आत्मा ऐसा नहीं हो सकता। कुछ अन्य भी परस्पर भेद हैं।

– चूनाभट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर (हरियाणा

अथर्ववेद मे यथार्थ स्वर्ग का वर्णन'

APRIL 18, 2016 LEAVE A COMMENT

ओ३म्

'अथर्ववेद मे यथार्थ स्वर्ग का वर्णन'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

अथर्ववेद के मन्त्र 6/120/3 में यथार्थ स्वर्ग का वर्णन हुआ है। लोगों ने पुराणों के आधार पर मिथ्या स्वर्ग की कल्पना कर रखी है और उसी को मानते हैं। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि पुराण वर्णित स्वर्ग संसार व ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। हम एकमात्र यथार्थ वैदिक स्वर्ग पर पहले आर्यजगत के एक महान संन्यासी स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी का संक्षिप्त वेदव्याख्यान दे रहे हैं। इसके बाद वेदमन्त्र व उसके पदों वा शब्दों का अर्थ भी प्रस्तुत है।

यथार्थ स्वर्ग का व्याख्यान

स्वर्ग किसी देशविशेष (स्थान विशेष) या लोकविशेष का नाम नहीं है, वरन् उस अवस्था को स्वर्ग कहते हैं, जिस अवस्था मे मनुष्य को शारीरिक, आत्मिक, पारिवारिक आदि सब प्रकार के सुख प्राप्त हैं, जिस अवस्था में मनुष्य को कोई शारीरिक क्लेश, मानसिक पीड़ा नहीं सताती, माता–पिता तथा सन्तान का

सुख प्राप्त हो, शरीर सुन्दर तथा सुडौल हो, कोई त्रुटि न हो, इसकी प्राप्ति का साधन सद्विचार तथा उत्तम सदाचार है। दूसरे शब्दों में रोग, दुःख, अंग–भंग, कुरूप शरीर आदि पापों का फल है। संक्षेप में 'सुखविशेष भोग तथा उसकी सामग्री' का नाम स्वर्ग है। (यह स्वर्ग मनुष्य के अपने भीतर, अपने निवास, परिवार, समाज व देश में ही होता है व माना जा सकता है। वाल्मीकी रामायण में भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम लक्ष्मण जी से कहते हैं कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' पूरे श्लोक का भाव है कि मैं जानता हूं कि लंका सोने की है परन्तु फिर भी मुझे यह अच्छी नहीं लगती। क्योंकि अपनी माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। यह इसलिए कि जो सुख विशेष अपनी माता और अपनी जन्म व देश भूमि में मनुष्य को प्राप्त होता व हो सकता है, वह अन्यत्र नहीं मिल सकता। –लेखक)

अथर्ववेद का मन्त्र संख्या 6/120/3

यात्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः।

अश्लोणा अंगैरह्रुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्।।

मन्त्र का पद वा शब्दार्थ

यत्र=जिस अवस्था में सुहार्दः=उत्तम हृदयवाले अपने तन्वः=शरीर के रोगम्=रोग को विहाय=छोड़कर, अर्थात् पूर्णतया नीरोग होकर अंगैः अश्लोणाः=अंग-भंगरहित, अर्थात् पूर्णांगवयवयुक्त शरीरवाले तथा अह्रुताः=शरीर, आत्मा तथा मन की कुटिलता से विरहित हुए मदन्ति=सुखी रहते हैं तत्र स्वर्गे=उस स्वर्ग में हम पितरौ=माता-पिता च=और पुत्रान्=पुत्रों-सन्तान को पश्येम=देखें, अर्थात् हमारे माता-पिता तथा सन्तान सदा सुखी रहे।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोनः09412985121

वैदिक त्रैतवाद (वेद मन्त्र भावार्थ)

MARCH 31, 2016 LEAVE A COMMENT

वेद मन्त्र भावार्थ

-लालचन्द आर्य

आप परोपकारी के सभी अंकों में अनेक स्थानों पर महर्षि दयानन्द जी के वेद मन्त्रों के भावार्थ प्रकाशित करते हो, जिनसे पाठकों को ऋषि की विशेष मान्यताओं का बार-बार बोध होता रहता है। यह वेद प्रचार की एक उत्तम क्रिया है। मैं महर्षि दयानन्द के पाँच वेद मन्त्रों के भावार्थ परोपकारी में प्रकाशन के लिये भेज रहा हूँ, जिनके अध्ययन से वैदिक त्रैतवाद अर्थात् जीव, प्रकृति और परमात्मा के विषय में मेरी सभी शंकाओं का समाधान हो गया है। इन मन्त्रों के भावार्थ में ऋषि की विशेष मान्यतायें हैं-

1. भावार्थ- जो मनुष्य विद्या और अविद्या को उनके स्वरूप से जानकर, इनके जड़-चेतन साधक हैं, ऐसा निश्चय कर सब शरीरादि जड़पदार्थ और चेतन आत्मा को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये साथ ही प्रयोग करते हैं, वे लौकिक दुःख को छोड़कर परमार्थ के सुख को प्राप्त होते हैं जो जड़, प्रकृति आदि कारण वा शरीरादि कार्य न हो तो परमेश्वर जगत् की उत्पत्ति और जीव कर्म, उपासना और ज्ञान के करने को कैसे समर्थ हों? इससे न केवल जड़ और न केवल चेतन से अथवा न केवल कर्म से तथा न केवल ज्ञान से कोई धर्मादि पदार्थों की सिद्धि करने में समर्थ होता है। – महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ 40-14
2. भावार्थ- इस मन्त्र में उपमालंकार है। जैसे अग्नि के कारण सूक्ष्म और स्थूल रूप हैं, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी के भी हैं, वैसे सब उत्पन्न हुए पदार्थों के तीन स्वरूप हैं। हे विद्वन्! जैसे तुमहारा विद्या जन्म उत्तम है, वैसा मेरा भी हो। -महर्षि दयानन्द, ऋग्वेद, भावार्थ- मं. 1 सू. 163 म. 4
3. भावार्थ-हे मनुष्यो! इस शरीर में दो चेतन नित्य हुए- जीवात्मा और परमात्मा वर्तमान है, उन दोनों में एक अल्प, अल्पज्ञ और अल्प देशस्य है। वह शरीर को धारण करके प्रकट होता, बुद्धि को प्राप्त होता और परिणाम को प्राप्त होता तथा हीन दशा को प्राप्त होता, पाप और पुण्य के फल का भोग करता है। द्वितीय परमेश्वर ध्रुव निश्चल, सर्वज्ञ, कर्म फल के समबन्ध से रहित है, तुम लोग निश्चय करो। – महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. 6, सु. 9, म. 4 भावार्थ
4. भावार्थ- हे मनुष्यो! इस शरीर में सच्चिदानन्द-स्वरूप अपने से प्रकाशित ब्रह्म-द्वितीय, तृतीय-मन, चौथी- इन्द्रियाँ, पाँचवें- प्राण, छठा- शरीर वर्तमान है। ऐसा होने पर समपूर्ण व्यवहार सिद्ध होता है, जिनके मध्य में सबका आधार ईश्वर, देह, अन्तरण, प्राण और इन्द्रियों का धारण करने वाला और जीवादिकों का अधिष्ठान शरीर है, यह जानो। – महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. 6, सु. 9, म. 5 भावार्थ
5. भावार्थ- जो ज्ञानी धर्मात्मा मनुष्य मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं, उनका उस समय ईश्वर ही आधार है। जो जन्म हो गया- वह पहला और जो मृत्यु वा मोक्ष हो के होगा- वह दूसरा, जो है वह तीसरा और जो विद्या वा आचार्य से होता है- वह चौथा जन्म है। यह चार जन्म मिलके एक जन्म, जो मोक्ष के पश्चात् होता है, वह दूसरा जन्म है। इन दोनों जन्मों के धारण करने के लिये सब जीव प्रवृत्त हो रहे हैं, यह व्यवस्था ईश्वर के अधीन है। – महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. 1, सु. 31, म. 7
6. भावार्थ- हे परमेश्वर और जीव! तुम दोनों में बल, विज्ञान तथा कर्मों की प्रेरणा एक साथ होते हैं। – महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. 1, सु. 16, म. 4

– म.नं. **1223/34,** शीतलनगर**,** बागवालीगली**,** झज्जररोड**,** रोहतक**,** हरि.-**124001**

उपदेश प्रारमभ होने से पूर्व आप एक वेदमन्त्र (ओं यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयम् कूरू…..) का उच्चारण करते हैं। मैं भी दैनिक यज्ञ में प्रतिदिन आहुति इस मन्त्र से डालती हूँ, परन्तु इसका मुझे भावार्थ पूर्ण रूप से समझ नहीं आ रहा है। कृपया, इसका भावार्थ समझाएँ।

MARCH 16, 2016 LEAVE A COMMENT

जिज्ञासा- उपदेश प्रारमभ होने से पूर्व आप एक वेदमन्त्र (ओं यतो यतः समीहसे ततो नोऽभयम् कूरू…..) का उच्चारण करते हैं। मैं भी दैनिक यज्ञ में प्रतिदिन आहुति इस मन्त्र से डालती हूँ, परन्तु इसका मुझे भावार्थ पूर्ण रूप से समझ नहीं आ रहा है। कृपया, इसका भावार्थ समझाएँ।

– सुमित्रा आर्या, **261/8,** आदर्शनगर, सोनीपत, हरियाणा

समाधान-

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरू।

शं नः कुरू प्रजायोऽभयं नः पशुभयः।।

-यजु. 36.22

इस मन्त्र का पदार्थ सहित भावार्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि लिखते हैं पदार्थ आर्याभिविनय पुस्तक से लिया है। (यतः+यतः) जिस-जिस देश से (समीहसे) समयक् चेष्टा करते हो (ततः) उस-उस देश से (नः) हम को (अभयम्) भय रहित (कुरू) करो (शम्) सुख (नः) हमको (कुरू) करो (प्रजायः) प्रजा से (अभयम्) भय रहित (नः) हमको (पशुयः) पशुओं से।

भावार्थ विस्तार से यह है- हे परमेश्वर! आप जिस-जिस देश से जगत् के रचना और पालन के अर्थ चेष्टा करते हैं, उस-उस देश से हमको भय से रहित करिए, अर्थात् किसी देश (स्थान) से हमको किञ्चित् भी भय न हो, वैसे ही सब दिशाओं में जो आपकी प्रजा और पशु हैं, उनसे भी हमको भयरहित करें तथा हमसे उनको सुख हो, और उनको भी हम से भय न हो तथा आपकी प्रजा में जो मनुष्य और पशुआदि हैं, उन सबसे जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पदार्थ हैं, उनको आपके अनुग्रह से हमलोग शीघ्र प्राप्त हों, जिससे मनुष्य जन्म के धर्मादि जो फल हैं, वे सुख से सिद्ध हों।। – ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका ई.प्रा.वि.

अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याखयास्याम्

MARCH 12, 2016 9 COMMENTS

अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याखयास्याम्

– शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक वाङ्मय में इस विषय पर कई स्थानों पर विचार किया गया है। ऋग्वेद, मुण्डकउपनिषद्, तैत्तिरीयउपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, छान्दोग्यउपनिषद् तथा बृहदारण्यकउपनिषद् में इस विषय पर विस्तार से विचार किया गया है। इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर मैं भी इस विषय पर पूर्व में छः लेख लिख चुका हूँ। एक बार पुनः इसी विषय को लिखने का उपक्रम इसलिए करना पड़ रहा है कि आर्य समाज के ही प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती आन्ध्रप्रदेश ने माह जून 2015 में 'वैदिकपथ' पत्रिका में एक लेख प्रकाशित करवाया है, जिसमें सृष्टि की आयु के स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्णय का विरोध किया है।

सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में विज्ञान का मानना तो यह है कि सृष्टि की उत्पत्ति Big Bang (भयंकर विस्फोट) के साथ ही प्रारमभ हुई और परिवर्तन के कई चरणों से गुजरती हुई वर्तमान स्थिति में पहुँची है। Big Bang के साथ ही आकाश और समय का कार्य प्रारमभ हुआ। सृष्टि उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार रहा- आकाश, ज्वलनशील वायु, अग्नि, जल और निहारिका का मण्डल। निहारिका मण्डल में ही सौर मण्डलों ने स्थान पाया। पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से छिटक कर अलग होने के बाद धीरे-धीरे परिवर्तित होकर वर्तमान रूप में हुई। श्वास लेने योग्य वायु के बनने, पानी के पीने योग्य होने पर पानी के अन्दर सर्वप्रथम जलचरों को जीवन मिला। फिर क्रमशः जल-स्थलचर, स्थलचर और आकाशचर प्राणियों की उत्पत्ति हुई। सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व क्या था? इस विषय में विज्ञान का कहना है कि Big Bang के बाद ही सृष्टि नियम विकसित हुए हैं और उनके आधार पर हम घोषित कर सकते हैं कि भविष्य में कब क्या होगा और वे घोषणाएँ सब सत्य सिद्ध हो रही हैं, अतः हमें Big Bang के पूर्व की स्थिति को जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अज्ञान से हमारे वैज्ञानिक कार्य पर कोई भी प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। अस्तु।

वैज्ञानिक विचार धारा पर संक्षेप में वर्णन कर देने के उपरान्त अब हम इस विषय पर वैदिक वाङ्मय के विचार पाठकों के सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। वैदिक वाङ्मय में सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व की स्थिति का वर्णन भी किया गया है। पाठकों के लिए नासदीय सूक्त के मन्त्र दिये जा रहे हैं-

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमाऽपरोयत्।

किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नभः किमासीद्गहनं गभीरम्।।

-ऋग्वेद 10.129.1

अर्थ- (नासदासीत्) जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी, तब एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर और दूसरा जगत् का कारण विद्यमान था। असत् शून्य नाम आकाश भी उस समय नहीं था

क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नहीं था। (ना सदासीत्तदानीम्) उस काल में सत् अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिलाकर जो प्रधान कहाता है, वह भी नहीं था। (नासीद्रजः) उस समय परमाणु भी नहीं थे तथा (नो व्योमाऽपरोयत्) विराट अर्थात् जो सब स्थूल जगत् के निवास का स्थान है, वह (आकाश) भी नहीं था। (किमावरीव.......गभीरम्) जो यह वर्तमान जगत् है, वह भी अत्यन्त शुद्ध ब्रह्म को नहीं ढँक सकता है और उससे अधिक वा अथाह भी नहीं हो सकता है, जैसे कोहरे का जल पृथ्वी को नहीं ढँक सकता है तथा उस जल से नदी में प्रवाह नहीं आ सकता है और न वह कभी गहरा अथवा उथला हो सकता है।

तम आसीत्तमसा गुलमग्रेऽप्रकेतं सलितं सर्वमा इदम्।

तुच्छ्येनावपिहितं यवासीत्तपसस्तन्माहिना जायतैकम्।।

– ऋ. 10.129.3

अर्थ- उस समय यह जगत् अन्धकार से आवृत, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सममुख एकदेशी आच्छादित तथा पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारण रूप से कार्य रूप में कर दिया।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।

आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।।

– ऋ. 10.129.2

सृष्टि के पूर्व प्रलयकाल में मृत्यु नहीं थी, मृत्यु के अभाव में अमरता भी नहीं थी। न मारक शक्ति के विपरीत अमृत अथवा सब जीव मुक्तावस्था में थे, ऐसा भी नहीं कह सकते। रात्रि एवं दिन का प्रज्ञान भी नहीं था। उस समय केवल वायु की अपेक्षा न रखने वाला सदा जाग्रत ब्रह्म ही था। उस समय उससे भिन्न, उसके समान अथवा उससे अधिक कुछ भी नहीं था। प्रकृति ऊर्जारूप में परिवर्तित होकर अव्यक्त थी।

फिर सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई, इस पर तैत्तिरीय उपनिषद् का कहना है-

'सो कामयत। बहुस्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत। यदिद किञ्च। तत सृष्टावा तदेवानु प्राविशत्। तदनुप्रविश्य। सच्चत्यच्यामवत्। निरुक्तं चानिरुक्तं च। निलयन चानिलयन च। विज्ञानं चापिज्ञानं च। सत्यं चानृतं च। सत्यमभवत। यदिद किञ्च। तत्सत्यमित्या चक्षते।

-तै.उप. ब्रह्मानन्दवल्ली अनुवाक 6

अर्थ- उसने कामना की कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ, तब उसने तप किया। क्रिया का प्रारमभ हो गया। जब यह क्रिया बढ़ते-बढ़ते उग्र रूप में पहुँची, तब उसे तप कहा गया। तप के प्रभाव से यह सब विश्व सृजा गया। सबकी सृष्टि करके वह ब्रह्म सृष्टि में अनुप्रविष्ट हो गया। आगे विपरीत कणों का वर्णन भी किया गया है-

सत्व रजस्तमसा सामयावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेयः स्थूल भूतानि पुरुष इति पञ्च विंशतिर्गण।।

अर्थ- सत्व, रज और तम रूप शक्तियाँ हैं। इन शक्ति रूपों की समावस्था, निश्चेष्ठावस्था प्रकट रूपावस्था को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्राएँ तथा पञ्चतन्मात्राओं से पाँच स्थूलभूत, स्थूलभूतों से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन उत्पन्न होता है। पुरुष (चेतन सत्ता) इनसे भिन्न हैं। इन 25 पदार्थों को जानना, समझना विवेक में आवश्यक है।

ऋग्वेद में सृष्टि उत्पत्ति परमेश्वर ने इस प्रकार की है-

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारइवाधमत्।

देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सद जायत।।

– ऋ. 10.72.2

प्रकृति और ब्रह्माण्ड के स्वामी परमेश्वर ने दिव्य पदार्थों के परमाणुओं को लोहार के समान धोंका, अर्थात ताप से तप्त किया है। वास्तव में इसी को वैज्ञानिकों ने भयंकर विस्फोट Big Bang कहा है। इन दिव्य पदार्थों के पूर्व युग, अर्थात् सृष्टि के प्रारमभ में अव्यक्त (असत्) प्रकृति से (सत्) व्यक्त जगत् उत्पन्न किया गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्दवल्ली के प्रथम अनुवाक में सृष्टि उत्पत्ति का क्रम भी बताया गया है-

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः समभूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधय। ओषधीयोऽन्नम् अन्नाद् रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।।

अर्थात् परम पुरुष परमात्मा से पहले आकाश, फिर वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी उत्पन्न हुई है। पृथ्वी से ओषधियाँ, (अन्न व फल फूल) ओषधियों से वीर्य और वीर्य से पुरुष उत्पन्न हुए, इसलिए पुरुष अन्न रसमय है।

पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य में से छिटक कर हुई है, इस पर कहा गया है-

भूर्जज्ञ उत्तानपदो भूव आशा अजायन्त|

अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि।।

– ऋ. 10.72.4

अर्थ- पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है। पृथ्वी से पृथ्वी की दशा को बताने वाले भेद उत्पन्न होते हैं। प्रातःकालीन उषा से आदित्य उत्पन्न होता है, अर्थात् दृष्टि गोचर होता है और सांय कालीन उषा आदित्य से उत्पन्न होती है।

सृष्टि उत्पत्ति पर विचार कर लेने पर अब सृष्टि की वर्तमान आयु पर विचार करते हैं। वर्तमान में सृष्टि का वर्णन Friedmann Model के अनुसार किया जाता है। इसमें Big Bang के साथ ही आकाश-समय निरन्तरता का जन्म हो जाता है, अर्थात् समय की गणना Big Bang के प्रारमभ होने के साथ ही शुरू हो जाती है। एक अमेरिकन वैज्ञानिक Edwin Hubble ने 9 विभिन्न आकाश गंगाओं (Galaxies) की दूरी जानने का प्रयत्न किया। उसने बताया कि हमारी आकाश गंगा तो अत्यन्त छोटी है, ऐसी तो करोड़ों आकाश गंगाएँ हैं। साथ ही उसने यह भी बताया कि जो (Galaxy) हमसे जितना अधिक दूर है, उतनी ही अधिक तेजी से वह हम से दूर भागती जा रही है। उसने उनकी हमसे दूर होने की चाल की गति भी ज्ञात कर ली। फिर इस सिद्धान्त पर भी Big Bang के समय तो सब एक ही स्थान पर थे। उन्हें इतना दूर जाने में कितना समय लगा, उसका एक नियम भी खोज लिया।

नियम है- V=HR. यहाँ V आकाश गंगा की हमसे दूर भागने की गति है, R आकाश गंगा की हमसे दूरी है और H Constant है। Edwin Hubble ने यह भी ज्ञात किया कि कोई भी आकाश गंगा जो हमसे d दश लाख प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, उसकी दूर हटने की गति 19d मील प्रति सैकण्ड है। अतः अब समय R=106 d प्रकाश वर्ष, T =106×365×24×3600×186000d वर्ष

19d×3600×24×365

=186×109=9.7×109वर्ष

19

Saint Augustine ने अपनी पुस्तक The City of God में बताया कि उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति ईसा से 500 वर्ष पूर्व हुई है।

बिशप उशर का मानना है कि सृष्टि की उत्पत्ति ईसा से 4004 वर्ष पूर्व हुई है और केब्रीज विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. लाइटफुट ने सृष्टि उत्पत्ति का समय 23 अक्टूबर 4004 ईसा पूर्व प्रातः 9 बजे बताया है जो हास्यास्पद है। अब हम वैदिक वाङ्मय के आधार पर सृष्टि की आयु पर विचार करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के दूसरे अध्याय अथ वेदोत्पत्ति विषय में इस पर विचार किया है कि वेद की उत्पत्ति कब हुई? इससे यह मानना चाहिए कि सृष्टि में मानव की उत्पत्ति कब हुई, क्योंकि मानव के उत्पन्न होने पर ही तो वेद का ज्ञान उसे प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व की स्थिति अर्थात् सृष्टि उत्पन्न होने के प्रारमभ से मानव के उत्पन्न होने के समय पर उन्होंने अपने विचार देना उचित नहीं समझा। वास्तव में मनुष्य ने तो अपने उत्पन्न होने के बाद ही समय की गणना प्रारमभ की है। सृष्टि के उस समय की गणना वह कैसे करता, जब बन ही रही थी? वह कैसे जानता कि सृष्टि उत्पन्न होने की क्रिया के प्रारमभ होने से उसके पूर्ण होने तक सृष्टि निर्माण में कितना समय व्यतीत हुआ है? इस पर फिर चर्चा करेंगे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी गणना में मनुस्मृति के श्लोकों को ही मुखय रूप से काम में लिया है-

अत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तत्कृतं युगम्।

तस्य यावच्छतो सन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथा विधः।।

-मनु. 1.69

उन दैवीयुग में (जिनमें दिन-रात का वर्णन है) चार हजार दिव्य वर्ष का एक सतयुग कहा है। इस सतयुग की जितने दिव्य वर्ष की अर्थात् 400 वर्ष की सन्ध्या होती है और उतने ही वर्षों की अर्थात् 400 वर्षों का सन्ध्यांश का समय होता है।

इतंरेषु ससन्ध्येषु ससध्यांशेषु च त्रिषु।

एकापायेन वर्त्तन्ते सहस्त्राणि शतानि च।।

-मनु. 1.70

और अन्य तीन-त्रेता, द्वापर और कलियुग में सन्ध्या नामक कालों में तथा सन्ध्यांश नामक कालों में क्रमशः एक-एक हजार और एक-एक सौ कम कर ले तो उनका अपना-अपना काल परिणाम आ जाता है।

इस गणना के आधार पर सतयुग 4800 देव वर्ष, त्रेतायुग 3600 देव वर्ष, द्वापर 2400 वर्ष तथा कलियुग 1200 देव वर्ष के होते हैं। इस चारों का योग अर्थात् एक चतुर्युगी 12000 देव वर्ष का होता है।

दैविकानाम युगानां तु सहस्त्रं परि संखयया।

ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावतीं रात्रिमेव च।। – मनु. 1.72

देव युगों को 1000 से गुण करने पर जो काल परिणाम निकलता है, वह ब्रह्म का एक दिन और उतने ही वर्षों की एक रात समझना चाहिए। यह ध्यान रहे कि एक देव वर्ष 360 मानव वर्षों के बराबर होता है।

तद्वै युग सहस्रान्तं ब्राह्मं पुण्यमहर्विदुः।

रात्रिं च तावतीमेव तेऽहोरात्रविदोजनाः।।मनु. 1.73

जो लोग उस एक हजार दिव्य युगों के परमात्मा के पवित्र दिन को और उतने की युगों की परमात्मा की रात्रि समझते हैं, वे ही वास्तव में दिन-रात = सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय काल के विज्ञान के वेत्ता लोग हैं।

इस आधार की सृष्टि की आयु = 12000×1000 देव वर्ष = 12000000 देव वर्ष

12000000×360 = 4320000000 देव वर्ष

12000000 देव वर्ष = 4320000000 मानव वर्ष

यत् प्राग्द्वादशसाहस्त्रमुदितं दैविक युगम्।

तदेक सप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते।। -मनु. 1.79

पहले श्लोकों में जो बारह हजार दिव्य वर्षों का एक दैव युग कहा है, इससे 71 (इकहत्तर) गुना समय अर्थात् 12000×71 = 852000 दिव्य वर्षों का अथवा 852000×360= 306720000 वर्षों का एक मन्वन्तर का काल परिणाम गिना गया है।

फिर अगले श्लोक में कहा गया है कि वह महान् परमात्मा असंखय मन्वन्तरों को, सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय को बार-बार करता रहता है, अर्थात् सृष्टी प्रवाह से अनादि है।

फिर स्वामी दयानन्द सरस्वती संकल्प मन्त्र के आधार पर वेद का उत्पत्ति काल बताते हैं।

ओ3म् तत्सत् श्री ब्रह्मणः द्वितीये प्रहरोत्तरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरेऽअष्टाविंशतितमे कलियुगे कलियुग प्रथम चरणेऽमुकसंवत्सरायमनर्तु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहूर्तेऽवेदं कृतं क्रियते च।

यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें वैवस्वत मनु का वर्तमान है। इससे पूर्व छः मन्वन्तर हो चुके हैं और सात मन्वन्तर आगे होवेंगे। ये सब मिलकर चौदह मन्वन्तर होते हैं।

इस आधार पर वेदोत्पत्ति की काल गणना इस प्रकार होगी-

छः मन्वन्तरों का समय = 4320000×71×6= 1840320000 वर्ष

वर्तमान मन्वन्तर की 27 चतुर्युगी का काल= 4320000×27= 116640000 वर्ष

अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के गत तीन युगों का काल= 3888000 वर्ष

कलियुग के प्रारभ से विक्रम सं. 2072 तक का काल= 3043 + 2072 वर्ष

= 5115 वर्ष

कुल योग = 1840320000 +116640000 + 3888000 +5115 वर्ष

= 1960853115 वर्ष। चूंकि विक्रम संवत् के प्रारमभ तक कलियुग के 3043 वर्ष व्यतीत हो चुके थे और 3044 वाँ वर्ष चल रहा था, इसलिए वर्तमान में 1960853116वाँ वर्ष चल रहा है।

अब कुछ विद्वान् कहते हैं कि सृष्टि की आयु जब मनु 1000 चतुर्युगी मानते हैं और दूसरी तरफ इसी आयु को 14 मन्वन्तर अर्थात् 994 चतुर्युगी कहा जाता है, तो दोनों के अन्तर 6 चतुर्युगों का समन्वय कैसे होगा? इसका उत्तर यह है कि 994 चतुर्युग तो मानव भोग काल है और 6 चतुर्युगों का समय सृष्टि उत्पत्ति के प्रारमभ से लेकर मानव अथवा वेदों की उत्पत्ति तक का है। सृष्टि उत्पत्ति में जो समय लगा है, वह सृष्टि की आयु में माना जावेगा। इसी प्रकार भोग काल 994 चतुर्युगों के अन्त में प्रलय काल प्रारमभ होगा और वह प्रलय की आयु में जोड़ा जायेगा।

ऋग्वेद में स्पष्ट कहा गया है कि काल लगे बिना कोई कार्य नहीं होता-

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः।

कविबुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समिति र्बभूवः।।

– ऋ. 1.95.8

अर्थ- मनुष्य को चाहिए कि (यत्) जो (संपृञ्चानः) अच्छा परिचय करता कराता हुआ (कविः) जिसका क्रम से दर्शन होता है, वह समय (सादने) सदन में (गोभिः) सूर्य की किरणों वा (अद्भिः) प्राण आदि पवनों से (उत्तरम्) उत्पन्न होने वाले (त्वेषम्) मनोहर (बुध्नम्) प्राण और बल सबन्धी विज्ञान और (रूपम्) स्वरूप को (कृणुते) करता है तथा जो (धीः) उत्पन्न बुद्धि वा क्रिया (परि) (मर्मृज्यते) सब प्रकार से शुद्ध होती है (सा) वह (देवताता) ईश्वर और विद्वानों के साथ (समितिः) विशेष ज्ञान की मर्यादा (बभूव) होती है, इस समस्त उक्त व्यवहार को जानकर बुद्धि को उत्पन्न करें।

भावार्थ- मनुष्यों को जानना चाहिये कि काल के बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न होकर और नष्ट हो जाये- यह होता ही नहीं है और न ब्रह्मचर्य आदि उत्तम समय के सेवन के बिना शास्त्र बोध कराने वाली बुद्धि होती है, इस कारण काल के परम सूक्ष्म स्वरूप को जानकर थोड़ा-सा भी समय व्यर्थ न खोवें, किन्तु आलस्य छोड़कर समय के अनुसार व्यवहार और परमार्थ के कामों का सदा अनुष्ठान करें।

यह भी ध्यान रखें कि जिस क्रिया में जो समय लगे, वह उसी का होगा। स्वामी जी ने इस प्रकरण में वेद का उत्पत्ति काल बताया है, सृष्टि की आयु नहीं बताई है। यदि सृष्टि की आयु जानना चाहें तो इसमें सृष्टि का उत्पत्ति काल जोड़ दें, तब सृष्टि की आयु होगी-

= 1960853116+25920000= 1986773116 वर्ष

साथ ही सृष्टि की शेष आयु होगी= 4320000000-1986773116= 2333226884 वर्ष सन्धि और सन्ध्यांश काल तो युगों की आयु में पहिले ही जोड़ लिए हैं, फिर मन्वन्तर के प्रारमभ और अन्त में एक सतयुग का जोड़ना व्यर्थ है। स्वामी जी ने ही नहीं, मनु ने भी इसका उल्लेख नहीं किया है। ज्ञान के अभाव में सृष्टि उत्पत्ति काल को न समझ कर 25920000 वर्षों को 15 भागों में व्यर्थ विभाजित कर क्षति पूर्ति करने का प्रयत्न किया गया है। इससे तो यहूदी ही अच्छे हैं, जो सृष्टि की उत्पत्ति 6 दिनों में स्वीकार करते हैं। यदि उनके दिन का मान एक चतुर्युगी मान लें तो उनकी सृष्टि उत्पत्ति की गणना ठीक वेदों के अनुरूप हो जाती है। इति।

– 73, शास्त्रीनगर, दादाबाड़ी, कोटा-324009 (राजस्थान)

स्तुता मया वरदा वेदमाता

MARCH 4, 2016 LEAVE A COMMENT

स्तुता मया वरदा वेदमाता-27

अहं केतुरहं मूर्धा अहमुग्राविवाचनी।।

इस सूक्त का यह दूसरा मन्त्र है। यह एक महिला की घोषणा है, जिसमें आत्मविश्वास और योग्यता का समन्वय है। विवेचन की योग्यता बिना ज्ञान के नहीं आती। आजकल का ज्ञान हमें अर्थोपार्जन की क्षमता देता है, परन्तु अपने आप पर नियन्त्रण करने की क्षमता नहीं उत्पन्न करता। आजकल की शिक्षा उसे स्वार्थी बनाती है, उसका मूल कारण है- मनुष्य का सुविधाजीवी होना, दुःख सहने की इच्छा और सामर्थ्य का अभाव होना। हमारे छोटे-छोटे बच्चों को लगता है, हम साधनों के बिना कैसे जी सकते हैं? समाचार पत्र में पढ़ा- एक सातवीं कक्षा की बच्ची ने आत्महत्या कर ली। कारण ? उसने माता से चल दूरभाष (मोबाइल) माँगा। माँ ने कहा- बेटा, अभी तुम छोटी हो, तुम दसवीं उत्तीर्ण कर लो, तब ले देंगे। बस, लड़की को सहन नहीं हुआ, वह फाँसी लगा के मर गई। विचार करने की बात है, क्या मृत्यु के लिये यह कारण पर्याप्त है? मनुष्य क्या, कोई भी प्राणि मरने की इच्छा नहीं करता, मरने के नाम से भी डरता है, मृत्यु का अवसर आ जाये तो प्राणपण से संघर्ष करता है, संघर्ष में हराकर ही मृत्यु उसे जीतती है। यहाँ बिना लड़े ही हार मान ली है। मृत्यु की कामना वही करता है, जो जीवन में हार जाता है। छोटे-छोटे साधनों के बिना, सुविधाओं के बिना कैसे जीवित रहूँगा- यह भय ही मनुष्य को मारने के लिये आज पर्याप्त हो गया है।

मनुष्य को साधनों की अधिकता ने उतावला, असहिष्णु और भीरु बना दिया है। पुराने समय में छात्र को असुविधा में रहना सिखाया जाता था। ऐसा नहीं था कि छात्रों को सुविधायें दी नहीं जा सकती थीं, जब घर में, नगर में लोगों के पास सुविधाएँ हों, तो उन्हें क्यों नहीं दी जा सकतीं? मनुष्य को सुविधा में जीने की शिक्षा नहीं देनी पड़ती। धन-सपत्ति साथ आते ही उनका सुख उठाना आ जाता है। सुविधा में जीना सिखाने से असुविधा में जीना नहीं आता, परन्तु असुविधा में जीना सिखाने से सुविधा न मिलने पर, सुविधा समाप्त होने पर भी वह सरलता से सहज ही जीवन यापन कर सकता है।

आज कल बड़ी कपनियाँ बहुत सारा वेतन, साधन एवं अनेक सुविधायें दे कर मनुष्य को भीरु बना देती हैं। उनके बिना वह जीवन की कल्पना ही नहीं करता। दुर्भाग्य से कभी साधन न मिले, नौकरी छूट जाये तो ऐसा व्यक्ति अनुचित-अनैतिक माध्यमों से धन कमाने में लग जाता है या आत्महत्या कर लेता है। इसी कारण ऋषि लोग तपस्या और कठिन जीवन की बात करते हैं। सुविधा-भोगी अपने साधनों का बँटवारा नहीं कर पाता, दूसरे को सहयोग करने में उसका विश्वास नहीं होता। सुविधा-भोगी मनुष्य को कभी साधनों से तृप्ति नहीं होती, वह सदा और अधिक के चक्र में उलझ जाता है। उसकी योग्यता उसे अधिक कमाने के लिये प्रेरित करती है। इस दुश्चक्र में वह पराजित हो जाता है, बीमार हो जाता है, अन्ततः मर जाता है।

आचार्य चाणक्य कहते हैं- शास्त्र मनुष्य को अपने पर नियन्त्रण करने की शिक्षा देता है। शास्त्र का अध्ययन करने से मनुष्य के अन्दर धैर्य उत्पन्न होता है। उसके अन्दर सहन शीलता बढ़ती है। चाहे जय मिले या पराजय, वे उसे विचलित नहीं करते। उसके अन्दर उचित-अनुचित, अच्छे-बुरे, न्याय-अन्याय को समझने का सामर्थ्य आता है। ऐसे व्यक्ति को विचारों की स्पष्टता, निर्णय की क्षमता और कार्य को सपन्न करने की योग्यता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति आत्मविश्वास से भरा होता है। उसके अन्दर भय नहीं रहता है। यह मनोवैज्ञानिक

तथ्य है- जिसके अन्दर भय नहीं रहता, उसके अन्दर उदारता, सहिष्णुता, परोपकार आदि गुण सहज ही आ जाते हैं। ऐसा मनुष्य दूसरों के कष्टों को देखकर अपना सुख छोड़ देता है। उसके अन्दर नेतृत्व का गुण पूर्णरूप से विकसित होता है, जो सब उत्तरदायित्व को स्वीकार करने के लिये तैयार रहता है वही घोषणा कर सकता है- मैं सबसे ऊँचा हूँ, मैं सबके लिये उत्तरदायी हूँ।

मनुष्य का स्वभाव होता है कि वह किसी भी गलती, भूल या अपराध की जिमेदारी दूसरे पर डालने का यत्न करता है। ऐसा व्यक्ति कह नहीं सकता कि मैं सर्वोपरि हूँ। मैं सबका नेता हूँ। उत्तरदायित्व के गुण के बिना नेतृत्व का गुण नहीं आ सकता। स्वार्थी और असहिष्णु व्यक्ति कभी नेता नहीं बन सकता। आजकल की शिक्षा से इन गुणों की आशा नहीं की जा सकती। आज मनुष्य योग्यता के बिना ही अधिकार की आशा करता है। आशा तो की जा सकती है, परन्तु उसका निर्वाहन हीं हो सकता। ज्ञान के बिना योग्यता नहीं आती, परिश्रम के बिना ज्ञान नहीं आता। यही कारण है कि आजकल के युवाओं में सामान्य रूप से इन गुणों की कमी देखी जाती है। योग्यता के बिना विचार में, वचन में एवं प्रामाणिकता का आभाव रहता है। जब आप किसी को कुछ कहते, बोलते, सुनते हैं, तो जब उससे उलट कर पूछा जाता है- क्या वास्तव में ऐसा है, आपके ऐसा कहने का आधार क्या है? सौ में नबे से अधिक व्यक्ति इधर-उधर झाँकने लगते हैं।

पुरानी शिक्षा जिसे अनुपयोगी समझते हैं, उसकी विशेषता है- वह शिक्षा मनुष्य को सहनशील, प्रामाणिक और उत्तरदायी बनाती है। आज किसी को कोई काम देकर आप निश्चिंत नहीं हो सकते, न तो कार्य होने का विश्वास है और न कार्य न हो पाने की सूचना। और यह कहा जाता है- तो क्या हो गया? हुआ तो कुछ नहीं, परन्तु उत्तरदायित्व का गुण समाप्त हो जाता है। इस मन्त्र के शबद घोषणा करके कह रहे हैं- घर की गृहिणी योग्य है, समर्थ है, उत्तरदायी है और आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। ऐसी नारी की कल्पना करना आज कठिन है, परन्तु वेदों का आदर्श तो यही कहता है।

अथर्व – 6.26. -सूक्त-विष्णु देवता के मन्त्रों का वैज्ञानिक विवेचन

FEBRUARY 29, 2016 LEAVE A COMMENT

अथर्व – **6.26.** -सूक्त-विष्णु देवता के मन्त्रों का वैज्ञानिक विवेचन

– आर.बी.एल. गुप्ता एवं डॉ. पुष्पागुप्ता

श्री आर.बी.एल. गुप्ता बैंक में अधिकारी रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी डॉ. पुष्पागुप्ता अजमेर के राजकीय महाविद्यालय संस्कृत विभाग की अध्यक्ष रहीं हैं। उन्हीं की प्रेरणा और सहयोग से आपकी वैदिक साहित्य में रुचि हुई, आपने पूरा समय और परिश्रम वैदिक साहित्य के अध्ययन में लगा दिया, परिणाम स्वरूप आज वैदिक साहित्य के सबन्ध में आप अधिकार पूर्वक अपने विचार रखते हैं।

आपकी इच्छा रहती है कि वैज्ञानिकों और विज्ञान में रुचि रखने वालों से इस विषय में वार्तालाप हो। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर इसवर्ष वेद गोष्ठी में एक सत्र वेद और विज्ञान

के सबन्ध में रखा है। इस सत्र में विज्ञान में रुचि रखने वालों के साथ गुप्तजी अपने विचारों को बाँटेंगे। आशा है परोपकारी के पाठकों के लिए यह प्रयास प्रेरणादायी होगा।

-सपादक

इस सूक्त के प्रथम मन्त्र में विष्णु के वीर्य कर्मों को बताया गया है। विष्णु गुरुत्वाकर्षण शक्ति के अधिष्ठाता देव हैं। वेद के जिन मन्त्रों में अथवा ब्राह्मण ग्रन्थों में जहाँ पर भी विट्,विशः, विष्णु शबद आते हैं- वहाँ पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति से सबन्धित व्याखयान हैं- ऐसा निश्चित रूप से समझ लेना चाहिये। विष्णु का प्रथम वीर्य कर्म है-पार्थिव रजों को नापना अर्थात पिण्ड की मात्रा के अनुसार गुरुत्वाकर्षण शक्ति का होना। दूसरा वीर्य कर्म है- उत्तर सधस्थ (उत्तम स्थान पर स्थित पिण्ड) को त्रेधा विचक्रमण (तीन प्रकार से धारित शक्ति से पिण्ड को चक्रित करना) तथा उरुगमन (एक बिन्दु से विस्तृत होते हुए जाना) प्रक्रियाओं से स्कंभित करना।

पार्थिव रज का तात्पर्य है– गुरुत्वाकर्षण (g) ऋ. 1.35.4 में कृष्णा रजांसि पद, ऋ. 1.35.9 में कृष्णेन रजसा पद, ऋ. 1.12.5 में अन्तरिक्षे रजसो-विमानः इन मन्त्रों में-कृष्णरज-पार्थिवरज-शबदों में वैज्ञानिक अर्थ है- g (गुरुत्वाकर्षण)। कोई भी भौतिक कण चाहे कितना भी हल्का क्यों न हो, जब तक एक निश्चित आकृति (volume) एवं निश्चित मात्रा (m) का बनकर एक निश्चित कण का रूप ले लेता है, तब उसमें एक निश्चित घनत्व एवं निश्चित गुरुत्वाकर्षण (g) आ जाता हैं। एक निश्चित आकृति के कण को वेदमन्त्रों में मृग कहा गया हैं। ऋ. 1.154.2 (अथर्व 7.26.2) में-मृगःनभीमःकुचरःगिरिष्ठा पद में गिरि में स्थित कुत्सित गति वाला भयानक मृग- यह अर्थ एक निश्चित मात्रा में आये कण जिसमें गुरुत्वशक्ति आ गई है- के लिये कहा गया हैं।

त्रेधा विचक्रमण क्या है ? हमारी पृथ्वी एवं सूर्य का उदाहरण-

पृथ्वी अपनी धुरी (axis) पर एक अहोरात्रि में पूरी घूम जाती है, तथा साथ ही लगभग 25000 कि.मी. दूरी सूर्य की परिक्रमा करती हुई आगे बढ़ती है। यहाँ पृथ्वी में दो प्रकार की गति (चक्रमण) है- (1.) अपनी धुरी पर घूमना (2.) सूर्य के परिक्रमा पथ पर घूमते हुये ही आगे बढ़ना।

सूर्य पृथ्वी से कई लाख गुणा आकार में अधिक है, तथा 15 करोड़ किलो मीटर दूरी पर है, फिर भी सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति घूमती हुई पृथ्वी को सतत अपनी ओर आकर्षित करती है। सूर्य की इस शक्ति को निःशेष करने के लिये पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा परिक्रमा पथ पर आगे बढ़ती है। इस प्रकार पृथ्वी का जो विचक्रमण हो रहा है, उसका कारण यह तीन प्रकार से पृथ्वी पर धारित शक्तियों के कारण हैं। यदि ऐसा न हो तो पृथ्वी सूर्य में गिरकर सूर्य में समा जायेगी। ऐसी स्थिति प्रलय अवस्था में अवश्य आयेगी।

उरुगमन– जंघाओं को फैलाकर जब हम खड़े होते हैं- जब जंघाओं की स्थिति इस प्रकार की होती है, इसे विज्ञान की भाषा में उरुगमन कहते हैं (divertion of rays)। गुरुत्व शक्ति की किरणें इसी नियम का पालन करती हैं।

विष्णु का 3 पदों में विचक्रमण क्या है?

ऋ. 1.164.2 में त्रिनाभि चक्रं अजरं अनर्वं पद आया है। वेद मन्त्रों में आया त्रिनाभि चक्र- अण्डाकार आकृति को बताता है- जिसमें तीन केन्द्रबिन्दु (नाभियाँ) होती हैं। पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का मार्ग भी अण्डाकार है। इस अण्डाकार मार्ग का मूल सिद्धान्त है- केन्द्र में बड़ा पिण्ड जैसे सूर्य उसके दोनों तरफ दो और केन्द्र बिन्दु A व B होते हैं। पृथ्वी (E) इस प्रकार घूमती है कि पृथ्वी का इन दोनों बिन्दुओं A व B से दूरी का योग हमेशा समान अर्थात् दूरी AE + BE का योग हमेशा समान रहेगा तथा इस प्रकार पृथ्वी का परिभ्रमण मार्ग अण्डाकार बन जाता है।

यही उदाहरण सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करनेवाले अन्य ग्रह-बुध, शुक्र, मंगल, ब्रहस्पति, शनि आदि में भी दिया जा सकता है। यही नहीं, अति सूक्ष्म परमाणु में भी प्रोटोन एवं इलेक्ट्रोन भी इसी त्रिनाभि चक्र-त्रेधा विक्रमण आदि नियमों का पालन करते हैं।

इन्द्रस्य युज्यसखाः – इस सूक्त के मन्त्र संखया 6 में यह पद आया है। इन्द्र दिव्य रजः (emt) का अधिष्ठाता देव है, तथा विष्णु पार्थिव रजः (g) का। परमाणु के अन्दर प्रोटोन का उदाहरण- प्रोटोन के दो भाग हैं- (1.) पार्थिव भाग (matter) तथा (2.) दिव्य भाग (e.m.t)। इसी प्रकार इलेक्ट्रॉन भी है, पर उसमें विद्युत शक्ति – है जबकि प्रोटोन में + है। प्रोटोन तथा इलेक्ट्रोन के मध्य भी दो प्रकार की आकर्षण शक्ति (1) विद्युत शक्ति का आकर्षण (इन्द्र की शक्ति) एवं (2) गुरुत्वाकर्षण शक्ति (विष्णु की शक्ति)। अतःमन्त्र 6 में कहा है कि विष्णु के कर्मों को देखो जहाँ वह व्रतों को स्पर्श करता है तथा इन्द्र का योजित सखा है। प्रोटोन तथा इलेक्ट्रोन दोनों परामाणु के अन्दर अपने-अपने व्रत्तों में घूमते हैं- एक-दूसरे के व्रत्त (orbit) को स्पर्श करते हुए।

मन्त्र 7 में सूर्यःविष्णु के परम् पद को सदा देखते हैं। यहाँ परम पद से तात्पर्य है गुरुत्व शक्ति का केन्द्र बिन्दु (center of gravity)

मन्त्र 4 में समूढं अस्य पांसुरे।पांसुरे शबद (collective) अर्थ में है। छोटा पिण्ड हो या बड़ा, मात्रा अधिक या कम होने से पूरे पिण्डकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम या अधिक हो जायेगी, परन्तु समूह रूप में पूरे पिण्ड की गुरुत्वाकर्षण शक्ति केन्द्र बिन्दु (पांसुरे पद) में गुप्त रूप से निहित हो जाती है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता: आचार्य धर्मवीर जी

FEBRUARY 23, 2016 LEAVE A COMMENT

स्तुता मया वरदा वेदमाता-25

अहं तद्विद्वला पतिमयसाक्षि विषासहिः।

एक महिला को अपने अनुकूल जीवन साथी चुनने का अधिकार है। निर्णय महिला का है। ऐसा करने के लिये उचित आधार है- पति को अनुकूल बनाने की क्षमता, पति को सहन करने का सामर्थ्य। परिवार की धुरी महिला होती है। जैसे धुरी में भार सहने और भार को खींचने की क्षमता होती है, उसी प्रकार महिला में परिवार के सब लोगों को साथ रखने का सामर्थ्य होना चाहिए। इसके लिये प्रथम योग्यता सहनशील होना है। घर में जितने भी सदस्य हैं,

सबकी अपनी-अपनी इच्छायें होती हैं। सभी चाहते हैं, उनकी बात मानी जाये, उनके अनुकूल कार्य हो, परन्तु ऐसा सदा सभव नहीं है।

परिवार की विशेषता होती है, इसमें वृद्ध भी होते हैं, युवा भी, बालक-बालिकायें, स्त्री-पुरुष। इन सब विविधताओं में सामञ्जस्य बैठाने के लिये बुद्धिमत्ता, सद्भाव, सहनशीलता की आवश्यकता है। मनुष्य की जब इच्छा पूरी नहीं होती, तो उसे क्रोध आता है, उस समय यदि सामने वाला भी क्रोध कर बैठेगा, तो असहमति लड़ाई में बदल जायेगी। यदि कोई अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं कर सकता, तो दूसरे को अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण करना चाहिए। एक बार सोनीपत में आर्य समाज बड़ा बाजार का कार्यक्रम था। प्रसंग से एक परिवार में जाने का अवसर मिला, स्वाभाविक रूप से परिवार के समायोजन की चर्चा चली, तो गृहिणी ने समस्या के समाधान का सरल उपयोगी उपाय सुझाया। वह कहने लगी- यदि मेरे पति को किसी कारण से क्रोध आता है और वे ऊँची आवाज में बोलने लगते हैं, तो मैं दूरदर्शन की आवाज को ऊँचा कर देती हूँ। मेरे पति कुछ भी बोलते रहते हैं, मुझे सुनाई नहीं देता। कुछ देर बाद वे शान्त हो जाते हैं और सब सामान्य हो जाता है। जब कभी मुझे क्रोध आता है, तो मेरे पति छड़ी लेकर बाहर घूमने निकल जाते हैं, जब वे लौटते हैं तो सब शान्त हो चुका होता है। इसलिये वेद कहता है- पतिमयसाक्षि। मैं पति को सहन कर सकती हूँ।

एक और बात मन्त्र में कही, यह सहनशक्ति सामान्य नहीं, विशेष सहनशक्ति है। हमारे समाज में महिला को सहनशील बनने की बात की जाती है, परन्तु अत्याचार और प्रताड़ना को सहन करने की शक्ति सहनशीलता नहीं है। अन्याय का प्रतिकार करने में जो बाधा और कष्ट आते हैं, उन्हें सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। परिवार में अलग विचारों के बीच तालमेल बैठाना, यह कार्य सहनशीलता के बिना सभव नहीं। हमारी इच्छा रहती है कि हम जो सोचते हैं- उसी को सबको स्वीकार करना चाहिए। यह धारणा सभी की हो तो पूर्ण होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। ऐसी स्थिति में परिवार में विवाद की स्थिति बनी रहती है।

हमें मनुष्य स्वभाव का भी स्मरण रखना चाहिए कि परिवार में सब प्रेम से रहें, लड़ाई-झगड़ा न करें, यह उपदेश तो ठीक है, परन्तु ऐसा होना कठिन ही नहीं, असभव भी है। हम चाहते हैं कि दूसरा मेरे अनुसार चले, उसे अपने को बदलना चाहिए। यह उपाय कभी सफल नहीं होता। इसका उपाय है, जो सदस्य जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लिया जाय। उसको स्वीकार कर लिया जाय तो उपाय हमको करना पड़ता है। हम मार्ग से जा रहे हैं, मार्ग टूटा हुआ आता है, तब हम मार्ग सुधारने में नहीं लगते और न ही यात्रा स्थगित करते हैं। हम उस मार्ग से बचकर निकलने का उपाय करते हैं। उसी प्रकार परिवार में विवाद होने की दशा में बचने का उपाय सहनशीलता है। आवेश के समय को बीत जाने देते हैं, तो परिवार का वातावरण सहज होने में समय नहीं लगता। विवाद हो जाये, यह स्वाभाविक हैं, परन्तु इस विवाद को समाप्त करने के लिये संवाद का मार्ग सदा खुला रखना होता है। परिवार के सन्दर्भ में रुष्ट सदस्य को संवाद के द्वारा मनाया जा सकता है, सामान्य किया जा सकता है। मत-भिन्नता की दशा में समझाने के प्रयास निष्फल होने पर सहना ही एक उपाय शेष रहता है। इसी कारण इस मन्त्र में एक शद आया है- विषासहिः। इसका अर्थ है विशेष रूप से सहन करने की शक्ति। इसी उपाय से जो वस्तु प्राप्त है, उसे बचाया जा सकता है।

यहाँ सहन करने की बात स्त्री के सन्दर्भ में क्यों कही गई है, क्योंकि परिस्थितियों के चुनाव का अधिकार स्त्री को दिया गया है। उसकी घोषणा है- अपने सौभाग्य की निर्मात्री मैं स्वयं हूँ। मैंने श्रेष्ठ सिद्ध करने की घोषणा की, मैं सूर्य के समान तेजस्विनी हूँ। जब पति को मैंने प्राप्त किया है, मेरी इच्छा से मेरे चुनाव से मैंने पाया है, तो पति को और परिवार को अपनी सहनशीलता से जोड़कर रखने का उत्तरदायित्व भी मेरा ही है। यही घोषणा इस मन्त्र में की गई है।

VED

पाप दूर करने का वैदिक साधन अघमर्षण के तीन मन्त्र व उनके अर्थ

FEBRUARY 14, 2016 2 COMMENTS

ओ३म्

'पाप दूर करने का वैदिक साधन अघमर्षण के तीन मन्त्र व उनके अर्थ'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनुष्य जाग्रत अवस्था में कोई न कोई कर्म अवश्य करता है। यह कर्म दो प्रकार के होते हैं जिन्हें शुभ व अशुभ अथवा पुण्य व पाप कह सकते हैं। मनुष्य का जन्म ही पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों के फलों के भोग के लिए हुआ है। शुभ व सत् कर्मों का फल सुख व विपरीत कर्मों का फल दुःख होता है। संसार में मनुष्य अन्य प्राणियों से इस अर्थ में भिन्न है कि उसके पास निश्चयात्मक बुद्धि होती है जिससे निर्णय करके वह किसी कर्म को करता है। मनुष्येतर अन्य प्राणियों में बुद्धि होती तो है परन्तु वह अपने स्वभाविक ज्ञान के अनुसार ही कार्य करती है। वह सत्य व असत्य का निर्णय नहीं कर सकती। यदि वह विचार व चिन्तन कर सकते तो सम्भव था कि वह मनुष्य की तुलना में अधिक अच्छे व श्रेष्ठ कर्म करते। वर्तमान में भी गाय, बैल, घोड़ा, भैंस, भेड़, बकरी आदि पशु मनुष्यों से कहीं अधिक मनुष्यों का उपकार करते हुए दिखते हैं। मनुष्य तो इन पशुओं का उपयोग व दुरुपयोग ही करता है। मनुष्य योनी उभय-योनी है। इसमें मनुष्य पूर्व व वर्तमान जन्मों के कर्म भोगने के साथ नये शुभ-अशुभ कर्म भी करता है। अशुभ कर्मों का परिणाम दुःख होता है जिससे मनुष्य बच सकता है यदि दुःखों का कारण अशुभ कर्मो वा पाप को हटा दे अर्थात् अशुभ कर्म न करे। अतः मनुष्य को शुभ व अशुभ कर्मों का ज्ञान होना चाहिये और भविष्य में दुःखों से बचने के लिए उसे केवल शुभ कर्म ही करने चाहिये। बुरे कर्मों को विवेक पूर्वक रोक देना चाहिये। इन पाप कर्मों से बचने के लिए महर्षि दयानन्द ने अपनी 'वैदिक सन्ध्या पद्धति' में 'अघमर्षण मन्त्र' को लिखकर कर व इनकी व्याख्या करके शुभ व अशुभ कर्मो के परिणाम व फलों को जानकर पाप कर्मों के त्याग करने का विधान किया है जिससे हमारा भविष्य सुरक्षित व सुखी हो।

जिन अघमर्षण मन्त्रों की चर्चा हमने की है वह वैदिक सन्ध्या पद्धति का एक भाग है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सम्यक् ध्यान के लिए की जाने वाली वैदिक सन्ध्या में गायत्री मन्त्र से शिखा बन्धन, आचमन मन्त्र, इन्द्रियस्पर्शमन्त्र, मार्जनमन्त्र, प्राणायाममन्त्र, अघमर्षणमन्त्र, मनसापरिक्रमामन्त्र, उपस्थानमन्त्र, समर्पणमन्त्र और समाप्ती पर नमस्कारमन्त्र के मन्त्रों का पाठ करने का विधान किया है। महर्षि दयानन्द के यह विधान बहुत ही युक्तिसंगत हैं और साधक व उपासक को सन्ध्या के फल प्राप्त कराने में पूर्णतः समर्थ हैं। सन्ध्या करने का प्रयोजन है कि ईश्वर से हमें मनोवांछित आनन्द अर्थात ऐहिक सुख-समृद्धि, हम पर सर्वदा सुखों की वर्षा और पूर्णानन्द की प्राप्ति वा मोक्ष के आनन्द की प्राप्ति हो। इन लाभों के अतिरिक्त सन्ध्या में शरीर की रक्षा व इसको स्वस्थ रखने आदि की अनेक प्रार्थनायें निहित हैं। अघमर्षण के सन्ध्या में सम्मिलित तीन मन्त्र हैं-'ओ३म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।।**1**।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।**2**।। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।**3**।।' अपने जीवन से पापों को दूर करने के लिए इन मन्त्रों का पाठ करने के बाद इनके यथार्थ अर्थों पर विचार करना व उससे मिलने वाली शिक्षा का पालन करना आवश्यक है। पहले मन्त्र का अर्थ है कि सब जगत का धारण और पोषण करनेवाला और सबको वश में करनेवाला परमेश्वर, जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत् के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्वकल्प की सृष्टि में जगत् की रचना थी और जैसे जीवों के पुण्य-पाप थे, उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाये हैं। जैसे पूर्व कल्प में सूर्य-चन्द्रलोक रचे थे, वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं जैसा पूर्व सृष्टि में सूर्यादि लोकों का प्रकाश रचा था, वैसा ही इस कल्प में रचा है तथा जैसी भूमि प्रत्यक्ष दीखती है, जैसा पृथिवी और सूर्यलोक के बीच में पोलापन है, जितने आकाश के बीच में लोक हैं, उनको ईश्वर ने रचा है। जैसे अनादिकाल से लोक-लोकान्तर को जगदीश्वर बनाया करता है, वैसे ही अब भी बनाये हैं और आगे भी बनावेगा, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान विपरीत कभी नहीं होता, किन्तु पूर्ण और अनन्त होने से सर्वदा एकरस ही रहता है, उसमें वृद्धि, क्षय और उलटापन कभी नहीं होता। इसी कारण से 'यथापूर्वम–कल्पयत्' इस पद का ग्रहण किया है। इस मन्त्र व मन्त्रार्थ में सृष्टि रचना, उसका प्रयोजन, जीवों के पूर्व कर्मों के अनुसार मनुष्यादि देह बनाने पर प्रकाश डाला है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि इस सृष्टि का स्वामी ईश्वर है और जीवों के कर्मों के फल, दण्ड-दुःख व सुख, देने के लिए उसने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाये है।

अघमर्षण के दूसरे मन्त्र का अर्थ है कि उसी ईश्वर ने सहजस्वभाव से जगत् के रात्रि, दिवस, घटिका, पल और क्षण आदि को जैसे पूर्व थे वैसे ही रचे हैं। इसमें कोई ऐसी शंका करे कि ईश्वर ने किस वस्तु से जगत् को रचा है? उसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने अपने अनन्त सामर्थ्य से सब जगत् को रचा है। ईश्वर के प्रकाश से जगत् का कारण प्रकाशित होता और सब जगत के बनाने की सामग्री ईश्वर के अधीन है। उसी अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य से सब विद्या के खजाने वेदशास्त्र को प्रकाशित किया है जैसाकि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित था और आगे के कल्पों में भी इसी प्रकार से वेदों का प्रकाश करेगा। जो त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रज और तमोगुण से युक्त है, जो स्थूल और सूक्ष्म जगत् का कारण है, सो भी कार्यरूप होके पूर्वकल्प के समान उत्पन्न हुआ है। उसी ईश्वर के सामर्थ्य से जो प्रलय के पीछे एक हजार चुतुर्युगी के

प्रमाण से रात्रि कहाती है, सो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है। इसमें ऋग्वेद का प्रमाण है कि–''जब जब विद्यमान सृष्टि होती है, उसके पूर्व सब आकाश अन्धकाररूप रहता है, उसी का नाम महारात्रि है।" तदनन्तर उसी सामर्थ्य से पृथिवी और मेघ मण्डल=अन्तरिक्ष में जो महासमुद्र है, सो पूर्व सृष्टि के सदृश ही उत्पन्न हुआ है। तीसरे मन्त्र में ईश्वर ने मनुष्यों को शिक्षा देते हुए कहा है कि उसी समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर, अर्थात् क्षण, मुहुर्त, प्रहर आदि काल भी पूर्व सृष्टि के समान उत्पन्न हुआ है। वेद से लेके पृथिवीपर्यन्त जो यह जगत् है, सो सब ईश्वर के नित्य सामथ्र्य से ही प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके, सबमें व्यापक होके अन्तर्यामिरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़के सत्यन्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है।

इन अर्थों को प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि कि ऐसा निश्चित जान के ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, वचन और कर्म से पापकर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्तःकरण के कर्मों को देख रहा है, इससे पापकर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ देवें। महर्षि दयानन्द के इस सत्परामर्थ और प्रातः व सायं दोनों समय सन्ध्या करते समय अघमर्षण मन्त्रों के अर्थों पर विचार करते हुए मनुष्य जान लेता है कि वह जैसे पाप व पुण्य कर्म करेगा, ईश्वर की व्यवस्था से उसको उन कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल वा दण्ड आदि यथायोग्य अवश्य मिलेगा। इससे वह पाप व अशुभ कर्मों को छोड़ देता है। अतः सन्ध्या के यह तीन मन्त्र एवं इनके अर्थ पर विचार करने से मनुष्य पापों को करना छोड़ देता है। इस पर भी यदि कोई पाप करता रहता है तो उसे बुद्धिहीन व मलिन मन व आत्मा वाला मनुष्य ही कह सकते हैं जो अन्धकार में पड़कर दुःख का भागी होता है। यदि मनुष्य व संसार को पापों से बचाना है तो उसे वेदों की शरण में लाकर वेदों का अध्ययन कराकर अटल कर्म-फल सिद्धान्त को जनाकर अशुभ व पाप कर्मों को करने से छुड़ाना ही होगा। पाप कर्मों को छोड़ने व सन्ध्यादि करने से मनुष्य व जीवात्मा को अनेकानेक लाभ होंगे जिसमें इहलौकिक उन्नति सहित परजन्मों में उन्नति होने के साथ मोक्ष की सिद्धि भी हो सकती है। हम आशा करते हैं पाठक पाप त्याग के लिए इन मन्त्रों का प्रातःसायं पाठ करने के साथ इनके अर्थों पर भी गम्भीरता से विचार करेंगे और वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने-अपने जीवन को वेदानुकूल बनायेंगे।

मनुष्य बुरे कर्मों के कठोर दण्ड के भय से ही बुराईयों व पापों से दूर रहता है। देश व समाज में जो लोग अपराध नहीं करते उनका एक कारण यह है कि वह ईश्वर व सरकारी दण्ड व्यवस्था दोनों से डरते हैं। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्या में विधान किये अघमर्षण मन्त्रों में भी ईश्वर की सर्वोपरि सत्ता व उसके दण्ड विधान 'कर्म–फल सिद्धान्त' का उल्लेख किया है जो अनादि काल से चला आ रहा और अनन्त काल यथापूर्व चलता रहेगा। ज्ञानी व सज्जन पुरूष ईश्वर के दण्ड व मोक्ष विधान को जानकर अपने समस्त जीवन में अपराध, पाप व अशुभ कर्मों से बचे रहते हैं व सुख-शान्ति-समृ्िद्ध का अनुभव व भोग करते हैं। अतः महर्षि दयानन्द द्वारा अघमर्षण मन्त्रों का विधान सर्वथा उपयुक्त व समाज को अपराध मुक्त बनाने की दिशा में एक प्रशंसनीय कार्य है। अन्य मतों में तो संख्या बढ़ाने के लिए पाप क्षमा का

विधान किया गया है जो कि सत्य नहीं हो सकता क्योंकि पापों को क्षमा करना एक प्रकार पाप को बढ़ावा देना है जिसे ईश्वर कदापि नहीं करेगा।

–मनमोहन कुमार आर्य

पताः **196** चुक्खूवाला**-2**

देहरादून**-248001**

फोनः**09412985121**

स्तुता मया वरदा वेदमाता- डॉ धर्मवीर

FEBRUARY 4, 2016 LEAVE A COMMENT

वेद जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने का सन्देश देता है। इस मन्त्र में महिला के द्वारा कहा जा रहा है। प्रतिदिन सूर्योदय के साथ ही प्राणियों का भाग्योदय होता है। प्रत्येक सूर्योदय नये जीवन का सन्देश लेकर आता है। मनुष्य को अपने जीवन से निराशा को समाप्त करना चाहिए। निराशा असफलता को स्वीकार करने का दूसरा नाम है। मनुष्य के सभी मनोरथ पूर्ण नहीं हो पाते। मनुष्य को असफलता मिलती है तो निराश होने की सभावना होती है, किन्तु यदि दूसरा-तीसरा अवसर उसके सामने होता है तो वह निराशा की ओर न जाकर फिर से प्रयत्न करने के लिये तैयार हो जाता है। वेद कहता है- मनुष्य को कितनी भी बार असफलता क्यों न मिले, हर नया दिन एक नई सफलता का अवसर लेकर आता है, इसीलिये मन्त्र में ऋषिवर ने कहा है- यह सूर्योदय मात्र सूर्योदय नहीं है, यह मेरे सौभाग्य का उदय है। प्रतिदिन सूर्योदय के साथ मनुष्य को निराशा छोड़कर नये उत्साह और विश्वास के साथ नये दिन का प्रारभ करना चाहिए।

एक महिला की सफलता उसके साथ जीवन बिताने वाले की योग्यता से जुड़ी होती है। मन्त्र कहता है- अहं तद् विद्वला– मैंने वर को प्राप्त कर लिया है। संस्कृत भाषा के शदों में अद्भुत शक्ति है- अर्थ को अपने अन्दर समाने की। होने वाले पति की विवाह संस्कार के समय वर संज्ञा होती है। वर शब्द का मूल अर्थ चुना गया होता है। वर का एक अर्थ श्रेष्ठ भी होता है, व्यक्ति जब बहुतों में से चुनाव करता है, तो वह श्रेष्ठ का ही चुनाव करता है, इसी कारण विवाह के समय विवाह कर रहे युवक की संज्ञा वर होती है। जब विवाह में युवक को वर कहते हैं, तो उसी समय युवती की संज्ञा वधू होती है। वधू शब्द का अर्थ है- इसे जीवन के लक्ष्य तक पहुँचाना है अथवा जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ लेना है, जिसके साथ रखने का उत्तरदायित्व वर स्वीकार करता है। वधू को साथ रखने का जिसमें सामर्थ्य है, ऐसा चुने गये व्यक्ति की संज्ञा वर है। इससे भी रहस्य की बात है, वर शब्द बताता है कि उसे किसी ने अपने लिए चुना है, स्वीकार किया है, अतः चुनने का अधिकार वर का नहीं, वधू का है। वर तो वधू का चयन स्वीकार करता है। चुनाव की प्रक्रिया को स्वयंवर कहते हैं। स्वयंवर में वर तो युवक है, परन्तु चुनने का अधिकार युवती का है, उस चुनाव से सहमत होना, न होना, युवक

की स्वतन्त्रता है। जब अनेक युवक एक युवती को प्राप्त करने में इच्छुक होते हैं, तो चयन का अधिकार युवती का होता है। भारतीय इतिहास में अनेकशः स्वयंवर के उदाहरण मिलते हैं, द्रौपदी स्वयंवर है, सीता स्वयंवर है। कालिदास के प्रसिद्ध महाकाव्य में अज- इन्दुमति स्वयंवर का चित्रण बड़ा रोचक है। स्वयंवर के समय देश के विभिन्न भागों से इन्दुमति से विवाह करने के इच्छुक राजकुमार स्वयंवर स्थल पर उपस्थित होते हैं। स्वयंवर के समय इन्दुमति की दासी सुनन्दा राजकुमारी इन्दुमति के साथ चलती है और प्रत्येक राजकुमार के सामने खड़ी होकर, राजकुमार के गुण, वैभव, विद्या, वीर्य, पराक्रम का वर्णन करती है। राजकुमारी इन्दुमति द्वारा अस्वीकृत करने पर वह अगले राजकुमार के सामने पहुँच जाती है। इस चित्रण को कालिदास ने अपने काव्य में बहुत सुन्दर ढंग से बाँधा है। वे कहते हैं-

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ ये ये व्यतीयाय पतिंवरासा

नरेन्द्र मार्गट्ट इव प्रपेदे विवर्ण भावं स स भूमिपालः।।

अर्थात् जब इन्दुमति राजकुमारों के समुख वरमाला लेकर उपस्थित होती थी, तब राजकुमार का मुख कान्ति से दैदीप्यमान हो जाता था, जैसे चलते हुए दीपक के किसी महल के समुख आने पर भवन की भव्यता प्रकाशित होती है, परन्तु जब राजकुमारी राजकुमार के सामने से बिना वरण किये आगे बढ़ जाती थी तो उस राजकुमार की कान्ति वैसी मलिन पड़ जाती थी, जैसे दीपक के भवन के सामने से निकल जाने पर, कितना भी विशाल भवन हो- अन्धकार में विलुप्त हो जाता है।

इस प्रकार महिला के अधिकारों पर एक सहज विचार इन शदों में प्रतिबिबित होता है। आज महिला के अधिकार और कर्त्तव्य का निश्चय पुरुष करना चाहता है, तब हमें वेद के इस सन्देश पर ध्यान देना चाहिये।

वेद प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान का अधिकार देता है। ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्य अपने हित-अहित का विचार कर सकता है। यदि महिला शिक्षित नहीं होगी, तो निर्णय और विचार कैसे कर सकेगी? इन मन्त्रों में अपने अधिकार, अपने कर्त्तव्य, अपनी योग्यता के कारण जो आत्मविश्वास व्यक्ति के अन्दर आता है, उसका स्पष्ट पता चलता है। अतः तद् विद्वला पतिम् अर्थात् मैंने अपने योग्य पति को प्राप्त कर लिया है, यह कथन उचित ही है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता: डॉ. धर्मवीर जी

JANUARY 4, 2016 LEAVE A COMMENT

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।

अहं तद्विद्वला पतिमयसाक्षि विषासहिः।।

– ऋक्. 10/159/1

वैदिक धर्म और संस्कृतिश्रेष्ठतम विचार है। वैदिक धर्म और संस्कृति के सबन्ध में विचार करते हुए, यदि हम एक बात का स्मरण रखें तो हमारे चिन्तन में दोष आने की सभावना समाप्त हो जाती है। वैदिक धर्म का मूलवेद है। वेद में सिद्धान्त प्रतिपादित है और जानने-मानने वाले को, उस विचार को व्यवहार में लाना होता है, उसपर आचरण करना होता है। हम कितना भी अच्छा क्यों न सोचते हों, हमारी अल्पशक्ति, अल्पबुद्धि कुछ-न-कुछ अनुचित कर बैठती है। यदि मनुष्य के पास पूर्ण ज्ञान और सामर्थ्य होता तो संसार में न तो ईश्वर की आवश्यकता होती और न ही संसार की। मनुष्य की अल्पज्ञता ही संसार और ईश्वर की आवश्यकता की प्रतिपादक है। अल्प और सर्व एक सापेक्ष शद हैं, एक शद के अभाव में दूसरे शद की कोई उपयोगिता नहीं बचती। मनुष्य अल्पज्ञ है, अतः सिद्ध है कि कोई सर्वज्ञ है। इसी प्रकार यदि कोई सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सर्वत्र है, तो वह एक ही होगा। इसमें विकल्प की कल्पना ही अनेकत्व का कारण बनेगी। ज्ञान का प्रवाह अधिक से कम की ओर होगा, अतः सर्वज्ञ परमेश्वर से अल्पज्ञ मनुष्य की ओर ज्ञान की गति स्वाभाविक है।

इस प्रकार ईश्वर एक है, सबको ज्ञान, सामर्थ्य, ऐश्वर्य का देने वाला है, तो उसके ज्ञान के देने में अन्याय या पक्षपात की बात कैसे सभव है। संसार में मनुष्यों को, प्राणियों को देखकर हमें ऐसा लगता है, जैसे परमेश्वर सबको अलग-अलग देकर अन्याय कर रहा है, परन्तु हम भूल जाते हैं कि देने वाला एक है, उसका देने का प्रकार भी एक ही होगा, अन्तर तो भिन्नता की ओर से होता है, प्राप्त करने वाले मनुष्य पृथक् हैं, अतः देने वाले के दृष्टि में सब एक हैं, परन्तु लेने वाले भिन्न और अनेक हैं, अतः ग्रहण करने के सामर्थ्य में भिन्नता दिखती है।

इतना मान लेने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर द्वारा सबके साथ समान व्यवहार ही हो रहा है, फिर चाहे स्त्री हो, पुरुष हो या कुछ और भी हो, जैसे ईश्वर की सत्ता सर्वत्र है, उसका अनुाव जड़ को तो नहीं होता, चेतन को होता है, उसी प्रकार एक चेतन उसकी सत्ता को अपने ज्ञान और योग्यता के अनुसार ही देख पाता है, अनुभव कर सकता है, दूसरा ज्ञान के अभाव से ऐसा करने में समर्थ नहीं हो पाता। यह अन्तर संसार में देखने में आता है, संसार का सारा व्यापार व्यक्तिपरक है, परमेश्वर सबको यथावत जानता है, अतः सबको उचित ज्ञान और सामर्थ्य देता है। आज इस मनुष्य संसार में स्त्री-पुरुष को लेकर जो जैसा व्यवहार दिखाई दे रहा है, वह सारा मनुष्य बुद्धि का परिणाम है। परमेश्वर सभी मनुष्यों का कल्याण चाहता है। और उनका उपकार करता है। जिस प्रकार एक माता-पिता अपने पुत्र और पुत्री का समान हित चाहते हैं। उसी प्रकार स्त्री पुरुष भी परमेश्वर की पुत्र-पुत्रियाँ हैं वह उनमें भेद और पक्षपात कैसे कर सकता है?

इस सूक्त के मन्त्रों से इस बात को भली प्रकार समझा जा सकता है। यह सूक्त शची पौलीमी कहलाता है, इसका देवता भी यही है, इसका ऋषि भी यही है। यदि कहने वाला किसी बात को कहता है तो कहने वाले को हम ऋषि कहते हैं और कही जाने वाली बात को देवता । ऋषि कभी स्वयं ईश्वर है कभी उसके ज्ञान का कोई प्रवक्ता। ये शद ईश्वर और उसके ज्ञान से सबन्ध रखते हैं अतः यदि मनुष्य के साथ इनको जोड़कर देंगे तो अर्थ की संगति नहीं लग पायेगी अतः शद को उसके अर्थ की ओर इंगित करने देते हैं तो हमें अर्थ सरलता से समझ में आ जाता है तथा उसक ी संगति भी ठीक लग जाती है। इस सूक्त में एक स्त्री का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए इस बात को समझाया गया है। इस विवरण को व्यक्ति विशेष का

वक्तव्य न मानकर स्त्री सामन्य का वक्तव्य मानना उचित होगा। इस विचार से मन्त्र में बताया गया विचार समाज की सभी स्त्रियों का होगा।

वेद उत्साह और आशा की प्रेरणा देता है। वेद में निराशा, पराजय, उदासी की बात नहीं है, यही बात इस सूक्त के मन्त्रों में भी दिखाई देती है। मन्त्र में कहा गया उदसौ सूर्यो अगात् मनुष्य का उत्साह सूर्य के उदय के साथ आगे बढ़ता है, प्रकृति का वातावरण मनुष्य के लिये उत्साह और आनन्द प्राप्त कराता है। प्रत्येक मनुष्य संसार में अपनी भूमिका में स्वयं सुख का अनुभव करता है। और अपने साथ वालों को भी आनन्दित करता है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता- डॉ धर्मवीर जी

DECEMBER 20, 2015 LEAVE A COMMENT

देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौयसो वोऽस्त।

संज्ञान सूक्त के अन्तिम मन्त्र की दूसरी पंक्ति में दो बातों पर बल दिया गया है। एक में कहा है कि परिवार में प्रेम का वातावरण सदा ही रहना चाहिए। यहाँ दो पद पढ़े गये हैं, सायं प्रातः, अर्थात् हमारे परिवारिक वातावरण में प्रेम का प्रवाह प्रातः से सायं तक और सायं से प्रातः तक प्रवाहित होते रहना चाहिए। यह प्रेम सौमनस्य से प्रकाशित होता है। हमारे मन में सद्भाव का प्रवाह होगा, सद्विचारों की गति होगी तो सौमनस्य का भाव बनेगा। प्रेम के लिये शारीरिक पुरुषार्थ तो होता ही है। जब हम किसी की सहायता करते हैं, सेवा करते हैं, छोटों से स्नेह और बड़ों का आदर करते हैं, तब हमारे परिवार में सौमनस्य का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

हम यदि सोचते हैं कि प्रेम हमारे परिवार के सदस्यों में स्वतः बना रहेगा, कोई हमारा भाई है, बेटा है, पिता या पुत्र है, इतने मात्र से परस्पर प्रेम उत्पन्न हो जायेगा, यह अनिवार्य नहीं है। हम पारिवारिक सबन्धों में प्रेम की सहज कल्पना करते हैं, परन्तु परिवार का प्राकृतिक सबन्ध प्रेम उत्पन्न करने की सहज परिस्थिति है। इसमें प्रेम के अंकुर निकलते हैं, जिन्हें विकसित किया जा सकता है।

प्रेम का अंकुरण विचारों से होता है, मनुष्य अपनी सेवा सहायता चाहता है, अपना आदर, समान चाहता है, अपनी प्रशंसा की इच्छा करता है। यह विचार हमें सुख देता है, कोई व्यक्ति दृष्टि सेवा सहायता करता है, समान देता है। ऐसे सुख की कामना सभी में होती है, अतः जो भी किसी के प्रति ऐसा करने का भाव रखेगा, उसके मन में इसी प्रकार आदर के भाव उत्पन्न होंगे। आप किसी का आदर करते हैं, दूसरा व्यक्ति भी आपका आदर करता है। आप किसी की सहायता करते हैं, दूसरे व्यक्ति के मन में भी आपके प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है। आवश्यकता पड़ने पर वह भी आपकी सेवा के लिये तत्पर रहता है।

मनुष्य के मन में स्वार्थ की पूर्ति की इच्छा स्वाभाविक होती है। स्वार्थ पूर्ण करने के लिये उपदेश करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। परोपकार, धर्म, सेवा, आदर आदि में कार्य बुद्धिपूर्वक सोच-विचार कर ही किये जा सकते हैं, अतः ये विचार हमारे हृदय में सदा बने रहें, इसका

प्रयत्न करना पड़ता है। इसी के उपाय के रूप में कहा गया है कि हमें सौमनस्य की निरन्तर रक्षा करनी होती है, तभी सौमनस्य सपूर्ण समय बना रह सकता है।

सौमनस्य बनाना पड़ता है, उसके लिये बहुत सावधानी सतर्कता की आवश्यकता होती है। मनुष्य में स्वार्थ की वृत्तियाँ सदा सक्रिय रहती हैं। उनपर नियन्त्रण रखने के लिये सदा सजग रहने की आवश्यकता है। इसके लिये वेद में उदाहरण दिया गया है, जैसे देवता लोग अमृत की रक्षा में तत्पर रहते हैं, वैसे मनुष्य को भी अपने वातावरण में सदाव सौमनस्य की रक्षा करने के लिये तत्पर रहना चाहिए। पुराणों में कथा आती है- देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया और सोलह पदार्थ प्राप्त किये। जब समुद्र से अमृत निकला तो देवताओं ने उस पर अपना अधिकार कर लिया। इस बात का जैसे ही असुरों को ज्ञान हुआ, वे अमृत प्राप्त करने के लिये देवताओं से संघर्ष करने लगे। जहाँ-जहाँ इस संघर्ष के कारण अमृत के बिन्दु गिरे, वहाँ-वहाँ अच्छी-अच्छी चीजें बनीं, उत्पन्न हुईं उन पदार्थों में कोई न्यूनता है तो असुरों के स्पर्श के कारण, जैसे लशुन की अमृत से उत्पत्ति मानी गई है, परन्तु इसमें दुर्गन्ध का कारण इससे असुरों का स्पर्श कहा गया है।

प्रकृति में देवता निरन्तर नियमपूर्वक कार्य करते हैं, तभी संसार नियमित रूप से चल रहा है। यदि एक क्षण के लिये भी देवता अपना काम छोड़ दें तो संसार में प्रलय उत्पन्न हो जायेगी। हम सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वायु आदि को देखकर इस बात का निश्चय भली प्रकार कर सकते हैं। इसी कारण व्रत धारण करते समय देवताओं के व्रत धारण को उदाहरण के रूप में स्मरण किया जाता है, 'अग्ने व्रतपते' हे अग्नि! तू व्रत पति है तेरा व्रत भी नहीं टूटता मैं भी तेरे समान व्रत पति बनूँ कहा गया है।

देवताओं का एक नाम अनिमेष है। वे कभी पलक भी नहीं झपकाते, सदा सतर्क, सावधान रहते हैं। वैसे भी परिवार समाज में सौमस्य बनाये रखने के लिये मनुष्य को सदा सावधान रहना चाहिए, सौमनस्य बना रह सकता है। देवताओं का देवत्व अमृत से ही है, अमृत नहीं है तो उनका देवत्व ही समाप्त हो जाता है। और अमरता है- व्रत न टूटना। व्रत टूटते ही मृत्यु है…….. हमें देवताओं के समान अपने सदविचारों की सदा रक्षा करनी चाहिये, तभी सौमनस्य की प्राप्ति सभव है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता : डॉ धर्मवीर

DECEMBER 8, 2015 LEAVE A COMMENT

सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोयेकश्नुष्टीन्त्संवनेन सर्वान्।

एक परिवार एक साथ सुखपूर्वक कैसे रह सकता है, यह इस सूक्त का केन्द्रीय विचार है। सामनस्य सूक्त का यह अन्तिम मन्त्र है। इस मन्त्र में परिवार को एक साथ सौमनस्यपूर्वक रहने के लिये उसको धार्मिक होने की प्रेरणा दी गई है। मन्त्र में एक शद है 'सध्रीचीनान्'। परिवार के जो लोग एक साथ रह रहे हैं, वे 'संमनसः' समान मत वाले होने चाहिएँ। समान मन एक दूसरे के लिये अनुकूल सोचने वाले होते हैं। परस्पर हित की कामना करते हैं, तभी समान बनते हैं। वेद कहता है- समान हित सोचने के लिये 'एकश्नुष्टीन्'- एक धर्म कार्य में प्रवृत्त होने वाला होना चाहिए। जो धार्मिक नहीं है, वे शान्त मन वाले, परोपकार की भावना

वाले नहीं हो सकते। परिवार को सुखी और साथ रखने के लिये परिवार के सदस्यों का धार्मिक होना आवश्यक है। परिवार के सदस्य धार्मिक हैं, तो उनमें शान्ति और सहनशीलता का गुण होगा। धार्मिक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से उदार और सहनशील होता है।

आज समाज में जहाँ भी संघर्ष है, पारिवारिक विघटन है, वहाँ सहनशीलता का अभाव देखने में आता है। हम क्रोध करने को, विरोध करने को, असहमति को अपना सामर्थ्य मान बैठे हैं, जबकि वस्तुस्थिति यह है कि जिस मनुष्य को जितनी शीघ्रता से क्रोध आता है, प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, वह उतना ही दुर्बल होता है। सामर्थ्यवान व्यक्ति का सहज गुण क्रोध न आना है, जिसे क्रोध नहीं आता, वही सहनशील होता है। परिवार के सदस्य धार्मिक होते हैं तो वे सहनशील और उदार होते हैं। परिवार के बड़े सदस्यों में उदारता तथा छोटे सदस्यों में नम्रता और बड़ों के प्रति आदर का भाव होता है। ये गुण धर्म की कसौटी है। परिवार में धार्मिकता होने से ईश्वर-भक्ति का भाव सभी सदस्यों में रहता है। अच्छे कार्यों में मन लगने से बुरे कार्यों और स्वार्थ भावना से मनुष्य दूर रहता है।

धार्मिक होना मनुष्य के लिये आवश्यक है, अधार्मिक व्यक्ति में स्वार्थ और अन्याय का भाव आता है। परिवार के किसी भी सदस्य में स्वार्थ का भाव उत्पन्न हो जाता है तो मनुष्य अन्याय करने में संकोच नहीं करता। एक गाँव में दो भाई एक साथ रहते थे। परिवार में सामञ्जस्य था, अच्छी प्रगति हो रही थी। दोनों भाई दुकान में बैठे थे। बच्चे बाहर से खेलते हुए आये। बड़े भाई के पास आम रख थे, बड़े भाई ने बच्चों में आम बाँट दिये। बच्चे आम लेकर खेलने चले गये। दो दिन बाद छोटे भाई ने बड़े भाई को प्रस्ताव दिया- भाई अब हमें अपना व्यवसाय, घर बाँट लेना चाहिए। बड़े भाई ने पूछा- तुहारे मन में ऐसा विचार क्यों आया, तो छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा- भैया जब परसों बच्चे दुकान पर आये, आपने बच्चों को आम बाँटे, परन्तु आपने अपने बेटे को क्रम तोड़कर आम का बड़ा फल दिया, तभी मैंने निर्णय कर लिया था कि अब हमें अलग हो जाना चाहिए। बड़ा भाई कुछ नहीं बोल सका और दोनों भाई अलग हो गये।

इस प्रकार धर्म उचित व्यवहार का नाम है। जो लोग धर्म को अनावश्यक या वैकल्पिक समझते हैं, उन्हें जानने की आवश्यकता है कि धर्म विकल्प नहीं, जीवन का अनिवार्य अंग है।

मनुष्य को स्वार्थ, अन्याय से दूर रहने के लिये धार्मिक होना चाहिए। धार्मिक व्यक्ति परोपकार करने में प्रवृत्त होता है। जिस परिवार के सदस्य धार्मिक आचरण और परोपकार की भावना वाले होते हैं, वही परिवार सुखी और संगठित रह सकता है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-21

NOVEMBER 26, 2015 LEAVE A COMMENT

सपञ्चोऽग्नि सपर्यत

प्रसंग है परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखने के क्या उपाय हैं। मन्त्र कहता है- परिवार के लोग कहीं तो मिलकर बैठे। मिलकर बैठने का एक मात्र स्थान है- यज्ञ वेदि। यज्ञ जब भी करेंगे तब मिलकर बैठेंगे। यज्ञ करते हुए दोनों लोग परस्पर मिलकर कार्य सपादित करते हैं।

इस समय ऋत्विज यज्ञ कराने वाले तथा यजमान यज्ञ करने वाले दोनों एक मत होकर यज्ञ करते हैं। ऋत्विज् यजमान का मार्गदर्शन करते हैं और यजमान ऋत्विज् के निर्देशों का पालन करते हैं। मन्त्र में निर्देश है। परिवार के लोग अग्नि की उपासना करो और कैसे करने चाहिये तो कहा गया – सयञ्च अर्थात् भलीप्रकार मिलकर सब लोग अग्नि की उपासना करें।

यज्ञ का स्थान विद्वानों का, बड़ों के निर्देश का पालन प्राप्त करने का स्थान है, यज्ञ की सफलता यज्ञ को श्रद्धापूर्वक सपन्न करने में है। यजमान आदरपूर्वक निर्देशों का पालन करते हुए यज्ञ सपादित करते हैं। जिस परिवार में प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया जाता है, वहाँ परस्पर प्रेमभाव बना रहता है। बड़ों व विद्वानों के प्रति आदर का भाव रहता है। यज्ञ करने से मनुष्य में उदारता का भाव उत्पन्न होता है। यज्ञ में मनुष्य देने का दान करने का सहयोग करने का भाव रखता है। यज्ञ से मन की संकीर्णता और स्वार्थ की वृत्ति समाप्त होती है। मनुष्य जब यज्ञ करने का विचार करता है, उसी समय उसके अन्दर सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। सात्विक विचारों का लक्षण यही बताया गया है। मनुष्य दान देना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, परोपकार करना आदि विचार करता है, उस समय उसके मन में सतोगुण का उदय होता है। यज्ञ करने से मनुष्य की सात्विक वृत्ति का विस्तार होता है। यज्ञ से मन का विस्तार होता है। विस्तार खुलेपन का प्रतिक है। बन्धन है परोपकार मुक्ति है।

इसीलिये यज्ञ की भावना से कार्य करने का निर्देश किया है, श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं- इस संसार में यज्ञ भावना से रहित होकर कोई व्यक्ति बन्धन से मुक्ति नहीं हो सकता। इसलिये मनुष्य को कोई भी कार्य यज्ञ भावना से युक्त होकर करना चाहिए। यज्ञ में समर्पण है, साथ है, साथ से संग को लाभ मिलता है तथा संवाद का अवसर भी प्राप्त होता है। समर्पण भी होता है, यही भाव परिवार में सब को एक साथ रखने के लिये आवश्यक है, उपयोगी है। मन्त्र कहता है- परिवार के लोग मिलकर यज्ञ करें, आदरपूर्वक यज्ञीय भावना से करें, इससे परिवार के सदस्यों के मन पवित्र और आदर की भावना से युक्त होते हैं। इसका परिणाम सब परस्पर जुड़े रहते हैं।

मन्त्र का अन्तिम वाक्य है- आरा नाभिभिवामितः। जैसे यज्ञ करने वाले यज्ञ रूप नाभि से सभी बन्धे रहते हैं, उसी प्रकार परिवार के सदस्य भी केन्द्र से जुड़े रहते हैं। मन्त्र में उपमा दी गई है। जिस प्रकार गाड़ी आरे अक्ष से जुड़े रहते हैं और अपना-अपना कार्य करते हुए केन्द्र से बंधे रहते हैं। उसी प्रकार परिवार के सदस्यों का भी एक केन्द्र होना चाहिए, जिससे सभी सदस्य जुड़े रहें। जहाँ एक व्यक्ति के निर्देशन में परिवार चलता है, वहाँ सभी कार्य व्यवस्थित होते हैं, सभी एक दूसरे का ध्यान रखते हैं। जहाँ यज्ञीय भावना नहीं होती, वहां सब अपने-अपने बारे में ही सोचते हैं, वहां स्वार्थ बुद्धि होती है। स्वार्थ से मन में द्वेष भाव और अन्याय उत्पन्न होता है। अतः मन्त्र में दो बातों को एक साथ बताया है, घर में यज्ञ होना चाहिए, सभी लोग मिलकर श्रद्धा से यज्ञ करेंगे तो परिवार के लोग परस्पर आरे की भांति केन्द्र से जुडेंगे, बड़ों से सबन्ध बनाकर रखेंगे तभी परिवार एक होकर रह सकता है, परिवार में सुख, शान्ति बनी रह सकती है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-20 समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।।

घर में सदस्यों के मध्य सौमनस्य कैसे बना रहे, इसके उपाय इस मन्त्र में बताये गये हैं, उनमें प्रथम है- सदस्यों का खानपान समान हो। भोजन आच्छादन के पश्चात् व्यवहार में आने वाले साधन और किये जाने वाले कार्य भी समान हों। इस मन्त्र में एक महत्त्वपूर्ण बात कही गई है, हमारे परिवार में सामान्य रूप से जिस प्रकार के कार्य होते हैं, उन्हें सपन्न करने के लिए उसी प्रकार के साधन भी अपनाये जाते हैं। आजकल साधन केवल सपन्नता के प्रतीक बनकर रह गये है। आपके घर में कैसे साधन हैं। वे कितने नये, कितने मूल्यवान हैं, यही बात महत्त्वपूर्ण हो गई है।

साधन आवश्यक तो हैं, साधनों की उपस्थिति मनुष्य को सपन्न बनाती है। साधन साध्य के लिये होते हैं। साध्य को सिद्ध करने के काम आते हैं। यदि ये साधन साध्य को सिद्ध करने में समर्थ नहीं हैं तो साधन व्यर्थ का बोझ बन जाते हैं। साधनों की जहाँ तक आवश्यकता होती है, उनका वहीं तक संग्रह उचित है परन्तु अधिक साधन मनुष्य को अपना सेवक बना लेते हैं। साधनों को संग्रह करने के लिये धन का संग्रह करना पड़ता है। यथाकथंचित् उतना धन संग्रह में लग जाता है। फिर उस संग्रह का उपयोग होने या न होने की दशा में उनके रख रखाव पर धन और समय का अपव्यय करना पड़ता है। हमारे जीवन में साध्य छूट जाता है। साधन ही साध्य का स्थान ले लेते हैं। कभी हमारे इन घर, वाहन, वस्त्र, आभूषण या धन आदि की जीवन को चलाने के लिये आवश्यकता होती है परन्तु जब साधन साध्य का स्थान लेने लगते हैं तो हमारी साधना व्यर्थ हो जाती है। हमारा साधनों के प्रति प्रेम इतना बढ़ जाता है कि हम इन वस्तुओं की सेवा में ही पूरा जीवन और सामर्थ्य समाप्त कर देते हैं, वेद कहता है- साधन आपके लिये हैं, आप साधनों के लिये नहीं। अतः मनुष्य को साधनों के आधीन नहीं होना चाहिए।

हमारे देश में साधन सपन्न दो ही वर्ण होते हैं- प्रथम क्षत्रिय और दूसरा वैश्य तथा आश्रम परपरा में तो केवल एक ही आश्रम साधनों की सपन्नता रखता है, शेष तीन तो इसी एक आश्रम पर नर्िार रहते हैं और इस परिस्थिति को ही आदर्श माना गया है। चार आश्रमों में केवल एक गृहस्थ को ही सपन्नता का अधिकार दिया गया है। शेष ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी व संन्यासी तीनों ही गृहस्थ पर सर्वथा निर्भर करते हैं। तो क्या शेष तीन आश्रमों के पास साधन नहीं होने चाहिएं। साधन तो चाहिए परन्तु इनके उपार्जन का सामर्थ्य उनके आश्रमवस्था में सिद्ध करने वाले प्रयोजनों को व्यर्थ कर देंगे। विद्यार्थी के पास न साधन हैं, न आवश्यकता है, उनकी चिन्ता तो माता-पिता को भी नहीं करनी। ब्रह्मचारियों की चिन्ता करना समाज और राज्य का विषय है। वानप्रस्थी और संन्यासी को साधनों की आवश्यकता अत्यन्त न्यून हो जाती है, उनका भार समाज पर है। इस प्रकार साधन सपन्न रहकर सभी आश्रमों की सेवा करना एक गृहाश्रमी का दायित्व है।

इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण को साधनों के संग्रह का निर्देश नहीं है, उसे अपना जीवन ज्ञान की खोज, संग्रह और उसके प्रचार-प्रसार में लगाना है, यदि इसमें साधनों की आवश्यकता पड़े तो उसका उत्तरदायित्व समाज और राज्य का है। यहाँ ध्यान रखने की बात है, ये लोग साधन जुटाने का सामर्थ्य नहीं रखते, ऐसा नहीं है। परन्तु साधनों के उपार्जन करने में समय, धन और परिश्रम लगता है, यह सब ज्ञान की तुलना में तुच्छ है, अतः मुय विषय पर समय

लगाने की बात शास्त्र करता है। शूद्र के पास सामर्थ्य का अभाव है, अतः उसे किसी प्रकार बाध्य नहीं किया गया।

मन्त्र में साधन को साध्य के लिये लगाने की बात कही है। हमारे पास हमारे जीवन के प्रयोजन को सिद्ध करने योग्य साधन होने चाहिये और साधनों को पूरा उपयोग धर्मार्थ की सिद्धि के लिये किया जाना उचित होगा तभी परिवार में विरोध का भाव उत्पन्न नहीं होगा। मनुष्य के आराम, विलास, आलस्य, प्रमाद की स्थिति में साधन अपव्यय और संघर्ष का कारण बनते हैं। अतः कहा है- समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि तुहें समान साधन देकर सत्कर्मो में लगाता हूँ।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-17 समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समानेयोक्त्रे सह वो युनज्मि। सयञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।

SEPTEMBER 19, 2015 LEAVE A COMMENT

वेद में, परिवार में सुख से रहने और अन्य सदस्यों को सुखी रखने का उपाय बताया है, इस मन्त्र में बहुत सारी छोटी-छोटी प्रतिदिन उपयोग में आने वाली बातों की चर्चा है। मन्त्र के प्रथम भाग में परिवार के अन्दर खानपान कैसा हो, इसकी चर्चा है। भोजनपान में सभी सदस्यों में समानता का भाव रहना चाहिए। पक्षपात का प्रारभ घरों में भोजन और काम के विभाजन से होता है। मनुष्य का स्वभाव है वह कम से कम करना चाहता है और अधिक से अधिक पाना चाहता है। मनुष्य समूह में होता है तो उसकी इच्छा अधिक और अच्छा पाने की रहती है। सभी ऐसा चाहेंगे तो समाधान नहीं होगा, मन में चोरी का भाव आयेगा, छुपकर पाने की और छुपकर खाने की इच्छा होगी। इस प्रकार जो अकेला खाना चाहता है वह पाप करता है, इसी कारण वेद ने कहा है-

केवलाघो भवति केवलादी।

जो मनुष्य अपने आप अकेला खाता है, वह पाप ही खाता है। गीता में भी उपदेश दिया गया है-

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचनयत्म कारणात्।

जो लोग अपना ही पकाकर स्वयं अकेले ही खाना चाहते हैं, उनके लिए गीता में कहा गया है- ऐसे व्यक्ति पाप ही पकाते हैं और पाप ही खाते हैं।

वैदिक संस्कृति में भोजन के सबन्ध में बहुत सारे निर्देश मिलते हैं। एक गृहस्थ को भी भोजन अपने लिए नहीं, यज्ञ के लिये बनाने का विधान है। मनु महाराज कहते हैं- गृहस्थ को भोजन पाने की दो स्थितियाँ हैं। एक तो वह भुक्त शेष खा सकता है, दूसरा वह हुत शेष खा सकता है। दोनों ही परिस्थितियों में गृहस्थ का भोजन अपने लिये नहीं है। वह शेष भोजी है। शेष तो मुय के उपयोग करने के पश्चात् जो बचता है उसे शेष कहते हैं। ये दोनों बन्धन

आजकल के व्यक्ति को बाधक लगते हैं, उसे अपने साथ बड़ा अन्याय लगता है। यथार्थ में विचार करने पर इसमें बड़ा रहस्य ज्ञात होता है। पहली बात मनुष्य अपने लिये पकाता है तो कुछ भी, कैसा भी बना कर खा लेता है, उसे बहुत चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती। विशेष रूप से परिवार में जब महिला अकेली रह जाती है, अन्य सदस्य घर पर नहीं होते तो उसे भोजन बनाना व्यर्थ लगता है, वैसे ही कुछ भी बनाकर कुछ भी खाकर काम चलाने की भावना रहती है। पति और बच्चों के रहने पर भोजन यथावत् अच्छा बनाने का प्रयास रहता है। इसी प्रकार घर में अतिथि आ जाये तो भोजन कुछ विशेष बनता है, विशेष अतिथि के आने पर भोजन की विशेषता बढ़ जाती है। इसी प्रकार जब भगवान के लिए, मन्दिर के लिये यज्ञ के लिए कुछ बनेगा तो अच्छा बनेगा, विशेष बनेगा आपके घर में सदा विशेष और अच्छा भोजन ही बने इस कारण गृहस्थ के भोजन पर नियम बना दिया गृहस्थ को हुत शेष खाना चाहिये या भुक्त शेष।

मनुष्य के मन में खिलाने की भावना आ जाती है तो फिर उसके अन्दर से पक्षपात या चोरी का भाव निकल जाता है। मनुष्य जब अकेला खाता है तब छिपकर खाता है परन्तु जब खिलाने की इच्छा रखता है तो उसे सबके साथ खाने में आनन्द आता है। तब एक जैसा खाना होता है। भोजन को बांटकर खाता है। भोजन सबके साथ खाना और बांटकर खाना परस्पर प्रीति का कारण होता है परन्तु मुसलमानों की भांति जूठा एक ही पात्र में खाना स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होता। प्रेम का आधार पक्षपात रहित होना है, भोजन का एक स्थान पर होना नहीं है। भोजन सौहार्द और प्रीति का प्रतीक होता है, श्रीकृष्ण जी महाराज जब सन्धि का प्रस्ताव लेकर गये थे, तब दुर्योधन ने कृष्ण की बात तो नहीं मानी परन्तु अतिथि के नाते उन्हें भोजन का प्रस्ताव अवश्य दिया, तब श्री कृष्ण ने दुर्योधन से कहा था- दुर्योधन दूसरे के यहाँ भोजन दो परिस्थितियों में किया जाता है या तो उससे अत्यन्त प्रीति हो या स्वयं विपदाग्रस्त हो। हमारे मध्य इन दोनों में से कुछ भी नहीं, अतः मैं तुहारा भोजन अस्वीकार करता हूँ।

सप्रीति भोज्यान्नानि, आपद् भोज्यानि वा पुनः।

न त्वं सप्रियसे राजन न चैवापद गता वयम्।

आचार्य सोमदेव जिज्ञासाः- निम्न लिखित वेद मन्त्रों से शंका और उपशंका उत्पन्न होता है। यजुर्वेद अ. 29 के मन्त्रों 40,41 और 42 संया वाले…. ''छागमश्वियोस्वाहा। मेषं सरस्वत्ये स्वाहा, ऋषभमिन्द्राय….। 40'' ''छागस्य वषाया मेदसो…..मेषस्य वषाया मेदसो, ऋषभस्य वषाया मेदसो……41'' छागैर्न मेषै, र्मृषमैःसुता….42 इनमें से

41 और 42 मन्त्रों का अर्थ "दयानन्द संस्थान से प्रकाशित भाष्य में भी बकरे, भेड़ों और बैल किया गया है। ये सब पौराणिक के जैसा भाष्य देखने को आया शंका होता है इस शंका के समाधान कर के उत्तर भेजें।"

SEPTEMBER 18, 2015 LEAVE A COMMENT

समाधान– महर्षि दयानन्द आर्यावर्त की उन्नति, सुख, समृद्धि का एक कारण यज्ञ को कहतेहैं। महर्षि सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं- "आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।" महर्षि ने यहाँ यज्ञ की महत्ता को प्रकट किया है। यज्ञ से रोग कैसे दूर होंगे? जब हवन की अग्नि में रोगनाशक पदार्थ डालेंगे तब रोग दूर होगें। यज्ञ में माँस आदि पदार्थ डालने से रोग दूर होकर कैसे कभी सुख की वृद्धि हो सकती है? उलटे मांसादि द्रव्य अग्नि में होम करने से तो रोग उत्पन्न हो दुःख की वृद्धि होगी। महर्षि होम से रोग दूर होना और सुख का बढ़ना देख रहे हैं। यज्ञ में मांसादि का डालना कब और क्यों हुआ वह अन्य पाठकों को दृष्टि में रखकर आगे लिखेगें। पहले आपकी जिज्ञासा का समाधान करते हैं। आपने जो यजुर्वेद 21 वें अध्याय के 40-42 मन्त्र उद्धृत किये हैं वह जो उन मन्त्रों का महर्षि ने भाष्य किया है सो ठीक है। इस भाष्य को देखने पर पौराणिकों जैसा भाष्य न लगकर अपितु और दृढ़ता से आर्ष भाष्य दिखता है। यहाँ पाठकों को दृष्टि में रखकर मन्त्र व उसका ऋषि भाष्य लिखते हैं।

(1) होता यक्षदाग्नि ँ स्वाहाज्यस्य स्तोकानाथंस्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा

छागमश्विियाम् स्वाहा मेषं सरस्वत्यै स्वाहाऽऋषभमिन्द्राय

…..पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।।

19.40

मन्त्रों को पूरा पदार्थ न लिखकर, जिन पर आपकी जिज्ञासा है उनका अर्थ व मन्त्रों का भावार्थ यहाँ लिखते हैं- (छागम्) दुःख छेदन करने को (अश्वियाम्) राज्य के स्वामी और पशु के पालन करने वालो से (स्वाहा) उत्तम रीति से (मेषम्)सेचन करने हारे को (सरस्वत्यै) विज्ञानयुक्त वाणी के लिए (ऋषभम्) श्रेष्ठ पुरुषार्थ को (इन्द्राय) परमैश्वर्य के लिए।

भावार्थ– इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोप्मालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या, क्रियाकुशलता और प्रयत्न से अग्न्यादि विद्या को जान के गौ आदि पशुओं का अच्छे प्रकार पालन करके सबके उपकार को करते हैं वे वैद्य के समान प्रजा के दुःख के नाशक होते हैं।

(2) होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेताम्**…**

………मेषस्य वपाया मेदसो जुषताम् हविर्होतर्यज**……..**

….ऋषभस्य वपाया मेदसो जुषताम्**……..** 19.41

(छागस्य) बकरा, गौ, भैंस आदि पशु सबन्धी (वपाया) बीज बोने वा सूत के कपड़े आदि बनाने और (मेदसः) चिकने पदार्थ के (हविः) लेने देने योग्य व्यवहार का (जुषेताम्) सेवन करें…………(मेषस्य) मेढ़ा के (वपायाः) बीज को बढ़ाने वाली क्रिया और (मेदसः) चिकने पदार्थ सबन्धी (हविः) अग्नि में छोड़ने योग्य संस्कार किये हुए अन्न आदि पदार्थ (जुषताम्) सेवन करें…………(ऋषभस्य) बैल की (वपायाः) बढ़ाने वाली रीति और (मेदसः) चिकने पदार्थ सबन्धी (हविः) देने योग्य पदार्थ का (जुषताम्) सेवन करें।

भावार्थ– जो मनुष्य पशुओं की संया और बल को बढ़ाते हैं वे आपाी बलवान् होते और जो पशुओं से उत्पन्न हुए दूध और उससे उत्पन्न हुए घी का सेवन करते वे कोमल स्वभाव वाले होते हैं और जो खेती करने आदि के लिए इन बैलों को युक्त करते हैं वे धनधान्य युक्त होते हैं।

(3)होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्रम**…**छागैर्नमेषैर्ऋषभैः

सुता **…………**मधु पिवन्तु मदन्तु व्यन्तु होतर्यज।। 19.42

पदार्थ– (छागैः) विनाश करने योग्य पदार्थों वा बकरा आदि पशुओं (न) जैसे तथा (मेषैः) देखने योग्य पदार्थों वा मेढ़ों (ऋषभैः) श्रेष्ठ पदार्थों वा बैलों (सुताः) जो अभिषेक को पाये हुए हों वे।

भावार्थ– जो संसार के पदार्थों की विद्या, सत्यवाणी और भली भांति रक्षा करने हारे राजा को पाकर पशुओं के दूध आदि पदार्थों से पुष्ट होते हैं वे अच्छे रसयुक्त अच्छे संस्कार किये हुए अन्न आदि जो सुपरीक्षित हों, उनको युक्ति के साथ खा और रसों को पी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के निमित्त अच्छा यत्न करते हैं, वे सदैव सुखी होते हैं।

यहाँ इन मन्त्रों के भाष्य और भावार्थ में कहीं भी पौराणिकता नहीं लग रही है। मन्त्रों में छाग, ऋ षभ, मेष आदि शद आये हैं, उनका महर्षि ने जो युक्त अर्थ था वह किया है। छाग का अर्थ लौकिक भाषा में बकरा होता है किन्तु महर्षि ने छाग का अर्थ दुःख छेदन किया है। मेष का अर्थ सामान्य भेड़ होता है, और महर्षि का अर्थ सेचन करने हारा है। ऐसे ही ऋषभ का सामान्य अर्थ बैल और महर्षि का अर्थ श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। जब ऐसे पौराणिकता से परे होकर महर्षि ने वैदिक अर्थ किये हैं तब कै से कोई कह सकता है कि यह पौराणिकों जैसा भाष्य दिखता है। भेड़ बैल, बकरा आदि शद आने मात्र से पौराणिकों जैसा भाष्य नहीं हो जाता।

हाँ यदि महर्षि मन्त्र में आये हुए वपा और मेद का अर्थ चर्बी करके उसकी हवन में आहूति की बात कहते तो यह महर्षि का भाष्य अवश्य पौराणिकों वाला हो जाता किन्तु महर्षि ने ऐसा कहीं भी नहीं लिखा। अपितु वपा का अर्थ महर्षि बीज बढ़ाने वाली क्रिया करते हैं और

मेद का अर्थ चिकना पदार्थ जो कि महर्षि ने मन्त्रों के भावार्थ में घी-दूध आदि पदार्थ लिखे हैं।

महर्षि का किया वेद भाष्य तो पौराणिकता से दूर वैदिक रीति का भाष्य है। जो पौराणिकों ने इन्हीं वेद मन्त्रों के अर्थ भेड़, बकरा, बैल आदि पशुओं के मांस को यज्ञ में डालना कर रखे थे, उनको महर्षि ने दूर कर शुद्ध भाष्य किया है। पौराणिक लोगों ने लोक प्रचलित अर्थ वेद के साथ जोड़कर भाष्य किया, जिससे इतना बड़ा अनर्थ हुआ कि संसार के जो सभी मनुष्य एक वेद मत को मानकर चल रहे थे, उसको छोड़ नये-नये मत बनाकर चलने लग गये। यह वही वेदमन्त्रों के अनर्थ करने का परिणाम था।

वपा और मेद का अर्थ चर्बी, वसा लोक में है जो कि यही अर्थ पौराणिकों ने लिया। पौराणिकों को ज्ञात नहीं की वेद में रूढ शद और अर्थों का प्रयोग नहीं है अपितु यौगिक शद और अर्थों का प्रयोग है जो कि महर्षि दयानन्द ने योगिक मानकर ही वेदमन्त्रों का अर्थ किया है।

यज्ञ में मांस आदि का डालना महाभारत युद्ध के पश्चात् ब्रह्मणों के आलस्य प्रमाद के कारण हुआ। महर्षि दयानन्द इस विषय में कहते हैं- ''परन्तु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या संदेह?............।''

जब ब्राह्मण विद्याहीन हुये तब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के अविद्वान् होने में तो कथा ही क्या कहानी? जो परपरा से वेदादिशास्त्रों का अर्थ सहित पढ़ने का प्रचार था, वहाी छूट गया। केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे। सो पाठ मात्र भी क्षत्रियों आदि को न पढ़ाया। क्योंकि जब अविद्वान् हुए, गुरु बन गये, तब छल-कपट-अधर्म भी उनमें बढ़ता चला।.......'' स.प्र.स. 11।।

यज्ञ में मांसादि का कारण ब्राह्मणों का आलस्य प्रमाद व विषयासक्ति रहा है, यह मान्यता महर्षि दयानन्द की है जो युक्त है।

जब यज्ञों में अथवा यज्ञों के नाम पर पशु हिंसा का प्रचलन हुआ तो अश्वमेघ, गोमेध, नरमेध आदि यज्ञों का यथार्थ स्वरूप न रखकर उल्टा कर दिया अर्थात् अश्वमेघ यज्ञ जो चक्रवर्ती राजा करता था, इसमें इन पोप ब्राह्मणों ने घोड़े के मांस की आहुति का विधान यज्ञ कर दिया। ऐसे गोमेध जो कि गो का अर्थ इन्द्रियाँ अथवा पृथिवी था, जिसमें इन्द्रिय संयमन किया जाता था उस गोमेध यज्ञ में गाय के मांस का विधान इन तथाकथित ब्राह्मणों ने कर दिया। इसके विधान के लिए सूत्रग्रन्थों में ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रक्षेप कर दिया। यज्ञों के यथार्थ अर्थ, स्वरूप को समझकर जो पशु यज्ञ व यजमान् के उपकारक थे, उन पशुओं को मार-मारकर यज्ञकुण्डों में उनकी आहुति देने लगे। धीरे-धीरे अनाचार इतना बढ़ा कि वैदिक मन्त्रों का विनियोग यज्ञों में और उनके माध्यम से पशुहिंसा में होने लगा। जिस प्रकार के मन्त्र ऊपर दिये हैं ऐसे मन्त्रों का विनियोग ब्राह्मण वर्ग यज्ञ में पशुहिंसा के लिए करने लगे थे।

वेदों में यज्ञ के पर्याय अथवा विशेषण रूप में 'अध्वर' शद का प्रयोग सैकड़ों स्थानों पर आया है। निघण्टु में 'ध्वृ' धातु हिंसार्थक है। अध्वर शद में हिंसा का निषेध है अर्थात् नञ् पूर्वक ध्वृ

धातु से अध्वर शद बना है। इस अध्वर शद का निर्वचन करते हुए महर्षि यास्क ने लिखा है- अध्वर इति यज्ञनाम-ध्वरहिंसाकर्मा तत् प्रतिषेधः। (निरुक्त-1.8)

अध्वर यज्ञ का नाम है, जिसका अर्थ हिंसा रहित है। अर्थात् जहाँ हिंसा नहीं होती वह अध्वर=यज्ञ कहलाता है। ऐसे हिंसा रहित कर्म को भी इन पोपों ने महाहिंसा कारक बना दिया था।

मेध शद 'मेधृ' धातु से बना है। मेधृ– मेधाहिंसनयोः संगमे च यह धातुपाठ का सूत्र है। मेधृ धातु के बुद्धि को बढ़ाना, लोगों में एकता या प्रेम को बढ़ाना और हिंसा ये तीन अर्थ हैं। इन तीनों अर्थों में से पोप जी को हिंसा अर्थ पसन्द आया और इससे यज्ञ को भी हिंसक बना दिया। जिस धर्म और समाज में अहिंसा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था वहाँ यज्ञों हिंसा करना एक विडबना ही थी।

वेदों में अनेकत्र ऐसे वचन उपलध हैं जिसमें स्पष्ट ही पशु रक्षा का निर्देश है। यजुर्वेद के प्रारा में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहते हुए कहा है – 'पशुन्पाहि' पशु मात्र की रक्षा करो। इसी यजुर्वेद के मन्त्र 1.1 में गौ को 'अघ्न्या' न मारने योग्य कहा है। यजु. 6.11 में गृहस्थ को आदेश दिया है- 'पशुंस्त्रायेथाम्' पशुओं की रक्षा करो। 14.3 में कहा- 'द्विपादवचतुष्पात् पाहि' दो पैर वाले मनुष्य और चार पैर वाले पशुओं की रक्षा करो। वेद में ऐसे-ऐसे निर्देश अनेक स्थलों पर हैं। जो वेद पशुओं की रक्षा करने का निर्देश देता हो उसमें पशुओं की हिंसा का अर्थ निकालना भी पशुता ही है।

महर्षि दयानन्द वेदों के अनुयायी थे। वेदों को सर्वोपरि प्रमाण मानते थे। महर्षि की वेदों के प्रति दृढ़ आस्था थी। और महर्षि ने वेदों को यथार्थ में समझा था। यथार्थरूप में वेद को समझने वाले ऋषि के वेद भाष्य में पौराणिकता कैसे हो सकती है, ऐसा होना सर्वथा असभव है। अस्तु

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

स्तुता मया वरदा वेदमाता-16

SEPTEMBER 5, 2015 LEAVE A COMMENT

परिवार में शान्ति और सुखपूर्वक कैसे रहा जा सकता है, इसके लिये इस वेद मन्त्र में उपाय बताये गये हैं। पहला है- अपने चित्त को उदार करना, दूसरा- परस्पर द्वेष भाव न रखना, तीसरा- परस्पर मिलकर कार्य करना, चौथा– परिवार को एक केन्द्र के साथ बांधकर रखना, पाँचवाँ- परिवार के सदस्यों और अन्य सभी से प्रेमपूर्वक बोलना। छठा– सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि। इस मन्त्र का शद है सध्रीचीनान्, ऋषि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं- समान लाभालाभ से एक दूसरे के सहायक हैं।

परिवार संस्था समाज में कार्य करने का सिद्धान्त है- कार्य के हानि-लाभ के लिए सभी को समान सहायक समझें। मनुष्य जब परिवार में कार्य करते हैं, वहाँ छोटों के प्रति सबका समान स्नेह आवश्यक है। सदस्यों में मेरे-तेरे के भाव नहीं होने चाहिए, सभी सदस्यों को समदृष्टि से देखना चाहिए। पक्षपात और स्वार्थ का भाव मनों में दूरी उत्पन्न करता है। यह भाव बहुत

छोटी-छोटी बातों से परिलक्षित होता है। इस भाव को बुद्धि से विचारपूर्वक ही दूर किया जा सकता है। मनुष्य का स्वभाव मोह और लोभ का होता है। अपने स्नेहपात्र को देखकर मनुष्य के मन में पक्षपात का भाव आ जाता है। मन्दिर में प्रसाद बांटते हुए परिचित को देखकर मनुष्य प्रसाद की मात्रा बढ़ा देता है। भोजन की पंक्ति में अपने मित्र-सबन्धी को देखकर अच्छी वस्तु और अधिक मात्रा में देना स्वाभाविक है, जब भी ऐसा अवसर आये, उस समय बुद्धि से थोड़ा भी विचार करें तो बुराई से रुका जा सकता है। दूसरा विवाद का अवसर आता है जब हानि की परिस्थिति में हम दूसरे को दोषी ठहराने का प्रयत्न करते हैं तो परिवार में सामञ्जस्य नहीं रह सकता। लाभ को अपने पक्ष में और हानि को दूसरे के पक्ष में डालने का मनुष्य का स्वभाव है। यह बात घर या समाज सब स्थानों पर घटित होती है। इसलिये वेद कहता है- लाभ-अलाभ में समान सहयोगी बनें, यही सूत्र परिवार में सामञ्जस्य रखने का है।

इस मन्त्र में मनुष्य के मनोविज्ञान की ओर भी इंगित किया गया है, परिवार या समाज में विघटन या विभाजन का प्रमुख कारण है, अपनी भावनाओं पर बुद्धि का नियन्त्रण न होना। पशु भी वही व्यवहार करता है, मनुष्य भी वही व्यवहार करता है, जब वह भावनाओं में बहता है उस समय संवेगों से प्रेरित होकर कार्य करता है। इसी कारण इस आचरण को पाशविक वृत्ति कहा गया है। जब संवेग के वशीभूत होकर मनुष्य का मन स्वार्थ व पक्षपात की ओर झुक जाता है, उस समय उस पर बुद्धि का अंकुश रहना आवश्यक है। पशु तो दण्ड से ठीक मार्ग पर चलता है, मनुष्य पशु नहीं है, उसका सन्मार्ग पर चलना बुद्धि के अंकुश से ही सभव है। मनुष्य को साधु-संगति, सज्जनों का उपदेश, शास्त्र का चिन्तन, ईश्वर-भक्ति, स्वार्थ और पक्षपात छोड़ने में समर्थ बनाती है।

आदमी के मन में थोड़ी सी वस्तु या थोड़े से धन का लोभ विपरीत मार्ग पर चलने के लिए विवश करता है। हानि का भय उसे उल्टा चलने के लिये प्रेरित करता है। यदि मनुष्य इन परिस्थितियों पर भावनाओं में न बहकर बुद्धि से निर्णय करे तो वह अनुचित कार्य करने से बच जाता है। सभावित हानि से परिवार, समाज का हित जब उसे बड़ा लगेगा तब वह स्वार्थ के जाल में फंसने से बच जायेगा। हानि का भय तभी तक होता है, जब तक मनुष्य हानि को बड़ा समझता है। जैसे ही मनुष्य हानि को सहने के लिए अपने को तैयार कर लेता है, वह आत्मविश्वास से भर जाता है। उसे कोई भय नहीं लगता, उसकी उदारता से उसे संगठन या परिवार के सदस्यों का सबल मिल जाता है और बहुत बार मनुष्य पर ईश्वर की ऐसी कृपा होती है कि जिस विपत्ति से या सभावित हानि से वह भयभीत हो रहा था, वह विपत्ति उस पर आती ही नहीं है।

इस शद को समझने से व्यक्ति को दो लाभ होते हैं। यदि पक्षपात या स्वार्थ का अवसर आता है तो विचार से मनुष्य उससे अपने को रोक लेता है। जब हानि के भय से अनुचित करना चाहता है तब विचार उसके अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न कर देता है, वह ईश्वर की कृपा का पात्र बन जाता है। इसलिए मन्त्र में परिवार को सुखी और स्नेहसिक्त बनाने की भावना है- मनुष्य को हानि-लाभ में सबका भागीदार बनना चाहिए।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-15

AUGUST 26, 2015 LEAVE A COMMENT

इस मन्त्र के प्रथम तीन शदों में परिवार को साथ रखने के उपायों को बताया गया है। प्रथम हृदय की विशालता, दूसरा एक-दूसरे की निकटता और तीसरा एक साथ पुरुषार्थ करना। इसके लिए अन्तश्चित्तिनो, सधुराश्चरन्त तथा संदाधयन्तः पदों का प्रयोग किया गया। ऐसा करने से परिवार के सदस्य कभी पृथक् नहीं होंगे। उनके मनों में द्वेषभाव नहीं आयेगा। इसलिए मन्त्र में कहा गया 'मावियौष्ट' परस्पर द्वेषभाव मत रखो। हमारा हृदय विशाल होगा, हमारे अन्दर उदारता होगी। एक-साथ रहने का भाव मन में रहेगा। पुरुषार्थ करने में सभी तत्पर होंगे तो निश्चय ही परिवार के सदस्यों में द्वेषभाव उत्पन्न नहीं होगा।

इससे आगे मन्त्र में कहा गया है- 'अन्योऽन्यस्मै वल्गुवदन्तः' अर्थात् एक-दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक बोलते हुए परिवार में परस्पर प्रेम और आदर का प्रकाश वाणी द्वारा ही होता है। वाणी हमारे भावों को पूर्ण रूप से दूसरे को संप्रेषित करती है। प्रायः समझा जाता है, क्या अन्तर पड़ता है। हम कुछ भी बोलें। हम चाहते हैं कुछ भी बोलने से सुनने वाले को वही समझ में आना चाहिए परन्तु ऐसा है नहीं, प्रत्येक शद, प्रत्येक ध्वनि अपना अर्थ और प्रभाव रखती है। हमारे शद और ध्वनियाँ ही हमारे अन्दर विद्यमान न्याय, दया, उदारता, शूरता आदि को प्रकाशित करती हैं। समाज में इसी को शिष्टाचार कहते हैं। सारे शिष्टाचार को परिभाषित करना हो तो, वह परिभाषा है दूसरे को मान्यता देना, उसकी उपस्थिति का अनुभव कराना, उसके अस्तित्व को स्वीकृति देना। शिष्टाचार थोड़े से शद और थोड़ी सी क्रिया से अनुभव हो जाता है।

एक व्यक्ति श्री और जी से प्रसन्न हो जाता है, अरे और अबे से रुष्ट हो जाता है। घर का बालक अच्छा है, यह अच्छापन शिक्षा, स्वास्थ्य, सुन्दरता आदि से नहीं आता, वह अच्छापन थोड़े से शदों के उपयोग से आता है। आजकल आधुनिक विद्यालयों के बालक अच्छे कहलाते हैं तो उनमें मुय बात शालीनता प्रकट करने वाले शदों का प्रयोग ही मुय है। जब कोई बच्चा आपको मिलता है। आप उसके घर के द्वार पर खड़े हैं और बालक पूछता है क्या है? आपको अच्छा नहीं लगता है परन्तु वही बालक अंकल आपको किससे मिलना है, सुनकर बड़ी प्रसन्नता होती है। ये शद हैं तो थोड़े से, परन्तु इनका प्रयोग प्रतिदिन अनेक बार करने का अवसर आता है। इसीलिए बच्चों को इन शदों का अयास कराने की आवश्यकता होती है। हमारे आचार्य जी ने एक घटना सुनाई थी, बहुत वर्ष पूर्व एक यात्रा के समय उन्होंने सन्तरे लिए, खाने लगे तो एक विदेशी महिला अपने बच्चे के साथ उसी डबे में यात्रा कर रही थी। बच्चा देखकर आचार्य जी ने माँ से पूछा- क्या वे बच्चे को सन्तरा दे सकते हैं? माँ ने कहा- दे दें। बालक सन्तरा लेकर जैसे ही खाने लगा, माँ ने बालक के गाल पर एक थप्पड़ मार दिया। आचार्य जी ने पूछा- मैंने आपसे पूछकर बालक को फल दिया है फिर आपने बालक को थप्पड़ क्यों मारा? उस माँ ने कहा- आपने मुझ से पूछकर दिया है, इसलिये नहीं मारा। थप्पड़ मारने का कारण बालक की अशिष्टता है। बालक को आपसे फल लेने के बाद आपका धन्यवाद करना चाहिए था, परन्तु बालक ने ऐसा नहीं किया, इसी कारण बालक को थप्पड़ मारा है।

छोटे शद हैं श्रीमान्, कृपया, क्षमा करें, धन्यवाद। इन शदों का उपयोग हिन्दी में, उर्दू में, अंग्रेजी में, किसी भी भाषा में करें, ये शद आपको अनुकूल प्रतिक्रिया देंगे। अंग्रेजी में प्लीज़, थैंक्यू, सॉरी, सर जैसे शद बच्चे, बालक, युवा को सय बनने का प्रमाण-पत्र दे देते हैं। जब शद बोलने वाले के हृदय से निकलते हैं तो वे शद सुनकर अगले के मन में भी वे ही भाव जागते हैं,

अतः यह एक सहज प्राकृतिक सबन्ध है, जो शदों से प्रकाशित होता है। पशु-पक्षियों को अपने भाव प्रकट करने के लिये शद तो नहीं है परन्तु इसके लिए उन्हें अपनी आकृति के भाव और शारीरिक चेष्टाओं से अपने भाव व्यक्त करने पड़ते हैं। परन्तु मनुष्य को यह विशेषता प्राप्त है कि वह शरीर के हाव-भाव के साथ अपने शदों से भी अपने भावों-विचारों को सप्रेषित कर सकता है। मनुष्य में अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करना, मनुष्य की इच्छा रहती है तो वेद का सन्देश है- जहाँ अन्य व्यवहार हम अनुकूलता से करते हैं, वहीं पर हमारी वाणी भी हमारे व्यवहार को अनुकूल बनाने वाली हो। अतः कहा गया है- अन्योऽन्यस्मै वल्गुवदन्तः। हमारा घर सदा एक-दूसरे से प्रेम करने वाला ही नहीं, प्रेम से बोलने वाला भी हो।

कवि और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

JULY 28, 2015 4 COMMENTS

।। ओ३म ।।

अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा।
हव्यवावाड्जुह्वास्यः।।

(ऋग्वेद 1.12.6)

प्रथमाश्रम में अपने में ज्ञान को समिद्ध करते हुए हम द्वितीयाश्रम में उत्तम गृहपति बने। वानप्रस्थ बनकर यज्ञो का वहन करते हुए तुरियाश्रम में ज्ञान का प्रसार करने वाले बने।

नमस्ते मित्रो – आज का विषय

कवि और कबीर का भेद – रामपाल के पाखंड का खंडन।

वेदो में प्रयुक्त कवि शब्द एक अलंकार है – किसी प्राणी का नाम नहीं, क्योंकि विद्याओ के सूक्ष्म तत्वों के द्रष्टा, को कवि कहते हैं – इस कारण ये अलंकार ऋषियों के लिए भी प्रयुक्त होता है और समस्त विद्या (वेदो का ज्ञान) देने वाला ईश्वर भी अलंकार रूप से कवि नाम पुकारा जा सकता है।

क्योंकि ये एक अलंकार है इससे किसी व्यक्ति प्राणी का नाम समझना एक भूल है – विसंगति है – मगर बहुत से रामपालिये चेले चपाटे अपनी मूर्खता में ये काम करने से भी बाज़ नहीं आते उन्हें कुछ शास्त्रोक्त प्रमाण दिए जाते हैं –

कवि शब्द की व्युत्पत्ति : कविः शब्द 'कु-शब्दे' (अदादि) धातु से 'अच इः' (उणादि 4.139) सूत्र से 'इः' प्रत्यय लगने से बनता है। इसकी निरुक्ति है :

'क्रांतदर्शनाः क्रांतप्रज्ञा वा विद्वांसः (ऋ० द० ऋ० भू०)

"कविः क्रांतदर्शनो भवति" (निरुक्त 12.13)

इस प्रकार विद्याओ के सूक्ष्म तत्वों का दृष्टा, बहुश्रुत ऋषि व्यक्ति कवि होता है।

इसे "अनुचान" भी इस प्रसंग में कहा है [2.129] ब्राह्मणो में भी कवि के इस अर्थ पर प्रकाश डाला है –

"ये वा अनूचानास्ते कवयः" (ऐ० 2.2)

"एते वै काव्यो यद्दश्यः" (श० 1.4.2.8)

"ये विद्वांसस्ते कवयः" (7.2.2.4)

शुश्रुवांसो वै कवयः (तै० 3.2.2.3)

अतः इन प्रमाणों से सिद्ध हुआ की वेदो में प्रयुक्त "कवि" शब्द एक अलंकार है – जहाँ जहाँ भी जिस जिस वेद मन्त्र में कवि शब्द प्रयुक्त हुआ है उसका अर्थ अलंकार से ही लेना उचित होगा, बाकी मूढ लोगो को बुद्धि तो खुद "कबीर" भी ना दे पाये देखिये कबीर ने अपने ग्रंथो में क्या लिखा है :

कबीर जी परमात्मा को सर्वव्यापक मानते हैं। कबीर जी के कुछ वचन देखे :

स्वयं संत कबीर दास जी ने भी ईश्वर को सर्वव्यापक माना है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 855)

कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥
सरब बिआपी = सर्वव्यापी
कबीर जी कह रहे हैं की हे मेरे परमात्मा तू सर्वव्यापी है।

तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी॥

तुम्हारे सामान कोई दयालु नहीं है, और मेरे सामान कोई पापी नहीं है।

कबीर जी ब्रह्म का अर्थ परमात्मा लेते है काल नहीं
कबीरा मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 1373)

ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥

सभी की उत्पत्ति ब्रह्म अर्थात ईश्वर से होती है। (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 324)

अब जब कबीर जी भी ईश्वर अर्थात ब्रह्म से सभी की उत्पत्ति मानते हैं ऐसा लिखते भी हैं तब ये रामपाल और उसके चेले कबीर जैसे संत की वाणी को झूठा क्यों सिद्ध करते फिरते हैं की कबीर परमात्मा हैं ?

क्या ये धूर्तता और ढोंग पाखंड नहीं ?

क्या कबीर जैसे संत की वाणी को दूषित करना और संत कबीर को ईश्वर कहना क्या संत कबीर के शब्दों और दोहो का अपमान नहीं ?

आशा है सभ्य समाज इस लेख के माध्यम से रामपालिये और उसके चेलो के पाखंड का विरोध करेंगे और बुद्धिमान व्यक्ति इस पोस्ट के माध्यम से अपने विचार रखेंगे।

लौटो वेदो की और।

नमस्ते

स्तुता मया वरदा वेदमाता-११

JUNE 21, 2015 LEAVE A COMMENT

येन देवा न वियन्ति नो च विद्वषते मिथः।

तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः।।

–अथर्व. ३.३०.४

मन्त्र में घर के बढ़ाने की बात है। यहाँ इसके लिए ब्रह्म शब्द कर प्रयोग किया गया है। ब्रह्म शब्द ईश्वर का भी वाचक है, क्योंकि वह सबसे बड़ा है। इसी प्रकार ज्ञान को भी ब्रह्म कहा जाता है। जो ज्ञान में सबसे बढ़कर है, उसे ब्रह्मा कहा गया है। इसी कारण संसार के प्रारम्भ में जो सबसे ज्ञानी पुरुष हुआ, उसका भी नाम ब्रह्मा है। इसके लिए उपनिषद् में कहा गया है, ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव। देवताओं में प्रथम ब्रह्मा हुआ। आज भी यज्ञ आदि कर्मों में जो अधिक जानकार होता है, उसे ही हम अपना मार्गदर्शक चुनते हैं। उसे ब्रह्मा बनाते हैं।

मन्त्र में घर को भी बड़ा बनाने की बात की गई है। मन्त्र कहता है- मैं तुम्हारे घर को बड़ा बनाना चाहता हूँ। घर बड़ा होता है, समृद्धि से। घर को समृद्ध करने का उपाय इस मन्त्र में बताया गया है। उपाय क्या हो सकता है? उपाय है संज्ञानम्। संज्ञान का शास्त्रीय अर्थ ज्ञान है, चेतना है। हम इसे सामान्य भाषा में कहें तो समझ कह सकते हैं। घर को बड़ा बनाने के लिए, सम्पन्न या समृद्ध बनाने के लिए घर में रहने वाले सदस्यों को समझदार बनना होगा। सभी सदस्य समझदार होंगे, तभी घर परिवार समृद्ध होगा। घर में सबका समझदार होना आवश्यक है। एक भी नासमझ व्यक्ति घर की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके रख देता है। घर में सबकी समझदारी से ही व्यवस्था बनी रह सकती है। आजकल समझदार का अर्थ चालाक या स्वार्थी भी हो जाता है। लोग कहते हैं- यह व्यक्ति बड़ा समझदार है, उसे अपना काम बनाना आता है। ऐसे शब्द श्रेष्ठ अर्थ को नहीं देते, इसलिये दुनियादार, समझदार, व्यावहारिक आदि शब्द सदा उचित और श्रेष्ठ अर्थ में ही प्रयोग में नहीं आते, परन्तु वेद में इस समझदारी की कसौटी भी दी है। वेद कहता है- समझदार देव होते हैं। मनुष्यों को समझदार बनने के लिए देवों के गुण अपने में धारण करने होंगे। देवों का देवत्व जिन गुणों से आता है, उसे देवों के कर्म से समझा जा सकता है। देवों का एक पर्यायवाची शब्द है- अनिमेष। ऐसा माना जाता है कि देवता लोग कभी पलक नहीं झपकाते। क्यों नहीं झपकाते, इसे समझाने के लिये पुराण में कथा आती है। देवताओं ने और असुरों ने मिलकर समुद्र

मन्थन किया। जो पहले मिला वह असुरों ने लिया, जो बाद में मिला वह देवताओं ने लिया। पहले मिलने वाली वस्तुओं में विष था, जिसे बाँटने के लिए कोई तैयार ही नहीं था, जो शिव के कण्ठ का अलंकरण बन गया। अन्त में अमृत का कलश निकला, जिस पर देवताओं ने अधिकार कर लिया। इसी अमृत के कारण देवता अमरता को प्राप्त हुए। असुर इस अमृत को पाने के लिए सतत संघर्षरत हैं, इस कारण देवताओं को अमृत की रक्षा के लिए सतत् जागना पड़ता है। वे इतने सावधान हैं कि पलक भी नहीं झपकाते। पलक झपकने की असावधानी भी उनसे अमृत कलश के छीने जाने का कारण बन सकती है। देवताओं के पास अमृत ही नहीं रहा तो देवत्व कैसे रहेगा? संस्कार विधि में बालक की दीर्घायु की कामना करते हुए जो मन्त्र पढ़े गये हैं, उनमें एक मन्त्र में कहा गया है- देवताओं की दीर्घायु का कारण अमृत है। उनके पास अमृत है, इसलिए वे दीर्घजीवी हैं- देवा आयुष्मन्तः ते अमृतेनायुष्मन्तः। अतः देव दीर्घजीवी अमृत से हैं। इसका अभिप्राय है कि जो मनुष्य समृद्ध होना चाहता है, उसे सावधान रहना होगा। सावधानी हटते ही दुर्घटना घटती है।

विवाह संस्कार में सप्तपदी कराते हुए चौथे कदम को मयोभवाय चतुष्पदी भव कहा है। यहाँ यह तो कह दिया, परन्तु कोई वस्तु नहीं बताई। अन्न के लिये पहला कदम, बल के लिये दूसरा, समृद्धि के लिये तीसरा, वैसे ही सुख के लिए चौथा। अब समझने की बात है कि समृद्धि के लिये जब तीसरा कदम कह दिया था तो चौथा कदम सुख के लिये कहने की क्या आवश्यकता थी? इससे पहले अन्न, बल और धन प्राप्त करने की बात कह चुका है, फिर पृथक् से सुख के लिये प्रयास करने की आवश्यकता कहाँ पड़ती है? परन्तु पृथक् कहने का अभिप्राय है, इन सब साधनों के होने के बाद भी घर-परिवार में सुख हो, यह आवश्यक नहीं है। भौतिक साधनों का अभाव कष्ट देता है, परन्तु वे मुख्य रूप से शरीर तक ही सीमित रहते हैं। उन कष्टों के रहते हुए भी मनुष्य सुखी रह सकता है, परन्तु साधनों के रहते सुख का होना आवश्यक नहीं। सुख मानसिक परिस्थिति है, जबकि सुविधा शारीरिक वस्तु के अभाव में शारीरिक श्रम बढ़ जाता है, इतना ही है। सुख पाने के लिए मनुष्य के मन में देवत्व के भाव जगाना आवश्यक है, अतः मन्त्र में देवत्व के बाधक भावों को दूर करने के लिए कहा गया है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१०

JUNE 7, 2015 LEAVE A COMMENT

मन्त्र में एक वाक्य आया है- वाचं वदतं भद्रया-वाणी सभी बोलते हैं, वाणी के प्रयोग दोनों हो सकते हैं। हानि के, लाभ के, मृदु के, कठोर के, सत्य के, असत्य के। कोयल की भाँति सभी की वाणी मीठी होती, सब एक-दूसरे के साथ मधुर वाणी का व्यवहार करते तो किसी को यह कहने की आवश्यकता ही नहीं होती कि मधुर वाणी बोलनी चाहिए। यदि ऐसा होता तो अच्छा नहीं होता, क्योंकि तब मेरा कोई अधिकार ही नहीं होता, मुझे मेरी इच्छा का प्रयोग करने का अवसर ही नहीं मिलता, विवेक की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। कोई दूसरे से अलग नहीं होता, कोई किसी से अच्छा तो किसी से बुरा भी नहीं होता। इस परिस्थिति में मेरे होने का अर्थ ही क्या होता? मेरी सत्ता मेरे अधिकार से प्रकट होती है, मेरा अधिकार मेरे अस्तित्व का प्रकाशक है।

जितना मुझे अच्छा करने का अधिकार है, उतना ही मुझे बुरा करने का अधिकार भी है। उसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता, इसी कारण उनके फल को भी मुझसे कोई अलग नहीं कर

सकता। यही कारण है कि मुझे मेरे कर्म का फल मिलता है, क्योंकि वे मेरे हैं, चाहे वे अच्छे हैं, चाहे वे बुरे। इसीलिए उपदेश देने की आवश्यकता पड़ती है। उपदेश से मेरे विवेक पर प्रभाव पड़ता है, मैं अपने विचार को बदल सकता हूँ। इसी प्रक्रिया को संकल्प- विकल्प कहा गया है। जब मनुष्य सोचता है कि मैं यह करूँगा तो मुझे लाभ होगा। मैं सोचता हूँ- मैं ऐसा करूँगा तो मेरी हानि होगी, मैं ऐसा नहीं करूँगा। यह मेरी दशा, मेरे निर्णय की भूमिका है। मैं निश्चय कर लेता हूँ, तब वह मेरा निर्णय होता है, उसका फल अच्छा या बुरा मेरा ही होता है।

वाणी भी मेरी है, मैं इसका अच्छा या बुरा कैसा भी उपयोग कर सकता हूँ। जब अच्छा उपयोग करता हूँ तो मुझे अच्छा फल मिलता है, बुरा उपयोग करता हूँ तो बुरा फल मिलता है। मुझे मेरी वाणी के अच्छे-बुरे का ज्ञान होना चाहिए। वेद कहता है- लाभ के लिए, पुण्य के लिये भद्र वाणी का प्रयोग करना चाहिए। भद्र का अर्थ शरीर के लिए, वर्तमान में लाभप्रद और मन, बुद्धि, आत्मा के लिए शान्तिप्रद होना है। यदि ऐसा नहीं तो केवल मधुर वाणी से भी कार्य चल सकता था। हम समझते हैं कि मीठा बोलना ही पर्याप्त है पर केवल मीठा नहीं, वह परिणाम में भी लाभप्रद होना चाहिए। इस मन्त्र भाग में बोलने वालों के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है, अर्थात् परिवार में सभी सदस्यों को एक-दूसरे के साथ कल्याण कारिणी वाणी का प्रयोग करना चाहिए। वाणी का प्रभाव ही व्यवहार को प्रभावित करता है। मनुष्य आदर से बोलता है तो उसे प्रत्युत्तर में अनुकूल ही उत्तर प्राप्त होता है। यदि कठोरता से, असभ्यता से बोलता है तो निकटस्थ व्यक्ति भी अपमान का अनुभव करता है।

वाणी के सम्बन्ध में महाभारत में एक शिक्षाप्रद प्रसंग आया है। युधिष्ठिर युद्ध भूमि में घायल होकर शिविर में चिकित्सा के लिये उपस्थित हुए हैं। अर्जुन को बड़े भाई के घायल होने का समाचार मिलता है, वह तत्काल युद्ध छोड़ भाई को देखने शिविर में पहुँचता है। युधिष्ठिर ने पूछा- क्या युद्ध जीत लिया? अर्जुन ने कहा- नहीं। युधिष्ठिर ने अर्जुन के गाण्डिव को धिक्कार कह दिया। अर्जुन को क्रोध आया, उसने अपने बड़े भाई को मारने के लिए तलवार उठा ली। अर्जुन ने कहा- मेरी प्रतिज्ञा है कि जो गाण्डिव को धिक्कारेगा, उसके प्राण हरण करूँगा। श्री कृष्ण ने समझाया- मारना केवल तलवार से नहीं होता, बड़े भाई को 'तू' कह दे तो भी वह मर जायेगा। अर्जुन ने कह तो दिया, परन्तु फिर सोचने लगा कि उसने बड़े भाई का अपमान किया है। उसने कहा- अब इस अपराध के लिए मैं मरूँगा। श्री कृष्ण ने कहा- क्यों मरते हो? मरना भी कई प्रकार का होता है। मनुष्य के लिए आत्म-प्रशंसा भी मरने के समान है, तुम अपनी प्रशंसा स्वयं करो, मर जाओगे। मनुष्य वाणी से ही मरता है और वाणी से जीवन पाता है, अतः वेद ने कल्याणकारिणी वाणी के प्रयोग करने का आदेश दिया है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-९

MAY 20, 2015 1 COMMENT

सांमनस्य सूक्त के दूसरे मन्त्र में प्रथमशब्द था-अनुव्रत, जिसका अभिप्राय सन्तान का पिता के अनुकूल आचरण वाला होना है। इस मन्त्र में घर की सुख-शान्ति के लिए परिवार के सभी सदस्यों का सहज होना आवश्यक है। जहाँ सन्तान का पिता के अनुकूल आचरण वाला होना कहा है, वहीं पर सन्तान के माता के साथ कैसा व्यवहार हो, इसके लिये कहा गया है- माता

भवतु संमना अर्थात् सन्तान का मन भी माता के अनुसार होना चाहिए। सन्तान के व्यवहार होना कहा गया है। यहाँ शंका हो सकती है कि माता-पिता का व्यवहार क्यों नहीं सन्तान के अनुकूल होना चाहिए? इसका उत्तर है- सामान्य रूप से माता-पिता का व्यवहार सन्तान के साथ प्रेमयुक्त और हितकारी होता ही है। व्यवहार के बनने-बिगड़ने की सम्भावना तो सन्तान के व्यवहार की है। घर में सन्तान के मन में यह भाव रहना आवश्यक है कि उनके माता-पिता, उनसे प्रेम करते हैं और उनका भला चाहते हैं। घर में बच्चों का मन अपने बड़े-छोटे भाई-बहनों के साथ होने वाले व्यवहार से प्रभावित होता रहता है। माता-पिता कभी छोटों को अधिक स्नेह करते दीखते हैं, तो कभी बड़ों को अधिक मह व देते हैं। इससे साथ के बच्चों में प्रतिकूल प्रभाव होने की सम्भावना सदा ही बनी रहती है, यही अतः सन्तानों का माता-पिता से और परस्पर सम्बन्ध ठीक बना रहे, यही इस मन्त्र का विशेष भाव है।

बच्चों के व्यवहार के सामान्य बने रहने का एक मह वपूर्ण बिन्दु है-पति-पत्नी के मध्य का व्यवहार। यही बच्चों के लिए आदर्श भी होता है और प्रेरक भी। माता-पिता जैसे परस्पर बोलते, व्यवहार करते हैं, वैसा ही बच्चे करते हैं, इसलिए मन्त्र में कहा गया है- जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु। अर्थात् पत्नी मधुर वाणी का व्यवहार करे। यदि परस्पर व्यवहार की भाषा कठोर होगी तो बच्चे भी वैसा ही सीखेंगे।

एक बार दिल्ली के बस अड्डे पर एक व्यक्ति अपना सामान एक बस से उतार कर दूसरी बस में ले जाना चाहता था। वह पहले कुछ सामान और अपनी तीन-चार साल की बच्ची को सामान के पास खड़ी कर पुनः शेष सामान व पत्नी को लेने बस की ओर बढ़ा, तो बच्ची ने अपनी बात कहते हुए पिता से कहा- पापा आपमें तो अक्ल ही नहीं है! यह बात इतने ऊँचे स्वर से कही गई थी कि पास खड़े यात्रियों का ध्यान उस पिता-पुत्री की ओर जाना स्वाभाविक था। बच्ची के पिता ने कुछ लज्जा का अनुभव करते हुए बच्ची को डाँटना चाहा तो मैंने उस व्यक्ति से कहा- भाई साहब, यह दोष बच्ची का नहीं है। आपकी पत्नी, आपको इतने मधुर सम्बोधन से पुकारती होगी, वही तो बच्ची कर रही है। आप उसे व्यर्थ ही डाँट रहे हैं। इसलिए बच्चों पर अच्छा प्रभाव डालने के लिए घर के वातावरण का अच्छा होना आवश्यक है।

मन्त्र में पत्नी को मधुमतीं वाचम्– मधुर वाणी बोलने के लिये कहा गया है, वहीं ऋषि दयानन्द संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण में इस मन्त्र का अर्थ करते हुए शान्तिवान् का अर्थ करते हैं- पति को भी पत्नी की बात शान्त भाव से सुननी चाहिए। सामान्य रूप से घर में एक ही बात बहुत बार कही-सुनी जाती है, इस कारण सुनने वाले को उससे आक्रोश आने लगता है। आक्रोश से सामने वाला भी आक्रोश में आ जाता है। जब कोई काम पत्नी या बच्चों के द्वारा बार-बार किया जाता है और घर के स्वामी को वह पसन्द नहीं है, तब आक्रोश, क्रोध, तनाव की स्थिति बनती जाती है।

घर में बच्चे भी अपने बारे में बार-बार टिप्पणियाँ सुनना पसन्द नहीं करते। माता-पिता इस बात पर ध्यान नहीं देते और बच्चों में प्रतिक्रिया होने लगती है। बच्चे या तो ऐसे माता-पिता से भयभीत होने लगते हैं, उनसे बचते हैं, उनसे संवाद स्थापित नहीं करना चाहते अथवा धृष्टता से उस कार्य को बार-बार करना चाहते हैं। ये दोनों ही परिस्थितियाँ घर के वातावरण को तनावपूर्ण बनाने के कारण बनती हैं। विशेष कर बच्चे अपने साथी या अतिथि के सामने डाँट

या टिप्पणी सुनना नहीं चाहते। माता-पिता कि इस बात पर बच्चों के मन में कुण्ठा बनने लगती है, अतः घरेलू परिस्थितियों को सहज सामान्य रखने की नितान्त आवश्यकता है। वेद जहाँ पत्नी के लिए मधुर वाणी बोलने की बात करता है, वहीं पति को पत्नी की बात शान्तिपूर्वक सुनने का निर्देश करता है।

विवाह संस्कार में भी घर के वातावरण को अच्छा रखने के लिए सुनने का निर्देश दिया गया है- मम वाचं एकमना जुषस्व। यह मन्त्र दोनों द्वारा बोला जाता है। दोनों परस्पर कह रहे हैं- तुम मेरी बात को एकाग्र मन से सुनो। एकाग्रता से सुनने पर बात समझ में आती है, देर तक स्मरण रहती है और बात करने वाले के मन में सन्तुष्टि भी होती है, अतः मन्त्र में सन्तान को माता-पिता के अनुकूल आचरण वाला, पति-पत्नी को एक दूसरे की बात को शान्ति से सुनने वाला और मधुर वाणी बोलने वाला बनने के लिए कहा गया है।

सत्पात्र बन सकूँ- रामनिवास गुणग्राहक

MAY 17, 2015 LEAVE A COMMENT

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्नासुव ।।
भावार्थ- हे सकल जगत् के उत्पत्ति कत्र्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुव्र्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये और जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हंै, वह सब हमें प्राप्त कराइये । (ऋषि भाष्य)
यह मंत्र ऋषि दयानंद को बहुत प्रिय था, यजुर्वेद का भाष्य करते समय ऋषिवर ने इसे प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में आवश्यक रूप से लिखा है । स्तुति प्रार्थनोपासना के मंत्रों का प्रारम्भ भी इसी मंत्र के साथ किया है । स्तुति प्रार्थनोपासना के मंत्रों का शब्दार्थ करते समय महर्षि दयानन्द ने बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है । भाषा सरल होने के साथ-साथ बड़ी रोचक, प्रवाहपूर्ण एवं मंत्र के अर्थ को स्पष्ट कर देने वाली है । स्तुति प्रार्थनोपासना के इन आठ मंत्रों पर कई आर्य विद्वानों ने कलम उठाई है, उनमें से कुछ एक के विचारों को मैंने पढ़ा है । मैं जब दैनिक यज्ञ समाज में या कभी घर में करता हूँ तो सदैव ऋषिवर के अर्थ सहित मंत्र पाठ करता हूँ । पाठ करते समय औपचारिकता निभाना मुझे कभी ठीक नहीं लगा, मैं महर्षि पतंजलि के 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्' के पालन करने का प्रयास करता हूँ । ऐसा करते समय कई बार मेरे मन में आया कि महर्षि ने इन मंत्रों का जो अर्थ किया है, उस ऋषि के अर्थ को ऋषि की भावना के अनुरूप थोड़ा भाव-विस्तारपूर्वक लिखा जाए ताकि भक्त हृदय आर्य जन उसका पूरा आनन्द ले सकें । मैं अपनी इस सदिच्छा को लम्बे समय से टालता आ रहा था, लेकिन आज (4-1-2015) मेरे हृदय ने कहा कि किसी अच्छे विचार को कार्यरूप देने क¢ समय बहानेबाजी करना ऐसा दोष है जो अपराध की कोटि में रखा जाता है । यह हमारे स्वभाव का पतनशील अंग है, जनहित की भावना को निर्बल बनाता है। मनुष्य को पुण्यों की पूँजी से वंचित करता है । हृदय में उठने वाले हर प्रकार के सद्भावों का पल्लवन उनके क्रियान्वयन पर टिका होता है । सद्भाव-सद्विचार व सद्गुण को व्यवहार के रास्ते विस्तृत धरातल पर विचरने की स्वतन्त्रता नहीं मिलती, जब वो व्यवहार मंे प्रकट होने के लिए हृदय में प्रतीक्षा करते-करते थक जाते हैं, व्याकुल हो जाते हैं, उनका दम घुटता है तो वे निर्बल और निर्जीव होकर निढ़ाल हो जाते हैं । व्यवहार में व्यक्त होने क¢ लिए व्याकुल सद्भाव, सद्विचार व सद्गुण हमारी उपेक्षा व अनदेखी का शिकार होकर अन्दर ही दम तोड़ दें तो हमारा हृदय

दुर्भावों, दुर्विचारों व दुर्गुणों क¢ फूलने-फलने का उपजाऊ खेत बनकर रह जाता है और हम न चाहते हुए भी पतन क¢ गर्त में गिरने लगते ह्ंै । सुख-शान्ति, समृद्धि चाहने वालों का पहला कत्र्तव्य है कि वे अपने हृदय में उठने वाले सद्भाव, सद्विचार, सत्संकल्प एवं सद्गुण को व्यवहार का रूप देकर अपने स्वभाव का जीवन्त अंग बनाने में आलस्य प्रदान न करें । ध्यान रहे जो व्यक्ति अपने स्वयं क¢ हृदय में उठने वाले सद्विचारों, सद्भावों व सत्संकल्प का सम्मान नहीं कर सकता, वह जगत् व्यवहार में किसी दूसरे क¢ मानवीय सद्गुणों व सत्कर्माेंं क¢ साथ कभी भी न्याय नहीं कर सकेगा । मुझे मेरी अच्छाई नहीं सुहाती तो किसी दूसरे की अच्छाई क्यों सुहाएगी ?

लो क्या करने निकले थे, कहाँ जा निकले । चलो सीधे अपने विषय पर आते हैं- महर्षि दयानन्द ने मंत्रार्थ में जो कुछ कहा है हम स्तुति-प्रार्थना की शैली में ऋषि वाक्यों की अन्तर्यात्रा करने निकलंे और अपने मन-मस्तिष्क को इस पूरी यात्रा में साथ ही रखेंगे तो मन्त्रार्थ को आत्मसात करने में सुभीता रहेगा ।

'हे सकल जगत् क¢ उत्पत्तिकत्र्ता ! 'समग्र ऐश्वर्य युक्त' – ऋषि दयानन्द जी ने सविता का अर्थ जगत् निर्माता व सब ऐश्वर्य से युक्त किया है। 'सविता वै प्रसविता भवति' के अनुसार सविता का अर्थ बनाने-उत्पन्न करने वाला होता है और जिसने जो बनाया है, वह उसका स्वामी तो हो ही गया। जगत् में जो भी कुछ ऐश्वर्य है, अनमोल दिखने वाला धन है, वह सब परमात्मा ने ही बनाया है, तो वही उस सबका स्वामी ठहरा । इसके साथ ही जान लें कि सविता शब्द 'षु प्रेरणे' धातु से बनता है। निर्माण और प्रेरणा दोनों अर्थ सविता शब्द से लिये जा सकते ह्ंै । परमात्मा सबका निर्माण करने और सबको प्रेरित-संचालित करने वाला है । स्तुति प्रार्थनोपासना के छटे मंत्र में कहा है कि जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम आपको पुकारें, आपका आश्रय लेवें, उस-उसकी कामना हमारी पूर्ण होवे । अर्थात् हमें जीवन में जो कुछ चाहिए उसे पाने के लिए हमें परमात्मा से ही पुरुषार्थपूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए । इससे सिद्ध है कि परमात्मा इस संसार की हर वस्तु को बनाकर उसे अपनी अटल न्यायपूर्ण व्यवस्था के अनुरूप चलाता, प्रेरित करता है ।

'शुद्ध स्वरूप सब सुखों क¢ दाता परमेश्वर' । देव शब्द का यही अर्थ ऋषिवर ने यहाँ किया है । सामान्य भाषा में भी देने वाले को देव कहते हैं । क्या दुःख देने वाले को भी ? नहीं सुख या सुखद वस्तु देने वाले को ही देव कहा जाता है । परमात्मा भी सबके लिए सब सुखों का देने वाला है । यहाँ एक व्यावहारिक बात समझ लेनी चाहिए कि परमात्मा अपनी ओर से कभी किसी को सुख या सुखद वस्तुएँ नहीं देता । संसार में ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं, ऐसा महर्षि मनु-'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्म दानं विशिष्यते' कहते हैं । योगिराज श्री कृष्ण ज्ञान के बारे में लिखते हैं -'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' । अर्थात हमारे जीवन को ज्ञान ही सबसे अधिक पवित्र करने वाला है । जीवन की पवित्रता मानो सब सुखों व सुखद वस्तुओं को प्राप्त करने की पात्रता है । वह परमात्मा अपनी ओर से मनुष्य मात्र को ज्ञान-प्रेरणा निरन्तर देता रहता है । यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम प्रभु प्रदत्त प्रेरणा (ज्ञान) के अनुसार कर्म-व्यवहार करते हुए सब सुखों व सुखद वस्तुओं को प्राप्त करें। परमात्मा द्वारा सुख देना दूसरे प्रकार से भी सिद्ध होता है । हमारी कमाई हुई धन-सम्पत्ति को कोई दुष्ट व्यक्ति छीन या चुराकर ले जाए तो उस चोर को जितना दोषी मानते हैं उससे कहीं अधिक दोषी शासक व शासक की व्यवस्था को भी मानते ह्ंै । शासक की न्याय व्यवस्था अगर हमारी चुराई व खोई चीज को हमें दुबारा दिला दे तो हम उसका धन्यवाद अवश्य करते हैं। ठीक इसी प्रकार से अगर हमारे शुभ कर्माेंं का यथायोग्य फल ईश्वर की अटल, न्याय व्यवस्था से मिलता है

तो उसका दाता ईश्वर को ही मानना चाहिए ।
मंत्र में सविता और देव के अर्थ स्पष्ट हो जाने के बाद दो बातें शेष रह जाती हंै और वे दोनों बातें अत्यन्त स्पष्ट हैं- 'विश्वानि दुरितानि परासुव' अर्थात् सम्पूर्ण दुर्गुण, दुव्र्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और 'यद् भद्रं तन्नासुव' जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कराइये । मंत्र को और सरलता से समझने के लिए 'विश्वानि दुरितानि'- सम्पूर्ण दुर्गुण, दुव्र्यसन और दुःखों को-'परासुव' दूर करने या परे धकेलने की प्रार्थना को भली भाँति समझना होगा । यहाँ दुर्गुण और दुव्र्यसन से पूर्व सम्पूर्ण शब्द बहुत ही ध्यान देने योग्य है । हमारे जीवन में जितने भी दुर्गुण हैं, जितने भी दुव्र्यसन हैं उन सब को दूर करने की प्रार्थना या पुकार यह सिद्ध करती है कि हमारा जीवन पूर्णतः निर्मल और पवित्र होना चाहिए । एक भी दुर्गुण व दुव्र्यसन मेरे जीवन में शेष न रहे । अगर हम थोडा सा भी दुःख नहीं चाहते तो अपने अन्दर के सब दुर्गुणों को ढूँढ-ढूँढ कर निकाल फैंकंे । हमारे आन्तरिक दुर्गुणों के कारण हमारे व्यावहारिक जीवन में दुव्र्यसन उत्पन्न होते हैं और दोषों दुव्र्यसनों के परिणाम स्वरूप हमें दुःख भोगने पड़ते हंै । दुःख दूर करने की इच्छा है जिनकी वे दुव्र्यसनों को दूर भगायें । जो दुव्र्यसनों से मुक्त होना चाहते हैं वे अपने दुर्गुणों को समाप्त करने का संकल्प लें । हमारे आन्तरिक दुर्गुण ही हमारे दुव्र्यसनों अर्थात् दुराचरणों, दुष्प्रवृत्तियांे और दुष्कर्मों के बीज हैं और इन्हीं दुव्र्यसनों का परिणाम दुःख है । यह मंत्र हमारे दुःखों को दूर करने का वैदिक उपाय बताता है । आज हम अपने दुःखों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के मनमाने उपाय करते रहते हंै या किसी गुरु घण्टाल के मायाजाल में फँस कर विविध प्रकार के पाखण्ड पूर्ण कृत्य करते-कराते हैं । हमारे मनमाने उपायों या गुरु घण्टालों के तंत्र-मंत्र से दुःख दूर हो जाते तो संसार में एक भी दुःखी नहीं होता ।
मंत्र में दूसरी प्रार्थना है -'यद्् भद्रं तन्न आसुव'- अर्थात् जो कल्याण कारक गुण, कर्म और स्वभाव हंै वह सब हमको प्राप्त कराइये । जब हम अपने जीवन के सब दुर्गुण, दुव्र्यसन और दुःखों को दूर करने का सशक्त संकल्प लेकर अपनी आन्तरिक बुराइयों के विरुद्ध सफल संघर्ष छेड़ देते हैं, दुर्गुणों, दोषों व दुष्कर्मों के पतनशील प्रवाह में निर्जीव तिनके की तरह बहते रहने से आत्मबल पूर्वक मना कर देते हैं और बुराइयों के चक्रव्यूह से बच निकलते हैं तो हमारे सामने अपने हृदय को अच्छाइयों से भरते रहने का प्रश्न खड़ा होता है । यह तो सब जानते हैं कि संसार में ऐसा कुछ नहीं जो किसी प्रकार के गुणों से शून्य हो । ऐसे में हमारा हृदय-मन, बुिद्ध और चित्त आदि भी गुणहीन स्थिति में नहीं रह सकते । दुर्गुणों को दूर करने के आन्तरिक अभियान के साथ-साथ हमें कल्याण कारक गुणों का आह्वान करना होगा । दुर्गुणों को दूर करके उनके स्थान पर कल्याण कारक गुणों अर्थात् सद्गुणों को बसाना जीवन-निर्माण की आवश्यक प्रक्रिया है । किसी बर्तन में कोई अनावश्यक व अनुपयोगी चीज भरी हो तो जब तक उसमें किसी अच्छी व उपयोगी वस्तु को रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती तब तक हम उस अनुपयोगी चीज को निकाल फैंकने के बारे में प्रायः नहीं सोचते । जब हमें कोई मूल्यवान व उपयोगी वस्तु की आवश्यकता अनुभव होती है तो हम उसे पाने के प्रयास करते हैं । पाने के प्रयास करने से पूर्व बुद्धिमान व्यक्ति उसे सुरक्षित रखने के बारे में सोचता है तो उसे लगता है कि यह जो अनावश्यक चीज इस बर्तन में रखी है, उसे निकाल फैंको और इस बर्तन को स्वच्छ करके उपयोगी वस्तु को इसमें रख दो ।
यही स्थिति मानव के जीवन की है । सांसारिक विषय वासना व परस्पर के राग-द्वेष पूर्ण जीवन जीने वाले को जब किसी सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय या सत्संग से यह पता चलता है कि मेरा हृदय जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य का कबाड बनकर रह गया है, मेरे जीवन में

आलस्य, प्रमाद, दीर्घसूत्रता आदि दोष निरन्तर बिगाड़ पैदा कर रहे हैं, ये मुझे सुख-शान्ति, समृद्धि और सन्तुष्टि नहीं दे सकते । ये मेरे जीवन को सफल और सार्थक बनाने में उपयोगी नहीं । यह ज्ञान स्वाध्याय व सत्संग के बिना नहीं होता । अधिकांश लोगों को लम्बे समय तक सत्संग स्वाध्याय करते रहने पर भी यह ज्ञान नहीं होता, लेकिन जिन विवेकशील सज्जनों को यह ज्ञान हो जाता है तो उन्हें कल्याण कारक गुण, कर्म और स्वभाव की आवश्यकता अनुभव होने लगती है । जब उन्हें सद्गुणों की आवश्यकता अनुभव होती है तो उन्हें लगता है कि मेरे हृदय में तो दुर्गुण जड़ें जमाये बैठे हैं । जीवन को अच्छा, सुखी और सन्तुष्ट बनाने की प्रबल इच्छा जब तक हृदय में उठ खडी नहीं होती, तब तक हर मनुष्य को अपने हृदय में भरा पड़ा काम-क्रोध आदि दुर्गुणों का कूड़ा-कबाड़ भी काम चलाऊ अच्छा लगता है । जैसे ही उसके मन-मस्तिष्क में कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थों की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है, और वह उन्हें पाने के लिए लालायित होने लगता है, वैसे ही उसे अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनुपयोगी और अनावश्यक ही नहीं लगते, बल्कि काँटे की तरह चुभने लगते हैं । इस अवस्था में आकर वह 'विश्वानि दुरितानि परासुव' और 'यद् भद्रं तन्न आ सुव' की पुकार करने लगता है । इस अवस्था में सच्चे हृदय से की गई ऐसी प्रार्थना, पुकार ही परमात्मा के निकट सफल होती है ।

''यद् भद्रं तन्न आ सुव'' का जो अर्थ ऋषि दयानन्द ने किया है, वह बहुत ही चमत्कार पूर्ण एवं जीवन-निर्माण की अन्तःक्रिया को सन्तुलित-सम्यक् ढंग से प्रकट करता है । ऋषि लिखते हैं- 'जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमें प्राप्त कराइये ।' कल्याण करने वाले गुण, कर्म और स्वभाव की क्रमबद्धता पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है । सुखी, शान्त व आनन्दपूर्ण जीवन के तीन घटक आन्तरिक हैं और पदार्थ बाहरी हैं । कल्याणकारक घटकों में गुण, कर्म और स्वभाव एक पात्रता है और पदार्थ उसमें रखी जाने वाली सामग्री । जिसने तप-साधना से अपने गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याण कारक बना लिया परमात्मा उसके लिए कल्याणकारक पदार्थों की प्राप्ति सरल और सहज बना देते हैं । जो अपने गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याणकारक बनाने के लिए तप नहीं करते, स्वयं को सद्गुण सम्पन्न सदाचारी एवं सुख का सत्पात्र बनाये बिना ही जो कल्याणकारक सुखद पदार्थों को छल-बल या कल से हथिया लेते हैं, ऐसे अभिशप्त लोगों के हाथ लगे कल्याण कारक पदार्थ कभी उनको सच्चा सुख नहीं दे पाते । सीधे शब्दों में कहें तो गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याणकारी बनाये बिना हम कल्याणकारी पदार्थों का सच्चा सदुपयोग नहीं कर सकते । बुद्धिमान लोग काँटों का सदुपयोग बाड़ लगाकर फलों व फसलों की सुरक्षा के रूप में करते हैं दूसरी ओर कुछ मूर्ख लोगों ने पाकिस्तान में पंजाब के गवर्नर के हत्यारे आतंकियों पर गुलाब के फूलों की वर्षा करके भी विश्व के मानवतावादी जन समुदाय के बीच स्वयं को कलंकित कर लिया ।

''यद् भद्रं तन्न आ सुव'' की अन्तिम लेकिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय वस्तु को रखना चाहते हैं । जो सच्चे अर्थों में सच्चे हृदय से अपना जीवन सुखी व श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं, उनके लिए ऋषि दयानन्द के शब्दों -'कल्याण कारक गुण, कर्म और स्वभाव' को समझ लेना बहुत ही आवश्यक है । जब हमारे कल्याणकारक गुण हमारे कर्मों के माध्यम से सजीव होकर हमारे स्वभाव का अंग बन जाते हैं, तब जाकर हमारा जीवन कल्याणकारक पदार्थों को पाने का पात्र बन पाता है । आज के मानव की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अपने अन्दर की ढ़ेर सारी अच्छाइयों को अपने कर्मों-व्यवहार में उतारने से ड़रता है । जब तक यह डर हमारे जीवन में डेरा डाले रहेगा, तब तक हर सच्चाई और अच्छाई मानव के संकीर्ण स्वार्थ

के भार तले दबकर दम तोड़ती रहेगी । पाठक ध्यान रखें कि परमात्मा ने हमारे कल्याण को सरल और सहज बनाने के लिए हमारे हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा स्वाभाविक रूप से प्रदान की है । प्रत्येक मानव का हृदय सदैव सत्य के प्रति श्रद्धालु रहता है, आकर्षित रहता है । असत्य मानव के हृदय को कभी अच्छा नहीं लगता । असत्य मानव के हृदय में सदैव काँटे की तरह खटकता रहता है । मानव-स्वभाव की विचित्रता भी बड़ी अनौखी है । यह सच है कि सरल चित्त के व्यक्ति के हृदय में असत्य काँटे की तरह ही खटकता है, लेकिन जब वो स्वार्थ के खूंटे से बँधकर सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं दिखा पाता और निरन्तर इस असत्य रूपी काँटे से हृदय को लहूलुहान करता रहता है तो कुछ काल ऐसा ही होते रहने के बाद स्वार्थपूर्ति से मिलने वाले क्षणिक सुख के नशे में असत्य रूपी काँटे की इस तीखी चुभन को भी वह भाग्यहीन व्यक्ति ऐसे ही सहन करता रहता है जैसे एक शराबीे मद के लिए उसकी कड़वाहट व तीखेपन को सहन करता रहता है। कल्याण की कामना वाले व्यक्ति को सांसारिक स्वार्थ पूर्ति से ऊपर उठकर एक अक्षय सुख पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा । सुधी जन जानते हंै कि झूठ की जितनी शक्ति है, जितनी आयु है, उससे मिलने वाले सुख की शक्ति और आयु भी उतनी ही होगी उससे अधिक नहीं । झूठ सदैव सत्य से भयभीत रहता है, सत्य की एक किरण झूठ को धराशायी कर देती है ठीक इसी प्रकार से असत्य के बल पर सुख शान्ति पाने वाले व्यक्ति सत्य से भयभीत होकर जीवन जीते हंै, उनका सुख सत्य की सम्भावना देखकर ही भाग खड़ा होता है । क्या लाभ उस टूटे-फूटे, डरे-सहमे सुख का ? सत्य से डरकर उल्लू की तरह अँधेरे में कब तक ऐसे सुख को भोगकर सन्तुष्ट होते रहोगे ? वह सुख ही क्या जो अपने इष्ट मित्रों व परिजनों के साथ मिल कर खुले में सार्वजनिक रूप से न भोगा जा सके ? इसीलिए ऋषि दयानन्द कल्याणकारक गुणों को कर्माेंं में सजीव और साकार करके अपने स्वभाव का अंग बनाने का सांकेतिक प्रेरणा कर रहे हैं । गीता में श्री कृष्ण जी भी शब्दान्तर से यही सन्देश दे रहे हैं कि संसार में सब प्राणी अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव के अनुसार ही अपनी समस्त चेष्टाएँ (कर्म) करते हैं इसलिए स्वभाव को ही अच्छा (श्रेष्ठ) बनाओ अपनी बुराइयों को छिपाकर अच्छा दिखने से क्या लाभ ? स्वभाव को श्रेष्ठ बनाने-सुधारने का सच्चा और सरल रास्ता ऋषि दयानन्द बता रहे हैं कि अपने हृदय में सोये पड़े हुए अपने सद्गुणों को कर्माेंं में उतारिये । हम जब निरन्तर अपने सद्गुणों को कर्मों का सहारा देते रहेंगे तो एक दिन हमारे सद्गुण हमारे स्वभाव का अंग बना जाएँगें । जब हम अपने सद्गुणों को अपने कर्मों के द्वारा अपने स्वभाव का अंग बना लेंगे तब इस संसार के समस्त कल्याण कारक पदार्थों को प्राप्त करने के अधिकारी-पात्र बन जाएँगे । दुर्गुणों, दुव्र्यसनों और दुःखों से निकल कर कल्याणकारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थों को प्राप्त करने की अन्तर्यात्रा को मंत्रानुसार ऋषिवर ने जिस रूप में रखी और वह जैसी मेरी समझ में आई वैसी मैंने सच्चे हृदय से, सुधी जन के कल्याण की कामना से प्रकट कर दी । आशा है अध्यात्म पथ के पथिक इससे लाभ उठाएँगे ।

रामनिवास गुणग्राहक
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास
निकट जसवन्त काॅलेज पुराना परिसर
रातानाडा, जोधपुर (राजस्थान)
सम्पर्कः- 07597894991

ओ३म् वह सबका स्वामी है। रामनिवास गुणग्राहक

MAY 16, 2015 LEAVE A COMMENT

ओं हिरण्य गर्भः समवत्रतताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स्दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विद्येम।।
जो स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं। जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था। जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था। सो इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुख स्वरूप, शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें। (ऋषि भाष्य)
परमात्मा स्वयं प्रकाश स्वरूप तो है ही साथ ही वह संसार के समस्त प्रकाश करने वाले सूर्य चन्द्रमा आदि लोकों को धारण भी कर रहा है। यजुर्वेद का बड़ा सर्वज्ञात मंत्र है- 'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्'। उपासक समाधि-अवस्था में परमात्मा को पाकर, उस न्यारे-प्यारे प्रभु का साक्षात्कार करके आनन्द विभोर होकर सहसा कह उठता है- अरे। मैंने पा लिया उसे, उस महान् पुरुष को, जो सारे ब्रह्माण्ड में सुखपूर्वक शयन करता हुआ सब भक्तजनों को सतत् सुख प्रदान कर रहा है। शरीर रूपी पुरी में शयन करने के कारण मुझ जीवात्मा को पुरुष कहा जाता है और वह परम् पुरुष इस अनन्त सी दिखने वाली ब्रह्माण्ड़ पुरी में शयन कर रहा है। आहा। कैसा है वह? आदित्य वर्ण है। चमक और प्रकाश के लिए हमारे सामने सूर्य से बढ़कर कोई उदाहरण है ही नहीं। वह प्रभु भी आदित्य वर्ण है, सूर्य के समान चमकीला है, प्रकाश स्वरूप है। सुना है कि सूर्य में भी कुछ स्थान प्रकाश रहित है तो क्या परमात्मा भी…….अरे नहीं रे। परमात्मा में तो जितने भी गुण हैं वे सब पूर्णता से हैं। वह परम् पुरुष होने के साथ ही पूर्ण पुरुष भी है। उसका स्वरूप कहीं भी किंचित् भी प्रकाश शून्य नहीं है, वह तमस् अर्थात् अज्ञान-अन्धकार से नितान्त परे है। वह तो पूर्ण प्रकाशस्वरूप है, उसके प्रकाश की तुलना या उपमा संसार के किसी प्रकाशमान पदार्थ से नहीं की जा सकती। ऋग्वेद में कहा है-'इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः आगात् चित्रः प्रकेतो' (१-११३-१), 'इदं ज्योतिषाम् श्रेष्ठं ज्योतिः'= संसार में प्रकाश करने वाले इन समस्त प्रकाशकों में वह परमात्मा अतीव प्रकाशस्वरूप है। उस परम् प्रकाश प्रभु को, चित्रः प्रकेतः आगात् = अद्भुत प्रज्ञा व पुरुषार्थसम्पन्न पुरुष ही प्राप्त कर सकता है। कठोपनिषद् का ऋषि भी उद्घोष कर रहा है कि सूर्य चन्द्रमा व विद्युत की चमक भी उसकी चमक, उसके प्रकाश के सामने कुछ नहीं, इस लोक-अग्नि की तो चर्चा ही क्या? वेद बता रहा है कि विलक्षण गुण, कर्म स्वभाव वाला, अद्भुत प्रज्ञा (बुद्धि) और पुरुषार्थ (कार्य-व्यवहार) वाला धर्मनिष्ठ विद्वान् ही उस परमप्रकाश स्वरूप प्रभु को प्राप्त कर सकता है। समाधि-प्राप्त साधक ही- 'वेदाहमेतं पुरूषं महान्तं' कह सकता है। उसी की आत्मज्योति तप-साधना के द्वारा इतनी सक्षम व समर्थ हो सकती है जो उस परम् ज्योति का साक्षात् कर सके।
निर्धन-अभावग्रस्त व्यक्ति को एकाएक अपार धनराशि मिल जाए तो वह उसे सम्भाल नहीं पाता हमारी आँखों को देखने के लिए प्रकाश चाहिए, वह प्रकाश कम होगा तो असुविधा होगी लेकिन बहुत अधिक हो तो आँखें चुँधिया जाती हैं। बिजली चमकती है तो हमारी आँखें स्वतः बन्द हो जाती है। ज्येष्ठ मास में दोपहर एक बजे कड़क-तेज धूप हो तो प्रायः सभी को धूप के काले चश्मे का सहारा लेना पड़ता है। स्पष्ट है कि हमारी सामथ्र्य जितनी होगी हम उतने ही किसी गुण या वस्तु का लाभ उठा सकते हैं। इसीलिए वेद बताता है कि उस परम्

प्रकाशस्वरूप प्रभु को अद्भुत गुण सम्पन्न साधक जो तप-साधना के द्वारा अपना सामथ्र्य उतना बढ़ा लेते हंै, वे ही प्राप्त कर सकते हैं। तप के बारे में ऋषि कहते हैं- 'कायेन्द्रिय सिद्धिऽशुद्धि क्षयात् तपसः' (यो.२-५३) शरीर व इन्द्रियों की अशुद्धियों को नष्ट करके इन्हें साधना के योग्य बनाना ही तप है। 'तपति दुःखी भवति, तप्यते समर्थो वा भवति येन तत् तपः' अर्थात तप करने वाला प्रथम तप के कारण दुःखी होता है और आगे चलकर वह इस तप से प्रभु प्राप्ति का सामथ्र्य तक पा लेता है। प्रसंगवश अत्यन्त उपयोगी समझते हुए यहाँ तप का स्वरूप भी बतना उपयोगी रहेगा क्योंकि तप के बारे में हमारे देश में बहुत भ्रान्तियाँ पनप रही हैं। आज हम किसी भी जटाधारी, राख लपेटे हुए निरक्षर भट्टाचार्य पाखण्ड़ी को देखकर उसे तपस्वी समझ बैठते हैं और उसकी सेवा को धर्म मानते हैं। हमारे ऋषि लिखते हैं- 'सत्यं तपो दमस्तपः स्वाध्याय स्तपः (तैत्तÛ)' अर्थात् सत्य बोलना, सत्याचरण करना तप है। मन-इन्द्रियों का दमन करना तप है तथा वेद आदि सद्ग्रन्थों का श्रद्धापूर्वक नित्य पढ़ना तप है। महर्षि मनु के शब्दों में- 'वेदाभ्यासहि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते' (२-१४१) अर्थात् वेद को स्वीकार करना, वेदमंत्रों पर चिन्तन-मनन और विचार करना, वेदपाठ करना, वेदमंत्रों का जाप करना तथा वेद का प्रचार-प्रसार करना, उपदेश करना- इन सब को मिलाकर वेदाभ्यास कहते हंै और इन पाँचों कर्मों में लगे रहने को महर्षि मनु परम् तप मानते हैं। योगदर्शन सूत्र २-२३ के भाष्य में महर्षि व्यास लिखते हैं- 'तपो द्वन्द्व सहनम्'- अर्थात् अपने कत्र्तव्य कर्म को करते हुए सर्दी-गर्मी, धूप-छाँव, सुख-दुःख, मान-अपमान, लाभ-हानि, सफलता-असफलता, राग-द्वेष आदि से विचलित हुए बिना लगे रहना, कत्र्तव्य कर्म करते रहना ही तप कहलाता है। ऐसे तप करने वाले को ही परमात्मा के प्रकाश स्वरूप का साक्षात् होता है। स्वप्रकाश स्वरूप परमात्मा ही प्रकाश करने हारे सूर्य-चन्द्रमा आदि को धारण कर रहा है। इसी मंत्र में आगे चल कर 'सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां' बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा है- 'सो परमात्मा इस पृथ्वी और सूर्यादि को धारण कर रहा है। ऋषि ने स्तुति प्रार्थनोपासना के पाँचवे मंत्र में इस बात को दो बार कहा है। ऋषि ने स्तुति प्रार्थनोपासना के लिए जिन मंत्रों का चयन किया है, उनमें परमात्मा को इस सारे ब्रह्माण्ड़ का निर्माता, संचालक और स्वामी सिद्ध करने का भूरिशः प्रयास किया गया है। इन मंत्रों का अर्थ सहित नित्य पाठ करने से कम से कम मेरे मन-मस्तिष्क पर तो यह प्रभाव पड़ा है कि मैं स्वयं को सदैव परमात्मा की निगरानी और नियंत्रण में अनुभव करता हूँ और ऐसी अनुभूति मुझे निर्भय और निर्दोष बनाने में बहुत सहायक है। पाठक स्वस्थ चित्त से विचार करें कि संध्या में आये अघमर्षण मंत्रों में परमात्मा को इस विश्व ब्रह्माण्ड़ का रचयिता और नियन्ता ही सिद्ध किया है। परमात्मा ने अपने ऋत ज्ञान और सत्रूप प्रकृति से तप पूर्वक इस ब्रह्माण्ड़ को बनाया। उसी ने सूर्य को बनाया और उसी ने दिन रात आदि को बनाकर इस निर्मित ब्रह्माण्ड़ को स्वाभाविक रूप से अपने नियंत्रण में किया हुआ है। तीसरे मंत्र में केवल यही प्रकट किया है कि परमात्मा ने सूर्य चन्द्र आदि विश्व को जैसे अब बनाया है वैसे ही पूर्व कल्प में बनाया था और ऐसा ही आगामी कल्पों में बनाएगा। इन तीन मंत्रों को महर्षि ने अघमर्षण नाम दिया है। वेद कहता है- 'ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति' (ऋ 4.23.8) अर्थात् ऋत के धारण करने, ध्यान करने और चिन्तन-मनन करने से हमारी पाप वासनाएँ नष्ट होती हैं। अर्थात् परमात्मा द्वारा इस सृष्टि के बनाने और चलाने का वर्णन जहाँ भी आया है, जिन मंत्रों में ऐसा वर्णन है, उनके ध्यान और चिन्तन से हमारे अन्दर की पाप वृत्ति नष्ट होती है।

परिवार में समन्वय का अभाव ही दुःख का कारण है

MAY 10, 2015 LEAVE A COMMENT

स्तुता मया वरदा वेदमाता-७

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

मन्त्र कहता है परिवार में समन्वय का अभाव ही दुःख का कारण है। परिवार विविधता की दृष्टि से अपूर्व इकाई है। इसमें पति-पत्नी समान युवा होने पर भी स्त्री-पुरुष के भेद से नितान्त भिन्न हैं। बच्चे और बूढे एक-दूसरे आयुवर्ग से नितान्त भिन्न होते हैं। माता-पिता और बालक सम्बन्ध से सबसे निकट होने पर भी योग्यता सामर्थ्य से शून्य और शिखर का अन्तर रखते हैं। इन सबको मिलाकर एक इकाई बनती है जिसे हम परिवार के रूप में जानते हैं।

अधिक समय तक एक साथ समय बिताने वाली इस इकाई में विविधता के कारण समस्याओं की अधिकता तथा विविधता होना स्वाभाविक है। परिवार में विविधता एक-दूसरे के पूरक हैं। पूरक होना एक-दूसरे को एक-दूसरे की आवश्यकता बताता है। परिवार के सदस्य एक-दूसरे को इसीलिए चाहते हैं क्योंकि उनका कार्य परस्पर सहयोग से चलता है। इस सहयोग को व्यवस्थित करने के उपाय को व्रत नाम दिया गया है। व्रत शब्द से सभी व्यक्ति परिचित होते हैं परन्तु रूढ़िगत अर्थ ही सबके काम में आता है। व्रत से हम समझते हैं ऐसी प्रतिज्ञा जिसके पालन करने का कोई मनुष्य संकल्प करता है। कोई किसी वस्तु के त्याग का संकल्प करता है, कोई किसी वस्तु के स्वीकार करने की इच्छा करता है। व्रत व्यापक शब्द है, इसका अर्थ है चयन करके स्वीकार करना।

ब्रह्मचारी को व्रती कहते हैं, उसने बहुत सारे संकल्प लिये होते हैं

जब बालक को यज्ञोपवीत धारण कराते हैं तो व्रत का मन्त्र बोलकर आहुति दिलवाते हैं। अग्ने व्रतपते, चन्द्र व्रतपते, सूर्य व्रतपते, वायो व्रतपते और व्रतानां व्रतपते। व्रतों का पालन करने वाले पदार्थों का उदाहरण दिया गया है। संसार में अग्नि व्रतपति है, सूर्य-चन्द्र-वायु सभी तो व्रतपति हैं, व्रतों के स्वामी हैं। यहाँ व्रतपति कहने से नियमों के स्वामित्व का बोध होता है। ये नियम विवशता नहीं हैं, स्वीकृत हैं इनका पालन करना इनका स्वभाव है। स्वभाव बन गये नियम खण्डित नहीं होते। परमेश्वर को इस प्रसंग में व्रतानां व्रतपते कहा है अर्थात् संसार में जितने भी व्रत हो सकते हैं उन सब व्रतों का वह स्वामी है। जितने नियम उसके अपने हैं उतने नियम तो किसी ने भी नहीं धारण कर रखे हैं। इसी कारण वह समस्त संसार को नियम में चलाने का सामर्थ्य रखता है। परमेश्वर नित्य है, इसलिए उसके नियम भी नित्य हैं, परमेश्वर सर्वत्र है, इस कारण उसके नियम ज्ञानपूर्ण हैं, उसके नियमों में कहीं त्रुटि नहीं होती। वह सर्वशक्तिमान् है अतः उसके नियमों में पालन कराने का सामर्थ्य भी है।

व्रत चलने के लिए अनिवार्य है- जिस मार्ग पर आप चलना चाहते हैं, चलने की इच्छा करते हैं, तब आप अपने विचारों का विश्लेषण करके निर्णय की ओर ले चलते हैं। तब पहली स्थिति बनती है और आपका विचार संकल्प का रूप लेता है। जब भली प्रकार विचार करके निश्चय करते हैं, तब यह संकल्पित विचार स्थायी बन जाता है। यह विचार के स्थायी करने की घोषणा का नाम व्रत हो जाता है।

संकल्प व्रत बन जाता है, वह अपने नियम पर, अपने मार्ग पर चल पड़ता है। यह व्रत है। यह व्रत उसे नियम पर चलने का अधिकार देता है, उसे दीक्षा कहा गया है। दीक्षित होने का अर्थ है, उस व्रत के साथ उसे सब पहचानते हैं। वह पहचान उसे चलने का, आवश्यक वस्तु को प्राप्त करने का अधिकार देता है। यह यात्रा जब प्रयोजन की पूर्णता तक जाती है तब उस पूर्णता को, सफलता को दक्षिणा कहा जाता है। यह सफलता का आधार है। व्रत अर्थात् व्रत पर चलकर ही सफलता की पूर्णता तक पहुँचा जा सकता है। व्रत की मनुष्य को पूरे जीवन में आवश्यकता रहती है। मनुष्य का जीवन निरर्थक नहीं है, सप्रयोजन है, यदि प्रयोजन जीवन में है तो उसको प्राप्त करने का उपाय भी होना चाहिए, इसलिए व्रत की आवश्यकता होती है।

जैसे बालक के, छात्र के जीवन में व्रत की आवश्यकता है, उसी प्रकार गृहस्थ के जीवन में भी व्रत की आवश्यकता होती है। इसी कारण विवाह संस्कार में वर-वधु एक दूसरे के हृदय पर हाथ रखकर व्रतों के पालन करने का संकल्प लेते हैं, इतना ही नहीं वे अपने व्रतों का पालन भी करते हैं, वे अपने साथी के व्रत से भी परिचित होते हैं तभी तो कहते हैं- मैं तुम्हारे व्रतों को अपने हृदय में धारण करता हूँ। व्रत को समझ लें तो जीवन को चलाना और समझना सरल हो जायेगा।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-५

APRIL 26, 2015 LEAVE A COMMENT

वेद कहता है हमारे अन्दर एक दूसरे के प्रति चाहना हो। परस्पर अभिलाषा होनी चाहिए। यह जो मानसिक परिस्थित है, इसका मन में विचार होने की भूमिका बन चुकी है, मनुष्य के मन में जब द्वेष नहीं होता, सहानुभूति का भाव किसी के प्रति अनुकूलता का लक्षण है। इस भाव की अधिकता ही अपनेपन को जन्म देती है। अपनापन स्वाभाविकता को बताता है। यदि हमारे मन में किसी के प्रति द्वेष नहीं है तो हम उसके कष्ट को देखकर उसे यह कष्ट क्यों मिल रहा है, इस प्रकार का दुःख उसको नहीं मिलना चाहिए इस प्रकार का विचार मन में आता है। अपनापन दूसरे के प्रति मन में निकटता का भाव उत्पन्न करता है। इस निकटता से उत्पन्न प्रसन्नता का विचार प्रेम को प्रकाशित करता है। समाज में जब कोई हमारे साथ सद्भाव दिखाता है तो हमें भी उसके प्रति सद्भाव प्रदर्शित करने की इच्छा होती है। सद्भाव की अधिकता होने पर दूसरे से उसकी अपेक्षा नहीं रहती, हमें वस्तु अच्छी लगती है। दूसरे व्यक्ति में सम्भव है जो भाव हमारे मन में है, वह न हो, या उतना न हो तब भी हम अपना सम्पूर्ण अपनापन देते हैं तो दूसरे पक्ष से कई बार उसप्रकार की अपेक्षा भी नहीं रहती। वेद कहता है प्रेम की आकांक्षा दोनों ओर से होनी चाहिए। इसलिए मन्त्र कहता है अन्योऽन्यमभिहर्यत– परिवार के सदस्यों में एक दूसरे के हित की चिन्ता होनी चाहिए। हम समुदाय में रहते हुए यदि अपने लाभ या अपने हित की बात ही सोचते हैं, सदा अपनी ही चिन्ता करते हैं तो स्वाभाविक रूप से यह मान लिया जाता है अब आपकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

जब कोई असमर्थ होता है तो उसकी चिन्ता की जाती है, उसके चाहने वाले उसका ध्यान रखते हैं। जब हमें लगता है यह व्यक्ति स्वयं अपना भला कर सकता है, अपना हित साध सकता है तब किसी के लिए उसके विषय में सोचना प्राथमिकता नहीं रहती। और हाँ सब अपना अपना सोचेंगे तो फिर वहाँ कोई दूसरे के बारे में क्यों सोचेगा?

अपने बारे में सोचना अपना हित चाहना बुरी बात नहीं है। यहाँ अनुचित तब होता है जब मनुष्य अपने बारे में सोचता है तब उसे दूसरे की चिन्ता नहीं होती या वह दूसरे की उपेक्षा कर देता है। अपनी चिन्ता करते हुए केवल अपनी ही चिन्ता होती है, दूसरे की चिन्ता नितान्त नहीं होती हैं। जब हम अपने को मुख्य न मानकर दूसरे की चिन्ता करते हैं, ऐसा सभी करते हैं तो सब सब की चिन्ता कर सकते हैं। अपनी चिन्ता में सब सम्मिलित नहीं हो सकते परन्तु एक-एक औरों की चिन्ता करे तो सबको सबकी चिन्ता हो जाती है। यह लाभ सबमें प्रेम भाव होने पर होता है। परिवार में सबको अपने तुल्य हानि-लाभ, सुख-दुःख आदि की चिन्ता करनी चाहिए। इसी से सबमें परस्पर प्रीति बढ़ती है।

वेद मन्त्र में एक उपमा दी है वत्सं जातमिवाघ्न्या– जैसा एक गाय अपने सद्य जात बछड़े से करती है वेद में जो उपमायें दी गई वे स्वाभाविक हैं। संसार के पदार्थों में, व्यक्तियों के व्यवहार में सदा ही उन्हें देखा जा सकता है। सब उसे अनुभव कर सकते हैं। वेद कहता है हमें गति करनी चाहिए सूर्य और चन्द्र की भाँति। भगवान् ने सृष्टि कैसे बनाई, संसार की रचना कैसे की, वेद कहता है- यथापूर्वमकल्पयत् जैसे प्रत्येक सर्ग में ईश्वर सृष्टि की रचना करता है उसी प्रकार रचना करता रहेगा। यहाँ भी प्रेम कैसा करना चाहिए जैसे एक गाय अपने सद्य जात बछड़े से करती है। गाय बछड़े से प्रेम करती है परन्तु उसका प्रेम तभी तक रहता है जब तक उसका बछड़ा असमर्थ होता है, अपनी माँ पर निर्भर होता है। जैसे ही बछड़ा बड़ा हो जाता है, गाय में उसप्रकार का प्रेम नहीं रहता। यह उपमा सम्भवतः इस बात को स्पष्ट करने के लिए है जब कोई प्राणी, या मनुष्य समर्थ हो जाता है तब उसके साथ उसप्रकार का सहयोग अपेक्षित नहीं होता। इसलिए प्रेम में केवल भावना नहीं औचित्य भी अपेक्षित है।

इसप्रकार इस मन्त्र में अपने व्यवहार को सुधारने के लिए मनुष्य को, अपने परिवार को प्रसन्न व सुखी रखने के लिए परस्पर द्वेष का न होना, एक दूसरे के सुख-दुःख को स्वात्मवत् समझना। परस्पर प्रसन्नता के लिए यत्न करना और प्रत्येक सदस्य में परिवार के सदस्यों के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने वाला वार्तालाप और व्यवहार करते रहना चाहिए। इसलिए मन्त्र में-

अविद्वेषम् सहृदयम्, सामनस्यम् के साथ अभिहर्यत कहा है।

ऋषिः -हिरण्यस्तूप आङ्गिरस =

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।

अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् ।। 1.32.1

-महर्षि दयानंद के अनुसार; हे विद्वान् लोगो ! तुम लोग जैसे सूर्य के जिन प्रसिद्ध पराक्रमों को कहो उन को मैं भी शीघ्र कहूं |वह सब पदार्थों का छेदन करने वाली किरणों से -युक्त सूर्य

मेघ का हनन कर के वर्षाता है, उस मेघ के अवयव रूप जलों को नीचे ऊपर करता उसको पृथ्वी पर गिराता और उन मेघों के सकाश से नदियों को छिन्न भिन्न करके बहाता है |

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।

वाश्रा इव धेनव: स्यन्दमाना अंज: समुद्रमव जग्मुराप: ।। 1.32.2

-जैसे यह सूर्यलोक मेघमण्डल में रहने वाल गर्जन शील मेघ को मारता है, इस मेघ के लिए काटने के स्वभाव वाले किरणों को तोड़ता है. इस कर्म से बछड़ों को प्रीति पूर्वक चाहती हुई गौओं के समान चलते हुए प्रकट जल से पूर्ण समुद्र को नदियों के द्वारा जाते हैं.

Life Begins

वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत् सुतस्य ।

आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् । 1.32.3

-सशक्त वृषभ की तरह आचरण करता हुवा सूर्य्यलोक मेघ के समान इस उत्पन्न हुए जगत के व्यवहार में बर्ताने वाले पदार्थों की तीन अवस्थाओं उत्पत्ति, स्थिरता और विनाश की व्यवस्था बनाता है.(पृथ्वी पर वनस्पति और जीव उत्पन्न हो जाते हैं) और पृथ्वी पर सूर्य अपनी शस्त्ररूपी किरण समूह द्वारा और मेघों से वर्षा द्वारा पृथ्वी पर अपार समृद्धि का साधन बनता है. (यहां फोटोसिंथेसिस द्वारा वनस्पति और पर्यावरण उत्पत्ति का ज्ञान निहित है)

Ozone layer Formation

यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिना: प्रोत माया: ।

आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ।। 1.32.4

-प्रथम सब भिन्न भिन्न पदार्थों को आस्तित्व प्रदान करने के लिए सूर्य्यलोक में छोटे छोटे मेघों के मध्य में सूर्य का आवरण करने वाली बड़ी घटा उठती है. उन मेघों की अंधकार रूप घटाओं को अच्छे प्रकार हरता है तब विशेष किरण समूह से प्रात:काल और प्रकाश को प्रकट करता है.

Dinosaur Period

अहन् वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।

स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णाऽहि: शयत उपपृक् पृथिव्या: ।। 1.32.5

-यास्क /दयानंद के अनुसार ; बड़े बड़े मेघों और बिजलियों के वज्र से बड़े बड़े वृक्षादि को काट कर पृथ्वी पर धराशायी कर दिया और वे सूर्य के गुणों से मृतक वत पृथ्वी पर सोते हैं

Sedimentary Rock Formation

अयोध्देव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।

नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः ।। 1.32.6

-यास्क/ दयानंद के अनुसार; वे बड़े बड़े पदार्थ सूर्य के शत्रु मेघ से युद्ध न कर सकने वाले, सब पदार्थों के रस को लिए हुए सूर्य से पिस कर पर्वतों, पृथ्वी के बड़े बड़े टीलों को काटती हुई नदियों में बह चले.

अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान ।

वृष्णर्वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद् व्यस्तः ।। 1.32.7

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः ।

याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत् तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव ।। 1.32.8

नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।

उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद् दानुः शये सहवत्सा न धेनुः ।। 1.32.9

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् ।

वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम अशयदिन्द्रशत्रुः ।। 1.32.10

-यास्क के अनुसार ; कहीं न रुकने वाले अस्थावर जलों में मेघ निहित है.जब वे मेघ निम्नप्रदेश में विचरते हुए गाढ़ अंधकार फैला देते हैं.

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुध्दा आपः पणिनेव गावः ।

अपां बिलमपिहितं यदासीद वृत्रं जघन्वाँ अप तद् ववार ।। 1.32.11

-यास्क के अनुसार; मेघ में छिपाया हुवा रक्षक वृष्टि जल जो जल के निकलने का द्वार जो ढका हुआ था उसे विद्युत ने खोल दिया,एवं वृष्ट होने लगी.

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्वा प्रत्यहन् देव एकः ।

अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् ।। 1.32.12

नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद् ध्रादुनिं च ।

इन्द्रश्च यद् युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये ।। 1.32.13

अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत् ।

नव च यन् नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि ।। 1.32.14

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृंगिणो वज्रबाहुः ।

सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान् न नेमिः परि ता बभूव ।। 1.32.15

वेदों में प्रातः भ्रमण

DECEMBER 20, 2013 LEAVE A COMMENT

Morning Walk in Veda

14.2

स्योनाद् योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ ।

सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः ॥ AV 14.2.43

सुखप्रद शय्या से उठते हुए, आनंद चित्त से प्रेम मय हर्ष मनाते हुए, सुंदर आचरण से युक्त, श्रेष्ठ पुत्रादि संतान, उत्तम गौ, सुख सामग्री से युक्त घर में निवास करते हुए सुंदर प्रकाश युक्त प्रभात वेला का दीर्घायु के लिए सेवन करो.

प्रातः भ्रमण के लाभ

नवं वसानः सुरभिः सुवासा उदागां जीव उषसो विभातीः ।

आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि ॥ AV14.2.44

स्वच्छ नये जैसे आवास और परिधान कपड़े आदि के साथ स्वच्छ वायु में सांस लेने वाला मैं आलस्य जैसी बुरी आदतों से छुट कर, विशेष रूप से सुंदर लगने वाली प्रातः उषा काल में उठ कर अपने घर से निकल कर घूमने चल पड़ता हूं जैसे एक पक्षी अपने अण्डे में से निकल कर चल पड़ता है.

प्रातः भ्रमण के लाभ

शुम्भनी द्यावा पृथिवी अ न्तिसुम्ने महिव्रते ।

आपः सप्त सुस्रुवुदेवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ AV14.2.45

सुंदर प्रकृति ने मनुष्य को सुख देने का एक महाव्रत ले रखा है. उन जनों को जो जीवन में प्राकृतिक वातावरण के समीप रहते हैं सुख देने के लिए मानव शरीर में प्रवाहित होने वाले सात दैवीय जल तत्व हमारे दुःख रूपि रोगों से छुड़ाते हैं .

Elements of Nature have avowed to make life comfortable and healthy for the species. Particularly the seven fluids that move around the human anatomy are specifically helped by Nature. Modern science confirms that presence of naturally created ‘Schumann’ electromagnetic field and negative ions generated by Nature play very significant roles in maintaining good physical and mental health of human beings.

(प्रातः कालीन उषा प्रकृति के सेवन द्वारा सुख देने वाले वे मानव शरीर के सात जल तत्व अथर्व वेद के निम्न मंत्र में बताए गए हैं .

(को आस्मिन्नापो व्यदधाद् विषूवृतः सिन्धुसृत्याय जाताः।

तीव्रा अरुणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवांचीः पुरुषे तिरश्चीः ॥ AV 10.2.11

(भावार्थ) परमेश्वर ने मनुष्य में रस रक्तादि के रूप में (सप्तसिंधुओं) सात भिन्न भिन्न जलों को मानवशरीर में स्थापित किया है. वे अलग अलग प्रवाहित होते हैं . अतिशय रूप से – अलग अलग नदियों की तरह बहने के लिए उन का निर्माण गहरे लाल रंग के, ताम्बे के रंग के, धुएं के रंग इत्यादि के ये जल (रक्तादि) शरीर में ऊपर नीचे और तिरछे सब ओर आते जाते हैं.

ये सात जल तत्व आधुनिक शरीर शास्त्र के अनुसार निम्न बताए जाते हैं.

1. मस्तिष्क सुषुम्णा में प्रवाहित होने वाला रस (Cerebra –Spinal Fluid)

2. मुख लाला (Saliva)

3. पेट के पाचन रस (Digestive juices)

4. क्लोम ग्रन्थि रस जो पाचन में सहायक होते हैं (Pancreatic juices)

5. पित्त रस (liver Bile)

6. रक्त (Blood)

7. (Lymph)

ये सात रस मिल कर सप्त आपः = सप्त प्राणः – 5 ज्ञानेन्द्रियों, 1 मन और 1 बुद्धि का संचालन करते हैं.)

भ्रमण में पारस्परिक नमस्कार

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च ।

ये भूतस्य प्रचेतसस्तेभ्य इदमकरं नमः ॥ AV14.2.46

सूर्य इत्यादि प्राकृतिक देवताओं को, सब मिलने वाले मित्रों जनों को जो सम्पूर्ण भौतिक जगत को प्रस्तुत करते हैं हमारा नमन है. (भारतीय संस्कृति में प्रातः काल भ्रमण में जितने लोग मिलते हैं उन सब को यथायोग्य नमन करने की परम्परा इसी वेद मंत्र पर आधारित है)

COWS NUTRITION AND FOOD SECURITY IN VEDAS

DECEMBER 4, 2013 LEAVE A COMMENT

Cows Nutrition and Food Security

RV 6.54

ऋषिः -भारद्वाजो बार्हस्पत्यः **,** देवता पूषाः

1. सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥ ऋ**6.54.1**

Oh Pushan –Lord of Nutrition- lead us to the wisdom with clarity about our nutrition.

हे पूषन देवता, हमारी पोष्टिकता के लिये विस्तृत ज्ञान का उपदेश दो

2. समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँअभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ।। ऋ**6.54.2**

पूषन देवता के अनुसार गृहस्थों के लिए घरों मे गौपालन ही पौष्टिकता का अत्योत्तम साधन है.

It is the divine wisdom that a house cow is the perfect strategy for best of nutrition.

3. पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते ।नो अस्य व्यथते पविः ॥ ऋ **6.54.3**

The wheel of the chariot of nutrition by cows is never stuck in ground and comes to harm nor is there any trouble or suffering in its movement.(Cows go through a natural cycle of calving milk giving getting pregnant drying off and calving again. But no harm comes to the nutrition cycle and it does not suffer.)

गोपालन मं ग्याभन होने के कुछ समय पश्चात दूध की मात्रा कम हो सूख कर कर पुनः संतानोत्पत्ति का चक्र क्रम पूषन व्यवस्था में कोइ व्यवधान नहीं हैं.

4. यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ।। ऋ **6.54.4**

जो इस गोपालन यज्ञ में समर्पित भावना से गोसेवा करते हैं उन की पौष्टिकता में कभी कमी नहीं होती और उन की समृद्धि निश्चित होती है.

Those who dedicate themselves to taking care of their cows appropriately are blessed immensely with great riches.

5. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

हमें गोपालन का उत्तम ज्ञान और सुविधाएं प्राप्त हों जिस से हमारी पौष्टिकता और बल बना रहे

We pray to have the wisdom and means to protect and nurture our cows and horses appropriately to ensure good nutrition and strengths. ..

6. पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ।। ऋ**6.54.6**

यजमान की गोसेवा और स्तुति के फलस्वरूप गो दुग्ध से उत्तम शिक्षित सुंदर वाणी प्राप्त हो.

Dedicated well managed care of the cows provides excellent quality of milk and ensure amiable speech and temperaments.

7. माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे ।अथारिष्टाभिरा गहि ।। ऋ**6.54.7**

हमारी गौएं जो गोचर में स्वपोषन के लिए जाती हैं, किसी कुएं इत्यादि में गिर कर आहत न हों और सुरक्षितघर लौट आएं.

Cows as they go to pastures should be able to return safely without suffering any accidents there. (pastures should be well managed to ensure safety of the foraging cows.)

8. शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ।। ऋ **6.54.8**

विद्वत्जनों से पौष्टिकता के बारे मे ज्ञानप्राप्त करें जिस से निर्बलता दूर हो कर समृद्धि प्राप्त हो.

Learn the science of nutrition from experts to protect you from loss of vitality and have good life.

9. पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि।। ऋ**6.54.9**

उत्तम शिक्षा द्वारा उपयुक्त आहार के नियमों का सदैव पालन कना चाहिए.

By good learning and education, in the observance of good nutritional habits one should never be lax.

10. परि पूषा परस्ताध्दस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ।। ऋ **6.54.10**

जहां हम अपने दक्षता पूर्ण कर्म से पौष्टिकता के लिए उत्तम गोपालन और खाद्यान्न का प्रबंध करते हैं,वहां हमें साथ साथ जो पीछे कुछ त्रुटि के कारण अनिष्ट हो गया हो तो उसे भी सुधारने का कार्य करें.

On one hand while we exercise all our knowledge and skills in the management and production of excellent nutritive food products, on the other hand side by side we should also rectify if any mistakes have krept in our programs.

1. मातेति गामुपस्पृश्य जपन् गास्तु समश्नुते । वचोविदमिति त्वेतां जपन् वाचं समश्नुते ॥ ऋग्विधान 2.187

जिन की गोपालन द्वारा उत्तम गोवंश और गोपालने के परिणाम स्वरूप उत्तम वाणि की इच्छा हो वे गौ माता को स्पर्ष करते हुए 'माता रुद्राणाम, वचो विदम्' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **8.101** के **15, 16** मंत्र का जप करें

He who desires good Cows & obtain gracious speech by grace of cows should while touching the cow, utter Rigved Sookt 8.101.15-16 beginning with 'मातारुद्राणाम' & 'वचोविदम्' – Rigvidhaan 2.187

DAILY PROCEDURES & RITUALS IN GOSHALA

DECEMBER 4, 2013 LEAVE A COMMENT

Daily Procedures & Rituals in Goshala

वैदिक परम्परा में मानव जीवनोपयोगी उपदेश वेदों के आधार पर गृह्यसूत्रों में भिन्न भिन्न संस्कार में पाए जाते हैं. गौ को परिवार में एक सम्माननीय स्थान दिया जाता था. इस लिए गोपालन से सम्बंधित विषय भी गृह्यसूत्रों और विधान ग्रन्थों में मिलता है. इसी के आधार पर निम्न संकलन करने का प्रयास है.

In Vedas knowledge on all topics in general, is often found dispersed at various places. That Vedic knowledge is concisely collated and provided as Sanskars/Procedure in the Sutra literature. In this chapter the procedures connected with cows, available in Shraut Sutras & Grihya Sutras are being furnished below: गोपालन विधि गृह्य , अग्नि पुराण और कृषि पाराशर के अनुसार

1- Goyajna / Fumigation

2. Releasing cows for grazing in pastures.

3. Receiving cows on return, after grazing in Pastures

4. Putting the Nose Ring on Young Bull शूलगव: PA3.8.1 शांख्यायन श्रौत सूत्र , ऋग्वेद सूक्त 1.114

5. Releasing the selected Bull for servicing the herd.वृषोत्सर्ग PA3.9.1

6. After calving Procedure

7. Tattoo Marking the newborn calf, (with final object of breed improvements, and avoiding inbreeding)

8. Daily washing & drying on the string used for tying the calf & legs of cow during milking,(to emphasize the importance of Hygiene to control bacteria count)

9. Darsh Pourn Maseshthi (Training- evaluation of an integrated cow and agriculture system)

2.1.0.1 Fumigation Formulation (Daily Twice)

गन्धैरभ्युक्षणं गवां गन्धैरभ्युक्षणं गवाम्।। गो**0** गृ**0** सू**03-6-15**

Goshala should be kept clean. Twice both times morning &

evening fumigation should be carried out.

गोशाला को नित्य स्वच्छ रखते हुए, प्रातः और सायं दो बार सुगंधित सामग्री

से गो शाला मे अग्निहोत्र करना चाहिए.

अग्निपुराण **292(33)** में गोशाला के लिए उपयुक्त सामग्री का विधान इस

प्रकार से मिलता है.

2.1.0.2. बलप्रदा विषाणां स्यादगृहे नाशाय धूपिकः।

देवदारु, वचा, मांसी, गुग्गुल, हिंग्गु सर्षपाः। अ**0** पु**0 292 (33)**

Fumigate with Dev Daru देवदारु – (Himalyan Cedar) Vacha वच -(Sweet Flag Acorns Calamns) Jata Mansi जटामांसी (Indian Nard). Guggluगुग्गुल (Indian Bdellium), Hing हींग (Asafoetida) and Mustard सरसों के बीज (all to gather in powder form)का चूर्ण अग्नि में आहुति से पर्यावरण के सब रोगाणुओं को नष्ट करता है. to kill all air born & other organisms to cleanse the environment.

गो यज्ञ विषय (गौएं कहीं भी हों, घर पर अथवा गोचर में)

According to RigVidhaan –ऋग्विधानके अनुसार

(गौयज्ञ / गन्धैरभ्युक्षणं)

2.1.0.4. यस्तास्तु गोर्गोमयेन गुटिकानां सहस्रशः । हुत्वातां गामवाप्नोति घृतक्तानां हुताशने ॥ ऋग्विधान **2.34**

गोमय (गोबर)की गुटकियां कंडे बना कर गौ घृत के साथ अग्निहोत्र में सहस्रों आहुति देने से उत्तम गौएं प्राप्त होती हैं.

He obtains cows by offering thousands of cow dung balls anointed with ghee in to Agnihotra fire.

2.1.2.0.

समाधि मनस्तेन विन्दते नैव गुह्यति ।

मयोभूर्वात इति तु गवां स्वत्ययने जपेत् ॥ ऋग्विधान **4.104**

यही विषय पर अग्नि पुराण 259.94 में भी मिलता है;

'मयोभूर्वात इत्येद्गवां स्वत्ययनं परम् । शाम्बरीमिन्द्रजालं वा मायामेतेन वारयेत्
॥अग्निपुराण 259.94 जपस्यैष विधि : प्रोक्तो हुते ज्ञेयो विशेषतः अग्निपुराण 259.96ब

इस के अनुसार गौ के मध्य में जिन मन्त्रों के जप का विधान है, जैसे ऋग्वेद**10.169**
'मयोभूर्वात' RV10.169 का उन से यज्ञ अग्निहोत्र ही करना चाहिए

RV10.169

4 शबरो कक्षीवतो । गावः । त्रिष्टुप् ।

Rishi the seer of this sookt represents a person dedicated to constant hard work to create शबरो –strength and wealth- through कक्षीवत Industriousness using innovative technologies with involvement of Cows& Agriculture . This is the literal meaning of the name given to the seer – composer -of this verse in

Rig Veda.

Title of this verse –Sookt is "COW".

2.1.2.1 .मयोभूर्वातो अभि वातूस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् ।
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र मृळ ।। **RV10.169.1**

Verdant bliss causing winds may waft over the cows. Feed for the Cows should provide them body building energy and disease resistance. Cows should be provided with such good quality of water to drink that would be recommended as best potable water for humans. The soil of earth on which cows tread should be clean and sanitised free of infection and harmful organisms.

2.1.2.2. याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामग्निरिष्टया नामानि वेद ।

या अङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ।। **RV10.169.2**

Cows are classified as per their looks and traits. (Modern Veterinary sciences categorize them as 'phenotypes and genotypes') Wise men know the usefulness of different categories of various cows and utilise these specific qualities for various applications and usefulness.

Rains fed pastures provide rich and pleasing environments for cows.

2.1.2.3. या देवेषु तन्व**1**मैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि ।। **RV10.169.3**

Wise men are aware of the significance of cow's milk and cow enabled food for physical body health, nutrition and disease resistance. Wise men are aware of the intellect enhancing qualities of Cow's milk that enables human mind to explore the entire universe in all its majesty. Our experts (*Indras*) should work in specialised institutions for development of cows to make available house hold cows with excellent milk producing and prolonged calving qualities.

2.1.2.4. प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैः पितृभिः संविदानो ।

शिवाः सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सं सदेम ।। **RV 10.169.4**

Cows provide us with the continuity to join in growth of human society by building upon the attainments of our forefathers.

Cows have such great importance for our welfare and should be firmly established in our homes and institutions for human wellbeing.

2.1.3.0 'आ गावो' इती सूक्तेन गोष्ठगा लोकमातरः । उपतिष्ठेद्व्रन्तीश्च य इच्छेत्ता सदाक्षयाः ।। ऋग्विधान **2.112.** सदैव गौ सम्पदा की समृद्धि हेतु ऋग्वेदके सूक्त **6.28** 'आ गावो अग्नमुत' का नित्य पाठ

करना चाहिए अथवा यज्ञ अग्निहोत्र करना चाहिए

Whoever wishes always to have everlasting cows the mother of the world should worship them with Rig Ved Sookt 6.28, while they are at home in Goshala in cow pen or Roaming about (in pastures). As per **RigVidhan 2-112**

Rig Veda Book 6 Hymn 28 same as Atharv 4.21

गौः देवता, ऋषिः भरद्वाजो बार्हस्पत्य

2.1.3.1.आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रत्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे|
प्रजावतीः पुरुरूपा इह सयुरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ||

For our health, welfare let the cows of all ages sizes & progeny come and stay in our home.

मेरे गोष्ठ में गौएं आगई हैं और उन्होंने मेरा कल्याण किया है, इसी प्रकार आगे भी चर कर वे मेरे इस गोष्ठ में लौट आया करें. हमें सदैव आनंदित करती हुइ इस गोष्ठ में रहें. अनेक बछडे बछियां दे कर और भी नाना प्रकार से हमारी समृद्धि के साधन बनें.

2.1.3.2 इन्द्र यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद ददाति न स्वं मुषायति!

भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खल्ये नि ददाति देवयुम !! Prosperous cow owners, who simply share their services & knowledge in welfare of all, without withholding any portion selfishly for themselves, gradually grow in wealth & prosperity.

इस गोपालन के यज्ञ द्वारा वृषभ इंद्र के स्वरूप में अपने लिए कुछ भी ना छुपाते हुवे (गोपालक यजमान के लिए)) अनेक कल्याण दायक उत्पाद और शिक्षाप्रद ज्ञान रूपि धन की बार बार वृद्धि करते हैं. (गोकृषि आधारित) उपलब्धियां कभी क्षीण नहीं होती.

2.1.3.3 न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति |

देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित ताभिः सचते गोपतिः सह ||ऋ**6.28.3**अथर्व**4.21.3**

Those cows whose owners give to all & share all the bounties of the cows, protect them so they do not get hurt, get stolen or suffer at the hands of unfriendly forces, stays with blessings of cows for all his life.

उसे (गोकृषि से उत्पन्न सम्पन्नता को) कोई चुरा नहीं सकता, धूर्तता से (आंख में धूल झोंकने वाला) भी उस पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता. गौओं के स्वामी में इतनी बुद्धि होती है कि किसी प्रलोभन के वश भी वह अपनी सम्पन्नता को छोडना नहीं चाहता.

(यह आधुनिक विकास के नाम पर व्यापारी तथा स्वार्थी वर्ग द्वारा भूमि, गौ इत्यादि का स्वामित्व पाने के लिए धन के प्रलोभन से गोकृषि के स्वामी को अपनी जीवन शैली छुडाने के प्रसंग में हैं)

2.1.3 4. न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृत्रमुप यन्ति ता अभि |
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः || ऋ**6.28.4,** अथर्व **4.21.4**

These cows are not exposed to dusty battle field like or boisterous festivity like atmosphere, but they stroll fearlessly among peaceful environments. यह (गोकृषि आजीविका की) मानसिकता संस्कार युक्त , प्रशंसनीय और निर्भयता, आत्मविश्वास से युक्त होती है. इन संस्कारों को कुटिल हृदय वाले, संकीर्ण मानसिकता वाले , स्वार्थी बुद्धि विहीन जन प्राप्त नहीं करते. यह तो गौ के समीप विचरण करने की विशेष उपलब्धि है.

2.1.3.5. गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छन गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः |
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीदधृदा मनसा चिदिन्द्रम ||ऋ**6.28.5,** अथर्व **4.21.1**

Cow’s milk & its products are the first promoters of good motivation of temperament to have the blessings of a blissful life. Cows indeed are thus the very fortune & prosperity of man to become victorious like Indra.

गौएं जैसे प्रथम (अपने बछडे के) ऐश्वर्य के लिए दुग्ध प्रदान करती हैं वैसे ही गौओं द्वारा (दुग्ध और पङ्चगव्य से) धरती, वाणी, इंद्रियां स्वशरीर प्रकृति पर्यावरण और यजमान गोपालक परिवार पोषित हो कर, वश मे रहकर ऐसे सुशासित होते हैं जैसे इंद्र ही शासन कर रहा हो.

इस प्रकार हे बुद्धिमान जनों गौ स्वयम् में ही सम्पूर्ण ऐश्वर्य का साधन इंद्र है.

2.1.3.6.यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित कृणुथा सुप्रतीकम |

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद वो वय उच्यते सभासु ||ऋ**6.28.6,** अथर्व**4.21.6**

Oh Cows, sweeten our life and environments by your bounties, bring us health and strength physical and emotional. Weaken the ugly and unfriendly.

हे गौओ तुम दुर्बल को हृष्ट पुष्ट बना देती हो, तुम भद्दे को सुडौल बनाती हो, तुम वाणी में मधुरता स्थापित करके घर को कल्याणकारी और सुखप्रद बनाती हो, तुम्हारे वृद्धिकारक दुग्ध और अन्न का महत्व सभाओं में कहा जाता है.

2.1.3.7. प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः |
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः || ऋ**6.28.7,** अथर्व **4.21.7**

May cows feeding in good pasture, enjoying clean life giving drinking water, have great progeny of calves and not face harm by thieves   hostile elements and diseases.

उत्तम संतान (बछडे बछडियों और गोपालकों वाली) उत्तम घास वाले प्रदेश मे चमकती हुइ, उत्तम पेयस्थलों में शुद्धजल को पीती हुइ, व्यवस्था स्थापित हो. गौ पर अत्याचार, हिंसा करने वाला , चुराने वाला कोइ न हो. यह समाज और राजा का दायित्व है.

(भूमण्डल पर राजा रुद्र का प्रतिनिधि होता है , इस मंत्र में देश की समृद्धि के लिए गोरक्षा और उत्तम गौसम्वर्धन के लिए राजा के दायित्व का उपदेश है.)
2.1.3.8. उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम् |
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ||ऋ**6.28.8**

May cohabitation with good bulls be the source of vitality of these cows to render their bounties for us.

हर क्षेत्र में इंद्र अपना पौरुष इस परम ऐश्वर्य दायक वृषभ से ही प्राप्त करते हैं . पृथ्वी पर, वाणियों मे राजनीति मे हर क्षेत्र में वृषभ का महत्व सब के ध्यान में रहना चाहिये.

2.1.4.0 यस्य नष्टं भवेत्किञ्च दद्रव्यं गोर्द्विपदं धनम् । नस्येद्वाध्वनि यो मोहात्संपूषन् स जपेन्निशि ॥ ऋग्विधान **2.121.** जिस का गोधन**,** परिवार जन**,** सम्पत्ति आदि की हानि हो गयी हो वह 'सं पूषन' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **6.54** का रात्रि में जप करें

He whose possessions: a cow, a man, money be lost should mutter

the Rig Ved Sookt 6.54 beginning with सं पूषन् **at night .**

RV 6.54

2.1.4.1 सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥ ऋ**6.54.1**

Oh Pushan –Lord of Nutrition- lead us to the wisdom with clarity about our nutrition.

हे पूषन देवता, हमारी पोष्टिकता के लिये विस्तृत ज्ञान का उपदेश दो

2.1.4.2 समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँअभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ।। ऋ**6.54.2**

पूषन देवता के अनुसार गृहस्थों के लिए घरों मे गौपालन ही पौष्टिकता का सर्वोत्तम साधन है.

It is the divine wisdom that a house cow is the perfect strategy for best of nutrition.

2.1.4.3 पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते ।नो अस्य व्यथते पविः ॥ ऋ **6.54.3** गोपालन मं ग्याभन होने के कुछ समय पश्चात दूध की मात्रा कम हो सूख कर कर पुनः संतानोत्पत्ति का चक्र क्रम पूषन व्यवस्था में कोइ व्यवधान नहीं हैं.

The wheel of the chariot of nutrition by cows is never stuck in ground and comes to harm nor is there any trouble or suffering in its movement.(Cows go through a natural cycle of calving milk giving getting pregnant drying off and calving again. But no harm comes to the nutrition cycle and it does not suffer.)

2.1.4.4. यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ।। ऋ **6.54.4**

जो इस गोपालन यज्ञ में समर्पित भावना से गोसेवा करते हैं उन की पौष्टिकता में कभी कमी नहीं होती और उन की समृद्धि निश्चित होती है.

Those who dedicate themselves to taking care of their cows appropriately are blessed immensely with great riches.

2.1.4.5. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

हमें गोपालन का उत्तम ज्ञान विज्ञान और सुविधाएं प्राप्त हों जिस से हमारी पौष्टिकता और बल बना रहे

We pray to have the wisdom and means to protect and nurture our cows and horses appropriately to ensure good nutrition and strengths. ..

2.1.4.6. पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ।। ऋ**6.54.6**

यजमान की गोसेवा और स्तुति के फलस्वरूप गो दुग्ध से उत्तम शिक्षित सुंदर वाणी और संस्कार प्राप्त होते हैं .

Dedicated well managed care of the cows provides excellent quality of milk and ensure civilized amiable speech and temperaments.

2.1.4.7. माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे ।अथारिष्टाभिरा गहि ।। ऋ**6.54.7**

हमारी गौएं जो गोचर में स्वपोषन के लिए जाती हैं, किसी कुएं इत्यादि में गिर कर आहत न हों और सुरक्षित घर लौट आएं.(गोचर सुव्यवस्थित हों)

Cows as they go to pastures should be able to return safely without suffering any accidents there. (Pastures should be well managed to ensure safety of the foraging cows.)

2.1.4.8. शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ।। ऋ **6.54.8**

विद्वत्जनों से पौष्टिकता के बारे मे ज्ञानप्राप्त करें जिस से निर्बलता दूर हो कर समृद्धि प्राप्त हो.

Learn the science of nutrition from experts to protect you from loss of vitality and have good life.

2.1.4.9. पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि।। ऋ**6.54.9** उत्तम शिक्षा द्वारा उपयुक्त आहार के नियमों का सदैव पालन कना चाहिए. (आहार संयम)

By good learning and education, in the observance of good nutritional habits one should never be lax.

2.1.4.10. परि पूषा परस्ताध्दस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ।। ऋ **6.54.10**

जहां हम अपने दक्षता पूर्ण कर्म से पौष्टिकता के लिए उत्तम गोपालन और खाद्यान्न का प्रबंध करतेहैं,वहां हमें साथ साथ जो पीछे कुछ त्रुटि के कारण अनिष्ट हो गया हो तो उसे भी सुधारने का कार्य करें.

On one hand while we exercise all our knowledge and skills in the management and production of excellent nutritive food products, onthe other hand side by side we should also rectify if any mistakes

have crept in our programs.

2.1.5.0 मातेति गामुपस्पृश्य जपन् गास्तु समश्नुते । वचोविदमिति त्वेतां जपन् वाचं समश्नुते ॥ ऋग्विधान 2.187

जिन की गोपालन द्वारा उत्तम गोवंश और गोपालन के परिणाम स्वरूप उत्तम वाणि की इच्छा हो वे गौ माता को स्पर्ष करते हुए 'माता रुद्राणाम, वचो विदम्' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **8.101** के **15, 16** मंत्र का जप करें

He who desires good Cows & obtain gracious speech by grace of cows should while touching the cow, utter Rigved Sookt 8.101.15-16 beginning with 'मातारुद्राणाम' & 'वचोविदम्' – Rigvidhaan 2.187

RV 8.101.15

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ।। ऋ **8.101.15**

RV8.101.16

वचोविदं वाचमुदीरयन्ती विश्वाभिर्धीभिरुपतिष्ठमानाम्।

देवीं देवेभ्यः पर्येयुषीं गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः ।।ऋ **8.101.16**

Tying of bells गौ के घण्टी बांधना

2-1-2 गृहादिग्नाशाय एष धूपो गँवा हितः।

घंटाचैव गँवा कार्या धूपानेन धूपिता।। अग्नि पु. **292 (34)**

After wards a bell should be tied around the necks of the cows toward off evil spirits. (It is now confirmed by modern science that proper ultrasonic waves have a significant role in controlling air borne viruses).

2.2–Releasing Cows For Feeding in Pastures.

Pasture Feeding *was a very well organised and managed activity according to our scriptures,* ***Cows should feed themselves freely in good pastures.***

Modern scientific investigations have endorsed this ancient Indian belief. The products of Pasture grass fed cows according to Vedas and Shastras provide complete nutrition for body and more importantly for the development of proper mental and intellectual qualities. Raw fresh from cow's udders Milk, its curd and Butter were known to prevent all Self Degenerating human body diseases and also acted as remedies for most of such human diseases

According to modern science, the actions of solar radiations are the only known source of the mysterious "Activator X" the precursors through which host of vitamin A and D like substances, provide nutritive actions for the human beings.

Modern medicine uses vitamin D additives, as the main ingredient for preventing loss of tissue regulatory functions of human body. Chronic Calcium metabolism disorders, which lead to Osteoporosis and inveterate skin problems like Psoriasis are caused by inadequate solar radiation exposures and not getting Cow's Milk.. Inadequate natural vitamin D is also linked to cancer of colon, prostate, breast and ovaries due to inability of the human body to regulate cell growth. Vitamin D metabolism also regulates insulin secretion in pancreas and thus has a role in controlling incidence of Diabetes type 2.

But only natural Vitamin D as found in Sun's rays and cow's milk is most effective. The efficacy of artificially produced and used as an additive is often a commercial tactics of very little proven efficacy..

Diseases and conditions caused by Vitamin D deficiency

1. *Osteoporoses- due to impaired calcium absorption.*
2. *Impaired cell growth-due to disturbed cell growth regulation resulting in cancers.*
3. *Rickets -in children (a bone wasting disease.)*
4. *Type2 Diabetes -due to impaired insulin Production.*
5. *Schizophrenia*
6. *Fibromyalgia*

7 Skin troubles like Psoriasis

The above note is based on "The Healing Power of sunlight and vitamin D" based on Dr. Michael Holick researches, Truth Publishing Public Release Document dated May 18th 2004.

Buffaloes Milk contains no natural vitamin D. It is not surprising that Indian Dairy Milk, which is nearly 80% buffalo milk, is totally devoid of natural Vitamin D. No amount of artificial Vitamin D additives in Dairy products, can replace natural vitamin D present in Cow's milk. It is therefore not surprising that urban population in India, which depends literally on Dairy milk is suffering from all the vitamin D deficiency diseases listed above. The addition of synthetic Vitamin D to Dairy milk has not proved its effectiveness in replacing natural solar radiation activated milk of a cow.

Only Pasture fed cow's milk and its products contain -Conjugated ***Linoleic Acid-CLA.*** *Such milk also has a very high proportion of* ***Omega 3 to Omega 6.*** *This makes only grass fed cows*ऽ *milk act as protection and medicine against all self-degenerating diseases in Human*

body. These self degenerating diseases are such as Obesity, Cardiac problems, Diabetes, Arteriosclerosis, cancer etc. This explains the importance of pasture feeding. Latest researches carried out in University of Wisconsin and the NIH Bethesda in USA have confirmed this.

(Appendices have been provided giving up-to-date scientific information on these topics)

Grihya Sutras describe the following Mantras to be recited when releasing cows for grazing.

2-2-1 इमा मे विश्वतो वीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतम्।

पूषत्रस्त्वं पर्यावर्तानष्टा आयन्तु नो गृहान्।। मं ब्रा **1.8.1** गो भिल गृह**0** सूक्त **3-6-1**

Oh Cow as you go out to graze in pastures, let this be the provider of Vigor for you to motivate the world for its sustenance and nutrition, without you causing any damage to the environments while grazing, and come back to your home safely.

2.3 Receiving the cows back after grazing.

Recite the following:-

2-3-1 प्रत्यागताः चरणभूमितो गृहागता गाः।

इमा मधुमती र्मह्य, मनष्टाः, पयसा सह।

गाव आज्यस्य मातर इहेमाः सन्तु भूयसीः।। **Go Gr Su 3-6-1Mantra Brahman 1-8-2**

Here returns from pastures, leaden with milk full of nutrients, fats, satisfied by roaming freely for our good fortune.

2-3-2 आगावों अग्मन्नुत भद्रमक्रन् त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।प्रजावतीः पुरुरुपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वी रुषसो दुहानाः ।। **RV 6-28-1**

Welcome to cows making pleasant sounds, laden with nourishing milk, bearing and supporting lot of progeny, of various colors, and with good record of high productivities.

2-3-3 परिपूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्। पुनर्नो नष्टमाजतु।। **RV 6.54.10**

Let Pusha the protector not only push you from behind but from also from all sides, to hold our cows in protection from any fatalities.

2.4.1 About Heifers बछियों के बारे में

2.4.1.1 RV 3-55-16 Raise heifers without stress and separately

आ धेनवो धुन्यन्तामशिश्वीः सबर्दुधाः शशया अप्रदुग्धाः। नव्यानव्या युवतयो भवन्तिर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् ।। ऋ **3-55-16**

With potential to meet our expectations of providing their bounties, the indolent looking , unstrained with hard work stress free young heifers ie without any offspring , turn in

to daily milk providing excellent cows, by the blessing of gods.(There also a message here that heifers should be segregated from milk giving cows and raised under stress free conditions.)

2 .4.2 Putting Nose Ring on Young Bulls. नासाभेद ककिलमानकथनम

2-4-2-1 चतुर्थे ब्दे तृतीय ब्दे यदा वत्सो दृढो भवेत।

तदा नासाऽस्य भेत्तत्वा नैव प्राग् दुर्बलस्य च।।पाराशर कृषीशासनम।।**16**।।

In the 4th year or 3rd year never less than three years depending upon good body condition, the male calve is to be fitted with a nose ring by piercing the nose.

(Breeding Soundness Evaluation formed a very elaborate system in directives given. Visible physical features of body, including shape and size of testicles, the past records of productivity of the lineage were all considered. Inbreeding was avoided by observing elaborate systems of pedigree recognition and tattoo marking the new born calves.

2.4.2..2 नासाभेद ककीलमानकथनम्।।

नासाभेदन कीलस्तु खदिरो बाथ शैशपः।।

द्वादशाञ्गुलकः कार्य स्तज्ज्ञै स्तैर्नस एव सः।। पाराशर कृषीशासनम्।।**17**।।

The needle for nose piercing should me made of wood of khair (Accacia) Khair or Shisham (Dalberfia Sissoo Rokb. About 12 anguls (Nine inches) long. Only an experienced person should perform the operation.

2. 5 Releasing Bull for servicing the Herd. वृषोत्सर्

2.5.0 Avoid inbreeding वृषभ दूसरे कुल मे कार्य करे

2.5.0.1 RV 3.55.17

यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन यूथ नि दधातिरेतः।

स हि क्षपवान्त्स भगः स राज महद् देवानामसुरत्वमेकम् ।। ऋ **3.55.17**

The roaring breeding bull is all powerful and very able, but this bull roars and deposits its semen in a different herd, this is very important tradition of nature.

यह वृषभ अत्यन्त सामर्थ्यवान है, परन्तु इसे अपना वीर्य दूसरे वंश में जा कर स्थापित करना है। यह देवताओं का एक बड़ा महत्वशाली विधान है।

2.5.1 कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यात्र रेवत्या वा ऽऽश्रवयुजस्य। पास्कर गृह सूत्र **3-9-3**

Bulls should be released on full moon of kartik or revati Nakshatra of Ashwin month.

2-5-2

मधये गवात्र सुसमिद्धमग्निं कृत्वाऽऽज्य संस्कृत्य हरितिरिति षट् जुहोति प्रतिमन्त्रम्।। पागृसू **3-9-4**

Perform Agnihotra, among the cows with Yajurved Mantras as given here,. Use Cow Ghee for the Agnihotra.

(वोषट् *VOUSHUT* is an offering in to the sacred fire while standing, whereas *SWAHA* is an offering made while sitting. This point is to be noted that among the cows these offerings made in to the fire may be given while standing.)

वृषोत्सर्ग यज्ञ- आहुतियां

2.5.2.1 इह रतिः स्वाहा ।। पागृस **3.9.4.1**

इह रमध्वं स्वाहा ।। पागृसू **3.9.4.2**

इह धृतिः स्वाहा ।। पागृसू **3.9.4.3**

इह स्वधृतिः स्वाहा ।।पागृसू **3.9.4.4**

उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् स्वाहा

।। पागृसू **3.9.4.5**

2.5.5.2 3.9.4.6 रायस्पोषमस्मासुदीधरत् स्वाहा

।।पागृसू **3.9.4.6**

गोशाला यज्ञ

2.5.3Yaju 3.5 भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना पृथिवी वरिम्णा

तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।। यजु **3।5**

2.5.4 Yaju3.6 समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोदयतितिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ।। यजु **3।1**

2.5.5Yaju3.2 सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ।। यजु**3|2**

2.5.6Yaju3.3 तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचायविष्ठ्य ।।यजु**3|3**

2.5.7Yaju 3.4 उप त्वाग्ने हविष्मतीचीर्यन्तु हर्यत ।जुषस्य समिधो मम।। यजु**3|4**

2.5.8Yaju3.6 आयं गौः पृश्निक्रमीदसदन् मातर पुरः । पितर च प्रयन्त्स्वः।। यजु**3|6**

2.5.9Yaju3.7 अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन् महिषो दिवम् ।। यजु**3|7**

2.5.10Yaju3.9 अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा

सूर्यो ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ।

अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ।

सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ।। यजु

3|9

2.5.11Yaju3.10 सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।

जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ।

सजुर्देवेन सवित्रासजूरुषसेन्द्रवत्या ।

जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।यजु **3|10**

2.5.12Yaju3.21रेवतीमध्वमस्मिनयोनावस्मिनगोष्ठेऽस्मिंल्लोकेऽस्मिन् क्षये । इहैव स्त मापगात ।। यजु**3|21**

2.5.13Yaju3.22 संहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन । उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्द्धिया वयम्। नमो भरन्तऽएमसि ।।यजु**3|22**

2.5.14Yaju3.23 राजन्तमध्वराणा ग़ोपांमृतस्य दीदिवम् । वर्द्धमानं स्वे दमे ।। यजु**3।23**

2.5.15Yaju3.24 स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।सचस्वा नः स्वस्तये ।।यजु**3।24**

2.5.16Yaju3.35 तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्।।यजु**3।35**

2.5.18 RV6.54.5 पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषावाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

2-5-19 After the Agnihota Rudra Jap is recited.

रूद्रान्

जपित्वैकवर्णं द्विवर्णंवा यो वा यूथं छादयति यं वा यूथं छादये द्रोहितो वैव स्यात्। सर्वाण्ग़ैरुपतो जीववत्सायाः पयस्विन्यः पुत्रो यूथे च रुप स्वित्तमः स्यात मलङ्कृत्य यूथे मुख्याश्च तस्त्रो वत्सतर्यस्ताश्चालञ्कृत्य-एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडन्तीश्चरथ प्रिये ॥

यजुर्वेद **16** के मंत्रों से रुद्र जप करे

मा नः साप्तजनुषा ऽसुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेमेत्येतयै वोत्सृजेरन्।। पागृसू **3-9-6**

Rig Vidhan of lays down Rudra jap as consisting of Rigved 1.43 and 1.114, 2.33 and 7.46 chapters. is recited.

ऋ1.43RV1.43

1. Shankaayan shraut sootra prescribes recitation of this hymn in Shoolgava Ceremony to ward off ailments and troubles of domestic animals- cows, horses, and also family.

1. Ashwalayan Grih sootra prescribes hymn for attaining powers and achieving one's desires.

The seer of this hymn here is Kanw-Super intelligent – one who listens to everything very attentively. That is the reason that his every action is based on proper analysis and appropriate. Actions under him are known for beauty, charm, grace, grandeur, sublimity. He

personifies venerable sublime Enlightenment, Intelligence, Resolution and Determination.

। रुद्रः, मित्रावरुणौ च, 7-9सोमः। गायत्री, 9 अनुष्टुप् । ऋ**1.43RV1.43** रु द्र

The seer of this hymn here is Kanw-Super intelligent – one who listens to everything very attentively. That is the reason that his every action is based on proper analysis and appropriate. Actions under him are known for beauty, charm, grace, grandeur, sublimity. He

personifies venerable sublime Enlightenment, Intelligence, Resolution and Determination.

। रुद्रः, मित्रावरुणौ च, 7-9सोमः। गायत्री, 9 अनुष्टुप् ।

1.कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे ।

वोचेम शंतमं हृदे ।। **RV1.43.1**

Let us invoke in the intellect to promote in our hearts the shower of blessings of the great Rudra for our well being For providing healthy disease free life, and to give comfort to our hearts, wise men tell about the appropriate actions to be taken and precautions observed for ensuring disease free healthy life at different times and situations.

हम बड़े बुद्धिमान् (अभीष्टों के लिए) अत्यन्त मेघ बरसाने वाले महाबली रुद्र के लिए हृदय से अत्यन्त सुख देने वाले किस (वचन) को कहें?

(रुद्र परमात्मा की वह शक्ति है जिस का विकास बिजली की गरज के समान चमत्कारी होता है। रुद्र मनुष्यों के लिए वर्षा इत्यादि के द्वारा वायुमंडल से और वनस्पतियों द्वारा रोग को नाश करने वाली औषधियों को देने वाले हैं। भयंकर होने पर भी रुद्र अपने आर्य्य उपासकों के लिए अत्यन्त मृदु हैं।) ऋ संहिता- शिवनाथ आहिताग्नि से

रोग रहित स्वस्थ जीवन के हेतु, बुद्धिमान जन, रुद्र के रोगाणुओं को नष्ट करने और हमारे स्वास्थ्य के लिए भिन्न भिन्न परिस्थितियों में भिन्न भिन्न समय पर हमारे आचार व्यवहारका उपदेश करते हैं.

2.यथा नो अदितिः करत् पश्वे नृभ्यो यथा गवे ।

यथा तोकाय रुद्रियम् ।।**RV 1.43.2**

By which the environments may be (induced) to grant the gifts of Rudra to our animals, our people, our cows and our progeny.Like what a mother of new born desires, like what a keeper of cows desires, like what a king desires for his people, like what a farmer desires while working with soil on the farm the divine wisdom of Rudra (about sanitation and destroying of disease carrying germs pathogens) may be made available to preserve the health and wellbeing. (of all).

जिस के द्वारा हमारे पशु, गौ, समाज, सन्तान सब रुद्र सम्बन्धित भेषज से निरोग स्वस्थ हों। माता जिस प्रकार अपने नवजात शिषु के लिए , सूर्य पृथ्वी और वनस्पति के लिए उत्तम, राजा अपनी प्रजा और गौवों के कल्याण के लिए स्वास्थ्य प्रद रोग रहित परिस्थितियां बनाते हैं, उस रुद्र का विशेष ज्ञान उपलब्ध कराना चाहिए.

3.यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति ।

यथा विश्वे सजोषसः ।। **1.43.3**

May we learn to get familiar with the मित्रः probiotics the health giving nutritive,वरुण ,, – the omnipresent microorganisms like viruses, and the रुद्रः disease destroying agents , for our good health. Where all natural elements are friendly and provide disease free healthy environments, they by Rudra render all our habitat safe and healthy.

जिस से हम को मित्र वरुण रुद्र सब देवता समान प्रीति वाले हों समस्त प्राकृतिक सम्पदाएं, पर्यावरण, रुद्र कि कृपा से रोग रहित स्वास्थ्य प्रद हमारे मित्र वत हों

4.गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् ।

तच्छंयोः सुम्नमीमहे ।। **1.43.4**

Rudra bless us through the *gaathpatim* traditional folklore wisdom to avoid disease and maintain healthy environments for a peaceful society and *jalaash bheshajam* to turn waters in to medicines for our total wellbeing.

HHWilson in his Ved Bhashya comments on *jalashbheshajamas* follows " he who has medicament conferring delight; from *ja*,one born and *lasa*, happiness; an unusual word except in a compound form, as *abhlasha*, which is of current use; or it may mean , sprung fromwater(*jala*), all vegetables depending over water for their growth.and temperaments pure and *jalaash bheshajam* ability to turn waters in to medicines for our total wellbeing.

(This makes clear reference to *jalaash* being specially treated water endowed with enhanced medicinal curative properties . Modern scientists of Biophysics call such water 'activated water'. This water is being increasingly prepared in Biodynamic Agriculture of Rudolph Steiner and Compost Tea preparations. Activated water being made by electronic devices is increasingly finding use for drinking purposes. Dairy industry is using Activated Water to enhance milk production of the cows by more than 20%. Ganges water in its pristine purity is the naturally formed jalaash i.e. Activated Water and is well known for its innumerable divine qualities.)

(This is clear reference to *jalaash* being a preparation of what modern scientists of Biophysics call activated water)

(हम)स्तुति के पालक यज्ञ के स्वामी सुख रूप औषधि से युक्त रुद्र से उस रोग शान्ति (और) सुख को मांगते हैं । जलाष विषय- महान वैज्ञानिक न्यूटन ने कहा था कि वह अपने वैज्ञानिक अनुसन्धान करते हुए ऐसा अनुभव करता है कि वह प्रकृति के एक विशाल समुद्र के तट पर केवल छोटे छोटे पत्थरों से एक बालक की तरह खेल रहा है । वेदों मे ऋषियों के विज्ञानकी जान कारी इतनी विस्मय कारी है कि आधुनिक विज्ञान सचमुच में अभी छोटे छोटे पत्थरों से ही खेल रहा है। जलाष के सन्दर्भ में यही कहा जा सकता है। पवित्र गंगा जल में रोग नाशक तत्व क्या हैं और गंगा जल किस प्रकार सामान्य पानी से भिन्न है यह अभी तक विश्व भर के वैज्ञानिक पता नहीं कर सके हैं। आधुनिक विज्ञान **Activated Water** के विस्मयकारी परिणामों का अभी अध्ययन कर रहा है। अधिकांश वैज्ञानिक इसे **pseudo science** की संज्ञा देते हैं। परन्तु होम्यो पैथी और ओस्ट्रियन वैज्ञानिक रुडोल्फ़ स्टाइनर के बायोडायनमिक पदार्थों की उपयोगिता अब अमेरिका की सरकारी कृषि नीति में आते हैं।

जलाष शब्द पर विभिन्न वेद भाष्य, निरुक्त इत्यादि ग्रन्थों बहुत कम ज्ञान मिलता है। Monier Williams के अनुसार जलाष से **mechanically subdued water** अर्थ बनता है। इस प्रकार कृष्टी द्वारा उपचारित जल को जलाष कहा जा सकता है । इस प्रकार उपचारित जल को **Activated Water**कहा जाता है। यही वैदिक भाषा में जलाष कहलाता है। विशेष – गोमूत्ररूपेण जलेन। जलाषमिति उदकनामसु पठितम्। जलाष को रुद्र संबन्धी भेषज के लिए अन्यत्र भी श्रुति में कहा गया है— "गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्" (ऋ **1।43।4**। कौ**0** सू**0(31/11)** विनियोग के अनुसार बिना मुख वाले फ़ोड़े फुन्सी आदि व्रणों को गोमूत्र से धो कर उस का उपलेप करना चाहिए। गो मूत्र इस प्रकार रोगों की अव्यर्थ महोषधि है यहा तक कि उस का नियमित सेवन कुष्ट आदि के घावों को भी ठीक कर देता है।

आयुर्वेद में इस के गुणवर्णन करते हुए लिखा है– " शूल गुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षि-मुखोजित्।" तथा च — कासं सकुष्ठ-जठरकेइमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति **(**भाव नि**0** मूत्र वर्ग **4)**

रुद्र के प्रभाव से हमारा पेय जल ओषधि रूप बने, और समाज में उच्च विचारो के प्रचार से जीवन सुख शांति मय बने. (पेय के लिए शुद्ध पवित्र ओषधि गंगा जल उपलब्ध रहे)

5.यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।

श्रेष्ठो देवानां वसुः ।। **1.43.5**

देदीप्यमान सूर्य के प्रभाव से समस्त वसुः -निवास,गो दुग्ध इत्यादि उत्तम वीर्य प्रदाता हो कर श्रेष्ठ साधन प्रदान करें.

(आधुनिक विज्ञान मानता है कि प्रातःकालीन सूर्य नमस्कार सूर्य अर्चना का मानव स्वास्थ्य पर विटामिन डी द्वारा और सूर्य के प्रभाव से वनस्पति, हरे चारे पर पोषित गो दुग्ध मे ओषधि गुण प्राप्त होते हैं. आधुनिक जीवन शैलि मे सूर्य भगवानसे दूर रह कर, गौओं को गोचर में हरे चारे से वन्चित रखने से ही समाज में सब मधुमेह, हृदय, नेत्र रोग इत्यादि महामारि की तरह फैल रहे हैं)

6.शं नो करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये ।

नृभ्यो नारिभ्यो गवे ।। **1.43.6**

Sun similarly provides beneficial effects to all the domestic animals the sheep, goats, kings , community and cows with health providing healthy peace loving temperaments. Natural straight path is the right and easy path to follow for health and welfare of all, in all matters of living connected with families of horses, *meshaaya* small rumens animals , men, women and cows.

(It is interesting to note here that Veda is classifying horses and goats, sheep etc separately from Humans and Cows in that order, for welfare in management practices. Cows occupy the highest position in this order of priorities, Horses, Goats, Sheep, Men Women and then Cows. Cows were not bracketed with animals but were treated in the category of human beings and placed above humans. It is also noted that Buffalo was not admitted as a domesticated animal. This is a clue to how cow gets elevated to the status of universal mother in Indian tradition.)

उसी प्रकार उत्तम सूर्य ज्योति से सब भेड,बकरियां, राजा, प्रजा, गौएं सुख शांति प्रदाता हों.

7.अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् ।

महि श्रवस्तुविनृम्णम् ।। **1.43.7**

For the entire community ensure availability of excellent cow milk and cow enabled organic food to provide excellent intellects and peace loving temperaments.

समस्त समाज के लिए उत्तम गोदुग्ध और गो आधारित जैविक कृषि द्वारा उपलब्ध अन्न से कुशाग्र बुद्धि, और सौम्य पकृति के समाजका निर्माण करो.

8.मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त ।

आ न इन्दो वाजे भज ।। **1.43.8**

Develop the strength to defeat the antisocial, selfish, consumerist, non charitable, greedy, selfish life styles from community.

असमाजिक विचारों,प्रवृत्तियों, अयज्ञशीलता, अदानशीलता, भोगवादिता के उन्मूलन की शक्ति सामर्थ्य उत्पन्न करो.

9. यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।

मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ।। **1.43.9**

Thus by establishing Vedas in the mind and temperament of the society excellent peaceful world may evolve.

जिस से समस्त प्रजा की मूर्धा चेतना अमृत मयि वेदों के उपदेशों से आभूषित हो कर अत्युत्तम संसार समाज का निर्माण करें.

Rudra Jap रुद्र जप **RV2.33 12 to 15**

कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रति ननानाम रुद्रोपयन्तम्|

गृणीषे स्तुतस्त्वंं भेषजा रास्यस्मे ।। **2.33.12**

या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमावृषणो या मयोभु|

यानि मनुरवृणीता पिता नस्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि ।। **2.33.13**

परि णो हेतीरुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात्|

अव स्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।। **2.33.14**

एवा बभ्रो वृषभ चेकितान यथा देव न हृणीषे न हंसि ।

हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।। **2.33.15**

प्रकृति का वरदान – मधुविद्या

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

RV6.70 Nature's bounties

Including Honey Doctrine

प्रकृति का वरदान – मधुविद्या

ऋषि:- बार्हस्पत्यो भारद्वाज: । देवता:- द्यावापृथिवी । जगती।

बार्हस्पत्यो -विद्वानों का भी विद्वान, भारद्वाज:- अत्यन्त शक्ति से

सम्पन्न

इस सूक्त की व्याख्या में तीन बड़े महत्वपूर्ण शब्द प्रयुक्त हुए हैं.

घृतः – घृतवती,घृतश्रिया , घृतपृचा , घृतावृधा – घृत को स्नेहन भी कहते हैं- जीवन में सदा स्नेहयुक्त

मनमुटाव रहित रहने से समाज में सौहर्द्र , संगठित रहने से समाजशक्ति , अस्पृश्यता भेदभाव जैसी विकृतियों के स्थान पर समृद्ध सुखमय समाज का निर्माण देखा जाता है.

मधु – स्नेह युक्त होना ही तो मधु जैसा मिठास जीवन में स्थापित करताहै. भारतीय दर्शन में मधुविद्या का बड़ा महत्व दिखाया

In proper understanding this sookt three words described below have to be considered in their wider context.

1.घृत ;-

Ghrit;- Commonly it is known as ghee. Ghee is also performs the function of a Lubricant. Metaphorically in personal relations Ghrit by removing friction adds to closeness, feelings of calm, mutual cooperation and affection. To the human body Ghrit provides strength and wellbeing. Thus Ghrit while it provides physical health and wellbeing to human body, metaphorically it provides the society with calm pleasant cooperative attitudes.

2.मधु ;

Madhu Vidya is elaborately dealt with in Bridaranyakopanishad 2.5.(बृहदाराण्यकोपनिषद 2.5)

Basic premise is that honey is a sweet and highly desired material, both literally and metaphorically. Honey has physically sweet taste and stimulates health. Metaphorically Honey promotes by sweet agreeability and happy peace in all situations and experiences in life.

It is also not possible to trace as to which bee picked which flower for which part of this honey. Similarly in life pleasant living is made up as the sum total of contributions of very small sweet agreeable, compliments from all elements the earth, unpolluted air, water, our pets, our relations, friends, colleagues, strangers on the street, innumerable sources that are hard to identify individually. Thus like honey there is no traceability for happiness in life.

As Upanishad says; *Iyam pṛthivī sarveṣāṁ bhūtānām madhu:*

This earth is the honey of all beings. It is the essence and milk of all beings. People suck this earth as if they suck honey which has such a beautiful taste; and earth sucks everybody and everything as if they are honey to it. The earth is the honey of all, and everyone is the honey of the earth. The earth is absorbed into the 'being' of everything, and everything is absorbed into the 'being' of the earth. That is the meaning of saying that earth is the honey of all beings, and all beings are the honey of the earth. It is the honey that you absorb into your being by sucking, by licking, by enjoying, by making it a part of your own 'being'. So does the earth make everything a part of its own 'being' by absorbing everything into itself. And so does every 'being' in the world suck the earth into itself and make it a part of its own 'being'.

3.असश्चन्ती ;-Stands for selfless, anonymous actions without seeking rewards of actions for self. This is what Ved describes in -कुर्वन्नेवेह्कर्माणि जिजीविषेच्छ्त^ समाः | एवं त्वयि नान्यथेतो न कर्म लिप्यते नरे || यजु 40.2 , And Geeta ;कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन | मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि || 2.47

Food Safety – Security जैविक पदार्थ

1.घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ।।**AV 6.70.1**

सम्पूर्ण पृथ्वी भूमि और सौर ऊर्जा द्वारा प्रकृति के(वरुणस्य) सर्वव्यापी नियमों की व्यवस्था में सदैव उत्तम माधुर्य लिए हुए (अन्नदि) पौष्टिक (स्वास्थ्य हितकारी) वीर्यवर्धक पदार्थों को प्रदान करने की अक्षय क्षमता रखती है.

(पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भूमि की उर्वरकता, प्रदूषन रहित कार्य योजना और सौर ऊर्जा का अधिक से अधिक उपयोग का उपदेश इस वेद मंत्र से प्राप्त होता है)

Nature's omnipotent omnipresent laws by combination of land and sun tirelessly supply of highly nutritious sweet (food) products from the entire expanse of land.
Biodiversity जैव विविधता का महत्व

2.असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते ।
राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितं ।।**AV 6.70.2**

भिन्न भिन्न क्षेत्रों में परस्पर स्वतंत्र रूप से स्थापित पर्यावरण द्यावा पृथिवी,सब जीव पशु, पक्षी, पर्यावरण के हितों की सुरक्षा से मानव के पवित्र हितों की रक्षा के लिए जीवन को पवित्र मानसिकता और पौरुष प्रदान करने वाले सब सात्विक दूध, घी, इत्यादि साधन प्राप्त कराते हैं. (इस मंत्र में मानव जीवन के हित में जैव विविधता का महत्व दर्शाया गया है.)

Different diverse seemingly independent unconnected species of Nature make vital complimentary contributions to make available sustainable non corrupting disease free healthy food and environment.

Innovations आविष्कार महत्व

3.यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति ।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता ।।**AV 6.70.3**

जो बुद्धिमान समाज को जन प्रकृति के साधनों के सरल अधिक लाभकारी मार्ग दर्शाते हैं वे समाज में धर्मानुसार जीवन आचरण की व्यवस्था स्थापित करने मे सहायक बनते हैं.

Devise innovative & simple processes to employ the natural complimentary bounties of naturally available resources like people, animals, sun and land, and provide society and its progeny with traditions of just and better sustainable lifestyle.

Rains वृष्टि जल

4.घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा ।
उर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद् विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये ।।**AV 6.70.4**

वर्षा के जल घृत की तरह अत्यंत महत्वपूर्ण गुणवान और सर्वव्यापी हैं. पृथ्वी की ऊर्वरक बनाने के साथ साथ इन की गुणवत्ता विद्वत्जनों के जीवन में इष्ट की पूर्ति के लिए यज्ञादि सात्विक कर्मों के प्रेरक हैं.

All encompassing rain waters are of great importance and bring glory, satiation and growth. They provide soil with riches to promote bliss and enlightened temperaments in wise persons to perform yajnas to achieve their goals.

Honey Doctrine (Sweetness/happiness in life) मधुविद्या

5.मधु नः द्यावापृथिवी मिमिक्षतां मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते ।
दधाने यज्ञं द्रविणं च देवता महि श्रवो वाजमस्मे सुवीर्यम् ।। **AV6.70.5**

जीवन में सब ओर से क्षरित मधु जैसा धन धान्य स्वास्थ्य युक्त प्रसन्न चित्त समाज में यज्ञादि (दान,देवपूजा,संगतिकरण) के परिणाम होते हैं. यज्ञ ही मधुविद्या है.

All things that endow with all pervading, health wealth and happiness and derive from Nature's resources on earth and atmosphere above it are results of efforts that are made selflessly, in charity and cooperation in all walks of life like performing Yajnas. And result in providing to all life desirable like sweet honey. (All actions that in combination consist of Charity, Care of environments, and Collective good for society are called Yajnas in Vedic terminology.)

6.ऊर्जं नः द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा ।
सं रराणे रोदसी विश्वशंभुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम् ।।**AV 6.70.6**

द्युलोक वृष्टि के जल द्वारा सेचन करने से पिता समान है, उस जल को धारण करने वाली पृथ्वी माता समान है,और ये दोनो पृथिवी लोक, प्राण शक्ति , अन्न , ऊर्जा, बल और सब आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले हैं . ये द्यावापृथिवी सब को उपकार भाव से सुख शांति दे कर सब दुखों को दूर करते हैं . समाज अपने हित में इस सत्मार्ग पर सदैव चले.

Nature's action to bless us with Rain is likened to actions of a father, and earth's action in receiving the rains and provide for our welfare are likened to the actions of a mother. Nature thus like both the parents provides us with all that is required to sustain us – breath of life, food, energy, comfort and happiness, remove our miseries and discomfort . To ensure this it is required of us to follow in correct path and behavior.

मनसापरिक्रमा विषय

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

About Mansaparikrama मनसापरिक्रमा विषय

AV3.26 & 3.27

दो अथर्व वेद सूक्त 3.26 और 3.27 एक ही विषय पर समष्टि और व्यष्टि रूप से उपदेश द्वारा मानव जीवनके मार्ग का निर्देश करते हैं. दोनों को एक साथ स्वाध्याय पर आधारित मेरे व्यक्तिगत विचार विद्वत्जनों के टिप्पणि के लिए प्रस्तुत हैं .

Two Atharv ved sookts 3.26 and 3.27 appear to give guidance on the same subject , AV3.26 on macro level and AV3.27 on micro earthly level. My personal understanding and interpretation of these two complimentary Vedic sookts is submitted for consideration and comments of learned persons

ऋषिः- अथर्वा | देवता-अन्न्यादयः नाना देवता

1. येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।। **AV3.26.1**

पूर्व दिशा में हमारे सम्मुख स्थित (सूर्य) प्रत्यक्ष रूप से तम के आसुरी भावों (आलस्य, निद्रा , प्रमाद , अवसाद जैसी तामसिक अंधकारमयी वृत्तियों का) नाश कर के समस्त संसार को रात्रि की निद्रा से उठा कर स्वप्रेरित दैनिक दिनचर्या में उद्यत करता है | सूर्याग्नि – ऊर्जावान देवत्व से उपलब्ध निरन्तर चरैवेति चरैवेति प्रगतिशील कर्मठता की प्रेरणा देता है. यही हमारे सुखों का साधन होता है, विद्वत्जन- वेद विद्या , इस (सुर्याग्नि) की ऊर्जा के विज्ञान का अनुसंधान करें और हमें उपदेश करें, जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं. (यही संदेश 'तमसोमामृतं गमय मृत्योर्मामृतं गमय' में निहित है. एक उदाहरण के लिए संसारिक भौतिक सुख साधनों में आत्मचिंतन द्वारा आधुनिक विद्युत उत्पादन द्वारा पर्यावरण की हानि को देखते हुए सौर ऊर्जा के प्रयोग मे प्रगति इसी दिशा में प्रगति का द्योतक है. कहा जा रहा है कि जर्मनी शीघ्र ही अपनी विद्युत उत्पदनकी आवश्यकता का 80% सौर ऊर्जा द्वारा प्राप्त करने का लक्ष्य पा लेगा. इसी प्रकार स्वीडन निकट भविष्य में अपने 80% वाहनों को अर्यावरण को क्षति पहुंचानेवाले डीज़ल पेट्रोल की बजाए पुरीष इत्यादि नागरिक कूड़े कचड़े से गैस उत्पाद से चला पाएगा.)

In the East in front of us as sun rises all negative dark tendencies (of sleepiness, laziness, procrastination, and despondency) are dispelled. Entire world by itself wakes up from rest & slumber of night and sets about its daily chores. Sun provides the inspiration to be activated with energy in our efforts to make continuous progress. This is the forbearer of our comforts in life; learned persons should explore these energy sciences and educate us in their use. For

this act of kindness we are ever grateful to the Almighty and follow him with full dedication by making our offerings in Agnihotra .

(This is the essence of Vedic exhortation 'तमसोमामृतं गमय मृत्योर्मामृतं गमय' . One example is that on realising the threat and damage to environments and population by reliance on fossil fuels and damage to ecology in conventional methods of electricity generation, Germany is aiming to reach the target of producing 80% of its electricity needs by Solar cogeneration. Similarly Sweden is aiming to make use of its municipal waste methane production to replace 80% of its fossil fuel needs in transport sector.)

1.प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । ।**AV3.27.1**

प्राची पूर्व की दिशा में सूर्याग्नि अधिपति स्वामी है, जो स्वतंत्र हैं और सीमा बद्ध नहीं हैं . इन की रश्मियां (पृथ्वी पर आने वाले) बाण स्वरूप हैं जो(भिन्न भिन्न प्रकार से) हमारी रक्षा करते हैं. इस सूर्य देवता को हम नमन करते हैं. उस के इन रक्षक बाणों के प्रति हम नमन करते हैं |और जो हम से द्वेष करने वाले (तमप्रिय) रोगादि शत्रु हैं उन्हें ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

In the East infinite and independent solar radiations are directed like missiles to provide energy and protection us (in many forms known as photo biology in science). We show our gratefulness to Sun for these bounties and leave our enemies such as sloth and pathogens at his disposal to deal with.

२ .येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्यविष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.2**

दक्षिण दाहिने हाथ में स्थित कार्य कुशलता परिश्रम का संकल्प हमारे जीवन में सुरक्षा प्रदान करने का मुख्य साधन है. विद्वत्जन- वेद विद्या से प्रेरणा लेकर , (कार्यकौशल-कृष्टी) तकनीकी विज्ञान का (अनुसंधान करें) और हमें उपदेश करें, जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.और जो हमारे अभ्युदय मे बाधक शत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

In our right hand dwell the dexterous life support skills. The resolve to lead skilful action oriented life ensures self preservation and protection. Learned persons should research and develop science and technologies and educate us in their use. For this act of kindness we are ever grateful to them and make our offerings in Agnihotra dedicated to Him..

2.दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.2**

दक्षिण – दाहने हाथ से कर्म प्रधान जीवन का संकल्प हमारे भीतर इन्द्र का दैवत्व स्थापित करता है.(इन्द्र का भी तो आचरण स्वयं में निर्दोष नहीं था) अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मतान्ध बुधि भ्रष्ट हो कर हम अपना संतुलन खो सकते हैं और (तिरश्चिराजी) जैसे कुछ टेढ़े मेढ़े रास्ते भी अपना लेते हैं . ऐसे अवसरों पर हमारे पितरों का, पूर्व जनों का, शास्त्रों का मार्ग दर्शन हमारे लिए ठीक दिशा में कार्य करने लिए हमें दिशा निर्देश करता है . इस इन्द्र देवत्व के प्रति हम प्रणाम करते हैं , इंद्र द्वारा जीवन में सुरक्षा प्रदान करने वाली उपलब्धियों को हम प्रणाम करते हैं . और जो हम से द्वेष करने वाले हमारे अभ्युदय मे बाधक शत्रु हैं उन्हें ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

1. येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । **AV3.26. 3**

प्रतीची दिशा में हमारी पीठ के पीछे की दिशा में (वैराजा:) अन्न के स्वामी – कृषक जन और (देवाः) व्यवहारी अर्थात व्यापारी जन स्थित हैं जिन के लिए जल (सिंचाई के लिए) मुख्य बाण है, हमारे जीवन में सुरक्षा प्रदान करने का मुख्य साधन है. विद्वत्जन- वेद विद्या से प्रेरणा लेकर , कृषि तथा जल के विज्ञान का अनुसंधान करें और हमें उपदेश करें,जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.

Unconcerned with our activities – behind our backs-without our urging, the growers of food and commercial interests operate to provide us with food security. Water resource is the most significant for their proper operations. Scientists should carry our researches in to food production and water utilizations and educate us in their use. For this act of kindness we are ever grateful to them and will follow with full dedication.

3.प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नं इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.3**

हमारे पीछे हमें बिना बताए वरुण देवता जल के भौतिक स्वरूप में भूमि के नीचे हर स्थान पर पहुंच कर वहां पलने वाले सूक्ष्माणुओं के अधिपति हैं. इन का दायित्व भूमि से उत्पन्न होने वाले अन्न के उत्पन्न करने की सुरक्षा है. इस के लिए हम वरुण देवता को नमन करते हैं, उन के द्वारा इस प्रकार अन्न की सुरक्षा की व्यवस्था को हम नमन करते हैं . और जो हमारे शत्रु जन (इन प्रकृति के नियमों के विरुद्ध चल कर भूमि को जल विहीन, सूक्ष्माणुओं रहित मरुस्थल बना कर अनुपजाउ बना देते हैं) उन्हें हम ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

At our backs, (without our urging) Warun dewataa (through water) is in charge of Rhiozosphere where he commands by reaching everywhere in the kingdom of microorganisms living in soil. Food grown thus is the protector of our lives . We prostate ourselves to Him, and for His bounties, and leave our enemies such as destroyers of Rhizosphere and the food products to face the harsh justice of Nature. (Modern environmental science confirms that by damaging the Rhizosphere micro flora man is turning fertile lands in to barren life less food less deserts. This is result of Nature’s relentless justice.)

1. येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.4**

Aurora borealis उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टिगोचर प्रचण्ड प्रकाश

यह जो उत्तर दिशा में हमारे बाएं ओर वेगवान वायु द्वारा (पृथ्वी को) बींधने वाले प्रक्षेपित बाण हैं (जिन के कारण यह प्रचंड प्रकाश दृष्टिगोचर होता है) वे हमे आनंद प्रदान करें . जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.

(इस वेद मंत्र में ऋषियों ने पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टिगोचर प्रचण्ड प्रकाश को देख कर चिंतन के आधार पर अंतरिक्ष में अपार विद्युत के स्रोत की कल्पना की थी. उसी भविष्यवाणी को आज का वैज्ञानिक यथार्थ में देखने का प्रयास करता दीखता है . आधुनिक विज्ञान के अनुसार आकाश में सूर्य द्वारा प्रक्षेपित अत्यंत वेग प्रचंड प्रकाश और गति से सूर्य की वायु समान उल्काएं Solar winds आती हैं . पृथ्वी के 100 किलोमीटर ऊपर उन के विस्फोट के परिणाम स्वरूप एक ध्रुवीय ज्योति का प्रकाश पुंज दिखाइ देता है . इस उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टीगोचर आकाश में दिखाइ देने वाले प्रकाश को ओरोरा बोरिआलिस- Aurora Borealis उत्तरीय ध्रुव प्रकाश नाम से जाना जाता है. यह ज्योति पुंज पृथ्वी और सूर्य में निरन्तर एक विद्युत प्रवाह द्वारा क्रियामान होता है. इस विद्युत प्रवाह का वेग 50,000 वोल्ट की 20,000,000 एम्पीअर करेन्ट तक माना जाता है. विख्यात वैज्ञानिक विद्युत के महान आविष्कारक निकोला टेस्ला ने लगभग 100 वर्ष पूर्व अपने अनुसंधान पर आधारित आकाश में इस अपरिमित विद्युत के भन्डार से पृथ्वी पर मानव की समस्त विद्युत की आवश्यकताओं को प्राप्त करने की भविष्य वाणि की थी.

विद्युत को मोटर आदि चला कर प्रयोग में लाने के लिए वैज्ञानिक Fleming's Left Hand Rule फ्लेमिन्ग के बाएं हाथ का नियम बताते हैं . यह विद्युत क्रिया प्रकृति का सहज नियम है.)

(The aurora borealis (the Northern Lights) have always fascinated mankind. The solar wind and explosive events like coronal mass ejections (CMEs) carry solar plasma (primarily energetic protons) out in to the Earth's orbit. Often, they interact with the geomagnetic field and spiral down toward the poles (where the magnetic field is directed). On interacting with the atmosphere, light is generated, producing the aurora.

Thus auroras, the north magnetic pole (aurora borealis) occur when highly charged electrons from the solar wind interact with elements in the earth's atmosphere. Solar winds stream away from the sun at speeds of about 1 million miles per hour. When they reach the earth, some 40 hours after leaving the sun, they follow the lines of magnetic force generated by the earth's core and flow through the magnetosphere, a teardrop-shaped area of highly charged electrical and magnetic fields. This phenomenon is said to take place above 100 Km of earth's surface. All of the magnetic and electrical forces react with one another in constantly shifting combinations. These shifts and flows can be seen as the auroras lights "dance," moving along with the atmospheric currents that can reach 20,000,000 amperes at 50,000 volts. (In contrast, the circuit breakers in your home will disengage when current flow exceeds 5-30 amperes at 220 volts.)Tesla the famous inventor of AC electricity and induction motor had a favourite research topic bordering on science fiction. It was visualized that it

should be possible to tap in to the inexhaustible electrical energy in the auroras for our electricity needs by every individual to have a proper antenna in his home and draw all his electricity needs, without the present systems of electricity generation and transmission).The NASA Time History of Events and Macro scale Interactions during Sub storms (THEMIS) mission The "ropes" are a 650,000 Amp electric current flowing between the Earth and the sun.In utilization of electric power in applications involving motion activity

4.उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.4**

ये बांए दिशा मे शरीर में स्थापित मानव हृदय जो हमारी मानसिकता में उत्पन्न मानव जीवन मूल्यों का भाव प्रधान है, जिस का सोम अधिपति है, उस के लिए प्रणाम | मानव हृदय स्वचालित विद्युत नियन्त्रक नियम से सहज कार्य करता रहता है. यह नियम संसार में हमारे जीवन के सुखों का आधार बनता है. प्रकृति के इस दान के लिए हम अत्यन्त आभारी हैं . और इस दिशा में जो बाधा पहुंचाने वाले तत्व हैं उन्हें हम न्यायोचित परिणाम के लिए प्रकृति को ही समर्पित करते हैं .

(आधुनिक शारीरिक विज्ञान के अनुसार मानव हृदय जो निरंतर एक निश्चित गति से रक्त को स्वच्छ कर के सारे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार और दूषित पदार्थों का निकास कर रहा है, वह मानव शरीर मे प्रकृति द्वारा स्वतः उत्पन्न विद्युत प्रणाली के कारण से ही है. (यही ऋषि चिंतन में स्वजोरक्षिताशनिःइषवः का विज्ञान है)

इस अद्भुत विद्युत प्रणाली के लिए हम नमन करते हैं , इस व्यवस्था के द्वारा हमारे शरीर की रक्षा के लिए हम नमन करते हैं , और जो हमारे हृदय के सुचारु कार्य करने में बाधा रूपीशत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर छोड़ते है.

On our left side is situated the ruler of all our motivations and emotions (our HEART).Its proper working operates and protects our physical body to ensures orderly life and human existence. For this blessing of Nature we are ever grateful.

{It was in deep meditation on the left side of human body that the Rishi could perceive the working of the human heart that operates continuously because it generates its own electrical signal (also called an electrical impulse.

(Fleming's Left Hand Rule on relations between electrical forces is very famous. This motive action of heart electricity comes as a natural, property of electrical phenomenon.)

Modern medical science is able to record this electrical impulse by placing electrodes on the chest. This is called an electrocardiogram (ECG, or EKG).The cardiac electrical signal controls the heartbeat in two ways. First, since each impulse leads to one heartbeat, the number of electrical impulses determines the *heart rate*. And second, as the electrical signal "spreads" across the heart, it triggers the heart muscle to contract in the correct sequence, thus coordinating each *heartbeat* and assuring that the heart works as efficiently as possible.

The heart's electrical signal is produced by a tiny structure known as the *sinus node*, which is located in the upper portion of the right atrium. (You can learn about the heart's chambers and valves here.) From the sinus node, the electrical signal spreads across the right atrium

and the left atrium, causing both atria to contract, and to push their load of blood into the right and left ventricles. The electrical signal then passes through the *AV node* to the ventricles, where it causes the ventricles to contract in turn.

This left hand motor action natural property of electricity (Fleming's Rule) provides us with great comforts in our life. For this act of kindness we are ever grateful to Nature and present the impediments in our path for Nature itself to resolve.

There is another more direct way to perceive a very close connection of self generated electricity with human body that could not escape a Rishi's perception in meditation. Human heart located on our left side of the body is self regulated by electronic oscillator at 60 to 70 beats per minute to make us live. Modern scientific explanation of the phenomenon is being furnished below.

The rhythmic contractions of the heart which pump the life-giving blood occur in response to periodic electrical control pulse sequences. The natural pacemaker is a specialized bundle of nerve fibers called the sinoatrial node (SA node). Nerve cells are capable of producing electrical impulses called action potentials. The bundle of active cells in the SA node trigger a sequence of electrical events in the heart which controls the orderly pattern of muscle contractions that pumps the blood out of the heart.

The electrical potentials (voltages) that are generated in the body have their origin in membrane potentials where differences in the concentrations of positive and negative ions give a localized separation of charges. This charge separation is called polarization. Changes in voltage occur when some event triggers a depolarization of a membrane, and also upon the re-polarization of the membrane. The depolarization and re-polarization of the SA node and the other elements of the heart's electrical system produce a strong pattern of voltage change which can be measured with electrodes on the skin. Voltage measurements on the skin of the chest are called an electrocardiogram or ECG.

1. येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.5**

वे जन जो भूमि पर आमोद प्रमोद के जीवन में स्थिर रहते हैं. उन्हें स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए शिक्षा और ओषधियों की आवश्यकता पड़ती है. वे ओषधियां हमारे सुख का साधन है के आभारी हैं, उन के बारे में विद्वत्जन हमें उपदेश करें और हम अग्निहोत्र के द्वारा उन की उप्लधि से लाभान्वित हों .

Those persons who stick to worldly routines and make merry are in need of directions by being spoken to for use of proper health care medicines. We are grateful for these remedies and perform Agnihotras dedicatedly.

5.ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.5**

ध्रुवा पृथ्वी पर हमारे भौतिक जीवन के विकास का आधार विष्णु है जिस की रक्षा नाना प्रकार की वनस्पति लताओं का उदाहरण है जिन का विकास और उन्नति पृथ्वी के स्वाभाविक गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध दिशा में कार्य करने से होती है. इसी प्रकार समस्त विकास और उन्नति आराम आलस्य जैसी स्वभाविक वृत्तियों के विरुद्ध कर्मठता द्वारा ही होता है. इस व्यवस्था के द्वारा हमारे विकास और उन्नति की व्यवस्था के लिए हम नमन करते हैं , और जो हमारे अध्यवसयी कर्मठ आचरण के हमारा चित्त विचलित कर के सुचारु कार्य करने में बाधा रूपीशत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर छोड़ते है.

(सृष्टि के नियमानुसार हर मरणधर्मा जब तक प्रकृति के क्षय नियम के विरुद्ध सहज स्वभाव और सद्प्रेरणा से निज प्रयत्न द्वारा जन्मोपरांत वृद्धि और शारीरिक उन्नति द्वारा यौवन बल और उन्नति को प्राप्त करता है, वही काल के नियमानुसार भौतिक जीवन में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर भौतिकक्षय को जरावस्था से होते हुए मृत्यु को पाता है. परंतु अपने प्रयत्न द्वारा 'मृत्युर्मामृतं गमय' के लक्ष को प्राप्त करनेमें सदैव लगा रहता है) .

On the physical plain according to laws of nature Entropy tends to infinity. Progress and growth are products of negative Entropy. We are grateful for our growth and progress for being provided with the wisdom to operate by negative Entropy. We want to protect ourselves by distractions that form obstacles by diverting us from the path of living a life of hard work to make progress by negative Entropy, and leave the superior forces of Nature and society to deal with these distractions.

(All things born grow and make progress till they progress proceeds as programmed to peak out by negative entropy on physical plane. Inevitable march of time takes its toll by natural law of entropy tending to infinity and leads to result in extinction of the life born.)

1. येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।। **AV3.26.6**

पृथ्वी पर उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए सब दिशाओं की परिस्थितियों से सचेत रह कर ज्ञान और उत्तम वाणी के द्वारा बृहस्पति जीवन में उन्नति का साधन होता है. बृहस्पति हमारे सुख और आनंद की रक्षा करता है. उस के लिए हम बृहस्पति को नमन करते हैं. विद्वत्जन हमरे सुख और हर्ष केलिए सदैव ज्ञान का उपदेश करें और हम सदैव अग्निहोत्र द्वारा प्रगति करें .यहां पर अग्निहोत्र का प्रसिद्ध मंत्रः-

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते |तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ||भी इसी उपलक्ष से देखा जाता है.

The strategies that provide for our rising high in life are keen awareness about what is happening about us in all the directions. For this Brihaspati बृहस्पति knowledge and appropriate articulation are the enablers. Brihaspati provides for our comforts and happiness. We should always get wise education and counsel to this effect. We express our obeisance for this and dedicate Agnihotras for this. Here to the same effect reference can seen in very important Agnihotra mantra: – यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते |तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ||

6.ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षं इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.6**

भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए बृहस्पति का आश्रय मिलता है ,जो निष्कपट निश्छल उत्तन ज्ञान और वाणी द्वारा इसी प्रकार आवश्यक है जैसे मेघ से वर्षा के बाण पर्यावरण को शुद्ध और निर्मल बना कर हमारी रक्षा करते हैं.

हम इस व्यवस्था के प्रति नमस्कार करते हैं, इस प्रकसर हमें सुर्क्षा प्रदान करने के लिए नमस्कार करते हैं और जो ममारे इस मार्ग में शत्र्य रूपी बाधाएं होती हं उन्हें हम समाजिक ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं .

To attain great heights of success and progress we have dedicate ourselves to selfless wisdom and good articulate communication. Brihaspati is the lord of these faculties. Our conduct should be as free of dirt and pollutants as the environment made clean by good rains from the clouds. We are grateful to Nature for this order of things and dedicate our efforts to Him and leave the impediments in our path to be dealt with higher wisdom and justice of Nature and society.

LONG LIFE IN VEDAS

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

Long Life in Vedas

RV10.59

Integrating Ashtang Yog in life.

अष्टांग योग द्वारा दीर्घायु

ऋषिः – बन्धुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुर्गौपायनाः; बन्धु 'बध्नातिइति बंधुः' जो बांधता है वह बंधु है . जिस को बांधना सब से कठिन है उस को जो बांधताहै वह सच में बंधु है. किस का बांधना सब से कठिन है ? मन का. जो मन को बांधता है, इधर उधर नहीं भटकने नहीं देता वह 'बंधु' है . श्रुतबंधु वह बंधु जिस ने श्रुतियों- वेदों वेदों के ज्ञान से विप्र बन्धु अपने को विद्वान बंधु बनाया.गोप कहते हैं इंद्रियों को ,इंद्रियों का पालन करनेवाला गोपायन कहलाया. इस प्रकार मन को बांध लेने से इंद्रियों के व्यर्थ इधर उधर भटकने से

रोकने वाला – बन्धुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुर्गौपायनाः ऋषि कहलाया. ।आधुनिक भाषा में 'पातञ्जलअष्टांग योग' का उपदेश करने वाला ही हमारा सब से प्रिय बंधु के रूप में इस ऋग्वेदीय सूक्त का ऋषि है.

Rishi= Seer of this Sookt is

bandhuh shrut bandhuviprabandhugopaayanah ,bandhu is one who ties up in love and affection- Mind is the most difficult to tie up or control,Thus one who helps in tying up mind and prevents it from straying from its chosen straight path is Bandhu. This Bandhu is also

Shrut bandhuvipraBandhu – has made himself learned by imbibing guided by Vedicwisdom, He is also Gopayanah; Gopas are physical senses, by tying up and controlling the mind by the genius of Vedic wisdom physical sensuality is brought under control. To sum up This Seer propounds the wisdom of what is named as Patanjali's Ashtang Yog for welfare of humanity.

देवता: -1-3 निर्ऋतिः, 4 निर्ऋतिःसोमश्च, 5-6 असुनीतिः, 7 पृथिवी-द्वयन्तरिक्ष-सोम-

पूष-पथ्या-स्वस्तयः, द्यावापृथिवी, 10 (पूर्वार्धस्य) इन्द्र द्यावापृथिव्यः, ।

छंदः -त्रिष्टुप्, 8 पंक्ति, 9 महापंक्ति, 10 पंक्त्युत्तरा ।

प्रथम **4** मंत्रों की ध्रुव पंक्ति है 'परातरं सु निर्ऋति र्जिहाताम्'- दुर्गति हम से दूर हो जाए,पूर्णतया चली जाए.

First 4 mantras have a refrain line 'परातरं सु निर्ऋति र्जिहाताम्' निर्ऋति is described as lady of misfortune that entices people to lives devoted to sensual pleasures and forget about higher ideals in life. 'May this lady of misfortune go away far from us'

1.प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयः स्थातारेव क्रतुमता रथस्य ।

अध च्यवान उत्तवीत्यर्थं परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.1**

जैसे एक कुशल सारथी के रथ का यात्री सुदूर प्रदेश की लम्बी यात्रा कर के नए नए स्थानों का आनंद लेना चाहता है उसी तरह सद्बुद्धि से दीर्घायु प्राप्त करके नित्य ज्ञान वर्द्धन की साधना करें (धियो यो नः प्रचोदयात्) जिस से दुर्गति दूर चली जाए

Life of a devotee is to be blessed with enhanced life span for manifestationand realization of newer powers and wisdom, just like the passenger of car being driven by a skilful driver, wants to prolong his ride to visit and see newer places. Thus a person may desire to live longer as he has more powers and wisdom to acquire, that drives all the miseries and misfortunes far away.

2.सामन्नु राये निधिमन्न्वन्नं करामहे सु पुरुष श्रवांसि ।

ता नो विश्वानि जरिता ममत्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.2**

श्रद्धा से सामगायन, मंत्रोच्चार द्वारा यज्ञादि में हवि दे कर, उत्तम ज्ञान को श्रद्धा से धारण कर के अन्नादि समृद्धि के साधनों को प्राप्त कर के विश्व को आनन्दित करो जिस से दुर्गति दूर चली जाए

With great devotion Yajnas are performed by reciting mantras and singing hymn of Sam Ved. Great attention with faith is paid to wise counsel. Hard work is put in to obtain the material bounties and food. Thus life is sweetened and such a life drives away all the miseries and misfortunes

3.अभी ष्वर्यः पौंस्यैर्भवेम द्यौर्न भूमिं गिरयो नाज्रान् ।

ता नो विश्वानि जरिता चिकेत परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV10.59.3**

By our learning to live according to laws of the nature, just as Solar radiations enrich the entire earth, rains from clouds enrich the entire earth, by living a natural life style , all the opposing elements are overpowered by the blessings of the Almighty, and that drives all the miseries and misfortunes far away.

4.मो षु णोसोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.4**

We pray for the wisdom to follow a life style that ensures for us to behold the rising sun to bless us with long life by providing good health (Vitamin D) . With every passing day, our physical body may be aging but we continue to grow in strength of our wisdom that drives all the miseries and misfortunes far away.

Yoga in life योग साधना

5.असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः ।

रारन्धि नो सूर्यस्य संदृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व ।।**RV 10.59.5**

By wisdom of Dhyaan control the mind concentrate on desired goals in life. Make best utilisation of visible bounties of sun. Make best judicious use of fats to enhance your physical health.

{ On the subject of making judicious use of dietary fats following two Rig Ved directives provide health guidance that completely endorsed by modern science.;

1. ***1.** “ तयोरिद् घृतवत् पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः” **RV 1.22.14a***

Wise people consume fat bearing milk products cautiously.

1. ***2. a.** एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।घृतस्या धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययोवेतसो मध्य आसाम्॥ **RV 4.58.5***

From (human) heart emanates the ocean of thousands of warm streams (of blood) which carry in them golden colored particles shaped like bamboo plants (cholesterols), to fight the forces of diseases and self-degeneration in the human body.

(Cholesterol as seen under laboratory microscope are said to look like golden colored small elongated particles)

***2.b .**सम्यक स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तहृदा पूयमानाः।*

*एते अर्षन्त्पूर्मयो घृतस्य मृगाइव क्षिपणोरीष माणाः॥6॥ **RV 4.58.6***

Flowing Streams (of blood) in the (human) heart system uniformly in natural manner are like streams of light fluid, not thick-viscous and heavy, but like water, having the agility of a deer, which with its agile active operation provides for cleansing and purifying action in human body for its physical & mental well being of humanity.

2c. *सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।*

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठी भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥7॥ ***R.V. 4.58.7***

There are components of lipids which in red blood stream perform scavenging speedy action on the edges of their paths (the linings) of blood arteries to speed up the flow and maintain the blood pressure measure to desirable levels.

(This is a very clear reference to HDL-High Density Lipids, which

keeps the arteries clean and unclogged)



वेद मंत्र, वैदिक धर्म, हिन्दी

वेदों में प्रातः भ्रमण

DECEMBER 20, 2013 LEAVE A COMMENT

Morning Walk in Veda

14.2

स्योनाद् योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ ।

सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः ॥ AV 14.2.43

सुखप्रद शय्या से उठते हुए, आनंद चित्त से प्रेम मय हर्ष मनाते हुए, सुंदर आचरण से युक्त, श्रेष्ठ पुत्रादि संतान, उत्तम गौ, सुख सामग्री से युक्त घर में निवास करते हुए सुंदर प्रकाश युक्त प्रभात वेला का दीर्घायु के लिए सेवन करो.

प्रात: भ्रमण के लाभ

नवं वसान: सुरभि: सुवासा उदागां जीव उषसो विभाती: ।

आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि ॥ AV14.2.44

स्वच्छ नये जैसे आवास और परिधान कपड़े आदि के साथ स्वच्छ वायु में सांस लेने वाला मैं आलस्य जैसी बुरी आदतों से छुट कर, विशेष रूप से सुंदर लगने वाली प्रात: उषा काल में उठ कर अपने घर से निकल कर घूमने चल पड़ता हूं जैसे एक पक्षी अपने अण्डे में से निकल कर चल पड़ता है.

प्रात: भ्रमण के लाभ

शुम्भनी द्यावा पृथिवी अ न्तिसुम्ने महिव्रते ।

आप: सप्त सुस्रुवुदेवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहस: ॥ AV14.2.45

सुंदर प्रकृति ने मनुष्य को सुख देने का एक महाव्रत ले रखा है. उन जनों को जो जीवन में प्राकृतिक वातावरण के समीप रहते हैं सुख देने के लिए मानव शरीर में प्रवाहित होने वाले सात दैवीय जल तत्व हमारे दु:ख रूपि रोगों से छुड़ाते हैं .

Elements of Nature have avowed to make life comfortable and healthy for the species. Particularly the seven fluids that move around the human anatomy are specifically helped by Nature. Modern science confirms that presence of naturally created 'Schumann' electromagnetic field and negative ions generated by Nature play very significant roles in maintaining good physical and mental health of human beings.

(प्रात: कालीन उषा प्रकृति के सेवन द्वारा सुख देने वाले वे मानव शरीर के सात जल तत्व अथर्व वेद के निम्न मंत्र में बताए गए हैं .

(को आस्मिन्नापो व्यदधाद् विषूवृत: सिन्धुसृत्याय जाता:।

तीव्रा अरुणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवांची: पुरुषे तिरश्ची: ॥ AV 10.2.11

(भावार्थ) परमेश्वर ने मनुष्य में रस रक्तादि के रूप में (सप्तसिंधुओं) सात भिन्न भिन्न जलों को मानवशरीर में स्थापित किया है. वे अलग अलग प्रवाहित होते हैं . अतिशय रूप से – अलग अलग नदियों की तरह बहने के लिए उन का निर्माण गहरे लाल रंग के, ताम्बे के रंग के, धुएं के रंग इत्यादि के ये जल (रक्तादि) शरीर में ऊपर नीचे और तिरछे सब ओर आते जाते हैं.

ये सात जल तत्व आधुनिक शरीर शास्त्र के अनुसार निम्न बताए जाते हैं.

1. मस्तिष्क सुषुम्णा में प्रवाहित होने वाला रस (Cerebra –Spinal Fluid)

2. मुख लाला (Saliva)

3. पेट के पाचन रस (Digestive juices)

4. क्लोम ग्रन्थि रस जो पाचन में सहायक होते हैं (Pancreatic juices)

5. पित्त रस (liver Bile)

6. रक्त (Blood)

7. (Lymph)

ये सात रस मिल कर सप्त आपः = सप्त प्राणः – 5 ज्ञानेन्द्रियों, 1 मन और 1 बुद्धि का संचालन करते हैं.)

भ्रमण में पारस्परिक नमस्कार

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च ।

ये भूतस्य प्रचेतसस्तेभ्य इदमकरं नमः ॥ AV14.2.46

सूर्य इत्यादि प्राकृतिक देवताओं को, सब मिलने वाले मित्रों जनों को जो सम्पूर्ण भौतिक जगत को प्रस्तुत करते हैं हमारा नमन है. (भारतीय संस्कृति में प्रातः काल भ्रमण में जितने लोग मिलते हैं उन सब को यथायोग्य नमन करने की परम्परा इसी वेद मंत्र पर आधारित है)



ENGLISH, **SOCIAL REFORM**, वेद मंत्र, समाज सुधार, हिन्दी

COWS NUTRITION AND FOOD SECURITY IN VEDAS

DECEMBER 4, 2013 LEAVE A COMMENT

Cows Nutrition and Food Security

RV 6.54

ऋषिः -भारद्वाजो बार्हस्पत्यः , देवता पूषाः

1. सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥ ऋ**6.54.1**

Oh Pushan –Lord of Nutrition- lead us to the wisdom with clarity about our nutrition.

हे पूषन देवता, हमारी पोष्टिकता के लिये विस्तृत ज्ञान का उपदेश दो

2. समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँअभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ।। ऋ**6.54.2**

पूषन देवता के अनुसार गृहस्थों के लिए घरों मे गौपालन ही पौष्टिकता का अत्योत्तम साधन है.

It is the divine wisdom that a house cow is the perfect strategy for best of nutrition.

3. पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते ।नो अस्य व्यथते पविः ॥ ऋ **6.54.3**

The wheel of the chariot of nutrition by cows is never stuck in ground and comes to harm nor is there any trouble or suffering in its movement.(Cows go through a natural cycle of calving milk giving getting pregnant drying off and calving again. But no harm comes to the nutrition cycle and it does not suffer.)

गोपालन मं ग्याभन होने के कुछ समय पश्चात दूध की मात्रा कम हो सूख कर कर पुनः संतानोत्पत्ति का चक्र क्रम पूषन व्यवस्था में कोइ व्यवधान नहीं हैं.

4. यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ।। ऋ **6.54.4**

जो इस गोपालन यज्ञ में समर्पित भावना से गोसेवा करते हैं उन की पौष्टिकता में कभी कमी नहीं होती और उन की समृद्धि निश्चित होती है.

Those who dedicate themselves to taking care of their cows appropriately are blessed immensely with great riches.

5. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

हमें गोपालन का उत्तम ज्ञान और सुविधाएं प्राप्त हों जिस से हमारी पौष्टिकता और बल बना रहे

We pray to have the wisdom and means to protect and nurture our cows and horses appropriately to ensure good nutrition and strengths. ..

6. पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ।। ऋ**6.54.6**

यजमान की गोसेवा और स्तुति के फलस्वरूप गो दुग्ध से उत्तम शिक्षित सुंदर वाणी प्राप्त हो.

Dedicated well managed care of the cows provides excellent quality of milk and ensure amiable speech and temperaments.

7. माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे ।अथारिष्टाभिरा गहि ।। ऋ**6.54.7**

हमारी गौएं जो गोचर में स्वपोषन के लिए जाती हैं, किसी कुएं इत्यादि में गिर कर आहत न हों और सुरक्षितघर लौट आएं.

Cows as they go to pastures should be able to return safely without suffering any accidents there. (pastures should be well managed to ensure safety of the foraging cows.)

8. शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ।। ऋ **6.54.8**

विद्वत्जनों से पौष्टिकता के बारे मे ज्ञानप्राप्त करें जिस से निर्बलता दूर हो कर समृद्धि प्राप्त हो.

Learn the science of nutrition from experts to protect you from loss of vitality and have good life.

9. पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि।। ऋ**6.54.9**

उत्तम शिक्षा द्वारा उपयुक्त आहार के नियमों का सदैव पालन कना चाहिए.

By good learning and education, in the observance of good nutritional habits one should never be lax.

10. परि पूषा परस्ताध्दस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ।। ऋ **6.54.10**

जहां हम अपने दक्षता पूर्ण कर्म से पौष्टिकता के लिए उत्तम गोपालन और खाद्यान्न का प्रबंध करते हैं,वहां हमें साथ साथ जो पीछे कुछ त्रुटि के कारण अनिष्ट हो गया हो तो उसे भी सुधारने का कार्य करें.

On one hand while we exercise all our knowledge and skills in the management and production of excellent nutritive food products, on the other hand side by side we should also rectify if any mistakes have krept in our programs.

1. मातेति गामुपस्पृश्य जपन् गास्तु समश्नुते । वचोविदमिति त्वेतां जपन् वाचं समश्नुते ॥ ऋग्विधान 2.187

जिन की गोपालन द्वारा उत्तम गोवंश और गोपालने के परिणाम स्वरूप उत्तम वाणि की इच्छा हो वे गौ माता को स्पर्ष करते हुए 'माता रुद्राणाम, वचो विदम्' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **8.101** के **15, 16** मंत्र का जप करें

He who desires good Cows & obtain gracious speech by grace of cows should while touching the cow, utter Rigved Sookt 8.101.15-16 beginning with 'मातारुद्राणाम' & 'वचोविदम्' – Rigvidhaan 2.187

ENGLISH, SOCIAL REFORM, वेद मंत्र, समाज सुधार, हिन्दी

DAILY PROCEDURES & RITUALS IN GOSHALA

DECEMBER 4, 2013 LEAVE A COMMENT

Daily Procedures & Rituals in Goshala

वैदिक परम्परा में मानव जीवनोपयोगी उपदेश वेदों के आधार पर गृह्यसूत्रों में भिन्न भिन्न संस्कार में पाए जाते हैं. गौ को परिवार में एक सम्माननीय स्थान दिया जाता था. इस लिए गोपालन से सम्बंधित विषय भी गृह्यसूत्रों और विधान ग्रन्थों में मिलता है. इसी के आधार पर निम्न संकलन करने का प्रयास है.

In Vedas knowledge on all topics in general, is often found dispersed at various places. That Vedic knowledge is concisely collated and provided as Sanskars/Procedure in the Sutra literature. In this chapter the procedures connected with cows, available in Shraut Sutras & Grihya Sutras are being furnished below: गोपालन विधि गृह्य , अग्नि पुराण और कृषि पाराशर के अनुसार

1- Goyajna / Fumigation

2. Releasing cows for grazing in pastures.

3. Receiving cows on return, after grazing in Pastures

4. Putting the Nose Ring on Young Bull शूलगव: PA3.8.1 शांख्यायन श्रौत सूत्र , ऋग्वेद सूक्त 1.114

5. Releasing the selected Bull for servicing the herd.वृषोत्सर्ग PA3.9.1

6. After calving Procedure

7. Tattoo Marking the newborn calf, (with final object of breed improvements, and avoiding inbreeding)

8. Daily washing & drying on the string used for tying the calf & legs of cow during milking,(to emphasize the importance of Hygiene to control bacteria count)

9. Darsh Pourn Maseshthi (Training- evaluation of an integrated cow and agriculture system)

2.1.0.1 Fumigation Formulation (Daily Twice)

गन्धैरभ्युक्षणं गवां गन्धैरभ्युक्षणं गवाम्।। गो0 गृ0 सू03-6-15

Goshala should be kept clean. Twice both times morning &

evening fumigation should be carried out.

गोशाला को नित्य स्वच्छ रखते हुए, प्रातः और सायं दो बार सुगंधित सामग्री

से गो शाला मे अग्निहोत्र करना चाहिए.

अग्निपुराण 292(33) में गोशाला के लिए उपयुक्त सामग्री का विधान इस

प्रकार से मिलता है.

2.1.0.2. बलप्रदा विषाणां स्यादगृहे नाशाय धूपिकः।

देवदारु, वचा, मांसी, गुग्गुल, हिञ्गु सर्षपाः। अ0 पु0 292 (33)

Fumigate with Dev Daru देवदारु – (Himalyan Cedar) Vacha वच -(Sweet Flag Acorns Calamns) Jata Mansi जटामांसी (Indian Nard). Guggluगुग्गुल (Indian Bdellium), Hing हींग (Asafoetida) and Mustard सरसों के बीज (all to gather in powder form)का चूर्ण अग्नि में आहुति से पर्यावरण के सब रोगाणुओं को नष्ट करता है. to kill all air born & other organisms to cleanse the environment.

गो यज्ञ विषय (गौएं कहीं भी हों, घर पर अथवा गोचर में)

According to RigVidhaan –ऋग्विधानके अनुसार

(गौयज्ञ / गन्धैरभ्युक्षणं)

2.1.0.4. यस्तास्तु गोर्गोमयेन गुटिकानां सहस्रशः । हुत्वातां गामवाप्नोति घृतक्तानां हुताशने ॥ ऋग्विधान 2.34

गोमय (गोबर)की गुटकियां कंडे बना कर गौ घृत के साथ अग्निहोत्र में सहस्रों आहुति देने से उत्तम गौएं प्राप्त होती हैं.

He obtains cows by offering thousands of cow dung balls anointed with ghee in to Agnihotra fire.

2.1.2.0.

समाधि मनस्तेन विन्दते नैव गुह्यति ।

मयोभूर्वात इति तु गवां स्वत्ययने जपेत् ॥ ऋग्विधान **4.104**

यही विषय पर अग्नि पुराण 259.94 में भी मिलता है;

'मयोभूर्वात इत्येद्गवां स्वत्ययनं परम् । शाम्बरीमिन्द्रजालं वा मायामेतेन वारयेत् ॥अग्निपुराण 259.94 जपस्यैष विधि : प्रोक्तो हुते ज्ञेयो विशेषतः अग्निपुराण 259.96ब

इस के अनुसार गौ के मध्य में जिन मन्त्रों के जप का विधान है, जैसे ऋग्वेद**10.169** **'मयोभूर्वात' RV10.169** का उन से यज्ञ अग्निहोत्र ही करना चाहिए

RV10.169

4 शबरो कक्षीवतो । गावः । त्रिष्टुप् ।

Rishi the seer of this sookt represents a person dedicated to constant hard work to create शबरो –strength and wealth- through कक्षीवत Industriousness using innovative technologies with involvement of Cows& Agriculture . This is the literal meaning of the name given to the seer – composer -of this verse in

Rig Veda.

Title of this verse –Sookt is "COW".

2.1.2.1 .मयोभूर्वातो अभि वातूस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् ।
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र मृळ ।। **RV10.169.1**

Verdant bliss causing winds may waft over the cows. Feed for the Cows should provide them body building energy and disease resistance. Cows should be provided with such good quality of water to drink that would be recommended as best potable water for humans. The soil of earth on which cows tread should be clean and sanitised free of infection and harmful organisms.

2.1.2.2. याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामग्निरिष्टया नामानि वेद ।

या अङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ।। **RV10.169.2**

Cows are classified as per their looks and traits. (Modern Veterinary sciences categorize them as ‘phenotypes and genotypes’) Wise men know the usefulness of different categories of various cows and utilise these specific qualities for various applications and usefulness.

Rains fed pastures provide rich and pleasing environments for cows.

2.1.2.3. या देवेषु तन्व1मैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमाना: प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि ।। **RV10.169.3**

Wise men are aware of the significance of cow’s milk and cow enabled food for physical body health, nutrition and disease resistance. Wise men are aware of the intellect enhancing qualities of Cow’s milk that enables human mind to explore the entire universe in all its majesty. Our experts (*Indras*) should work in specialised institutions for development of cows to make available house hold cows with excellent milk producing and prolonged calving qualities.

2.1.2.4. प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवै: पितृभि: संविदानो ।

शिवा: सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सं सदेम ।। **RV 10.169.4**

Cows provide us with the continuity to join in growth of human society by building upon the attainments of our forefathers.

Cows have such great importance for our welfare and should be firmly established in our homes and institutions for human wellbeing.

2.1.3.0 ‘आ गावो’ इती सूक्तेन गोष्ठगा लोकमातरः । उपतिष्ठेद्व्रन्तीश्च य इच्छेत्ता सदाक्षयाः ।। ऋग्विधान **2.112.** सदैव गौ सम्पदा की समृद्धि हेतु ऋग्वेदके सूक्त **6.28** ‘आ गावो अग्नमुत’ का नित्य पाठ

करना चाहिए अथवा यज्ञ अग्निहोत्र करना चाहिए

Whoever wishes always to have everlasting cows the mother of the world should worship them with Rig Ved Sookt 6.28, while they are at home in Goshala in cow pen or Roaming about (in pastures). As per **RigVidhan 2-112**

Rig Veda Book 6 Hymn 28 same as Atharv 4.21

गौः देवता, ऋषिः भरद्वाजो बार्हस्पत्य

2.1.3.1.आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रत्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे|
प्रजावतीः पुरुरूपा इह सयुरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ||

For our health, welfare let the cows of all ages sizes & progeny come and stay in our home.

मेरे गोष्ठ में गौएं आगई हैं और उन्होंने मेरा कल्याण किया है, इसी प्रकार आगे भी चर कर वे मेरे इस गोष्ठ में लौट आया करें. हमें सदैव आनंदित करती हुइ इस गोष्ठ में रहें. अनेक बछडे बछियां दे कर और भी नाना प्रकार से हमारी समृद्धि के साधन बनें.

2.1.3.2 इन्द्र यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद ददाति न स्वं मुषायति!

भूयो रयिभिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खल्ये नि ददाति देवयुम !! Prosperous cow owners, who simply share their services & knowledge in welfare of all, without withholding any portion selfishly for themselves, gradually grow in wealth & prosperity.

इस गोपालन के यज्ञ द्वारा वृषभ इंद्र के स्वरूप में अपने लिए कुछ भी ना छुपाते हुवे (गोपालक यजमान के लिए)) अनेक कल्याण दायक उत्पाद और शिक्षाप्रद ज्ञान रूपि धन की बार बार वृद्धि करते हैं. (गोकृषि आधारित) उपलब्धियां कभी क्षीण नहीं होती.

2.1.3.3 न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति |

देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित ताभिः सचते गोपतिः सह ||ऋ**6.28.3**अथर्व**4.21.3**

Those cows whose owners give to all & share all the bounties of the cows, protect them so they do not get hurt, get stolen or suffer at the hands of unfriendly forces, stays with blessings of cows for all his life.

उसे (गोकृषि से उत्पन्न सम्पन्नता को) कोई चुरा नहीं सकता, धूर्तता से (आंख में धूल झोंकने वाला) भी उस पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता. गौओं के स्वामी में इतनी बुद्धि होती है कि किसी प्रलोभन के वश भी वह अपनी सम्पन्नता को छोडना नहीं चाहता.

(यह आधुनिक विकास के नाम पर व्यापारी तथा स्वार्थी वर्ग द्वारा भूमि, गौ इत्यादि का स्वामित्व पाने के लिए धन के प्रलोभन से गोकृषि के स्वामी को अपनी जीवन शैली छुडाने के प्रसंग में हैं)

2.1.3 4. न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृत्रमुप यन्ति ता अभि |

उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः || ऋ**6.28.4,** अथर्व **4.21.4**

These cows are not exposed to dusty battle field like or boisterous festivity like atmosphere, but they stroll fearlessly among peaceful environments. यह (गोकृषि आजीविका की) मानसिकता संस्कार युक्त , प्रशंसनीय और निर्भयता, आत्मविश्वास से युक्त होती है. इन संस्कारों को कुटिल हृदय वाले, संकीर्ण मानसिकता वाले , स्वार्थी बुद्धि विहीन जन प्राप्त नहीं करते. यह तो गौ के समीप विचरण करने की विशेष उपलब्द्धि है.

2.1.3.5. गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छन गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः |

इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीदधृदा मनसा चिदिन्द्रम ||ऋ**6.28.5,** अथर्व **4.21.1**

Cow's milk & its products are the first promoters of good motivation of temperament to have the blessings of a blissful life. Cows indeed are thus the very fortune & prosperity of man to become victorious like Indra.

गौएं जैसे प्रथम (अपने बछडे के) ऐश्वर्य के लिए दुग्ध प्रदान करती हैं वैसे ही गौओं द्वारा (दुग्ध और पञ्चगव्य से) धरती, वाणी, इंद्रियां स्वशरीर प्रकृति पर्यावरण और यजमान गोपालक परिवार पोषित हो कर, वश मे रहकर ऐसे सुशासित होते हैं जैसे इंद्र ही शासन कर रहा हो.

इस प्रकार हे बुद्धिमान जनों गौ स्वयम् में ही सम्पूर्ण ऐश्वर्य का साधन इंद्र है.

2.1.3.6.यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित कृणुथा सुप्रतीकम |

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद वो वय उच्यते सभासु ||ऋ**6.28.6,** अथर्व**4.21.6**

Oh Cows, sweeten our life and environments by your bounties, bring us health and strength physical and emotional. Weaken the ugly and unfriendly.

हे गौओ तुम दुर्बल को हृष्ट पुष्ट बना देती हो, तुम भद्दे को सुडौल बनाती हो, तुम वाणी में मधुरता स्थापित करके घर को कल्याणकारी और सुखप्रद बनाती हो, तुम्हारे वृद्धिकारक दुग्ध और अन्न का महत्व सभाओं में कहा जाता है.

2.1.3.7. प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः |
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः || ऋ**6.28.7,** अथर्व **4.21.7**

May cows feeding in good pasture, enjoying clean life giving drinking water, have great progeny of calves and not face harm by thieves hostile elements and diseases.

उत्तम संतान (बछडे बछडियों और गोपालकों वाली) उत्तम घास वाले प्रदेश मे चमकती हुइ, उत्तम पेयस्थलों में शुद्धजल को पीती हुइ, व्यवस्था स्थापित हो. गौ पर अत्याचार, हिंसा करने वाला , चुराने वाला कोइ न हो. यह समाज और राजा का दायित्व है.

(भूमण्डल पर राजा रुद्र का प्रतिनिधि होता है , इस मंत्र में देश की समृद्धि के लिए गोरक्षा और उत्तम गौसम्वर्धन के लिए राजा के दायित्व का उपदेश है.)
2.1.3.8. उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम् |
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ||ऋ**6.28.8**

May cohabitation with good bulls be the source of vitality of these cows to render their bounties for us.

हर क्षेत्र में इंद्र अपना पौरुष इस परम ऐश्वर्य दायक वृषभ से ही प्राप्त करते हैं . पृथ्वी पर, वाणियों मे राजनीति मे हर क्षेत्र में वृषभ का महत्व सब के ध्यान में रहना चाहिये.

2.1.4.0 यस्य नष्टं भवेत्किञ्च दद्रव्यं गोर्द्विपदं धनम् । नस्येद्वाध्वनि यो मोहात्संपूषन् स जपेन्निशि ॥ ऋग्विधान **2.121.** जिस का गोधन, परिवार जन, सम्पत्ति आदि की हानि हो गयी हो वह 'सं पूषन' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **6.54** का रात्रि में जप करें

He whose possessions: a cow, a man, money be lost should mutter

the Rig Ved Sookt 6.54 beginning with सं पूषन् **at night .**

RV 6.54

2.1.4.1 सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत् ॥ ऋ**6.54.1**

Oh Pushan –Lord of Nutrition- lead us to the wisdom with clarity about our nutrition.

हे पूषन देवता, हमारी पोष्टिकता के लिये विस्तृत ज्ञान का उपदेश दो

2.1.4.2 समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँअभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ।। ऋ**6.54.2**

पूषन देवता के अनुसार गृहस्थों के लिए घरों मे गौपालन ही पौष्टिकता का सर्वोत्तम साधन है.

It is the divine wisdom that a house cow is the perfect strategy for best of nutrition.

2.1.4.3 पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते ।नो अस्य व्यथते पविः ॥ ऋ **6.54.3** गोपालन मं ग्याभन होने के कुछ समय पश्चात दूध की मात्रा कम हो सूख कर कर पुनः संतानोत्पत्ति का चक्र क्रम पूषन व्यवस्था में कोइ व्यवधान नहीं हैं.

The wheel of the chariot of nutrition by cows is never stuck in ground and comes to harm nor is there any trouble or suffering in its movement.(Cows go through a natural cycle of calving milk giving getting pregnant drying off and calving again. But no harm comes to the nutrition cycle and it does not suffer.)

2.1.4.4. यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ।। ऋ **6.54.4**

जो इस गोपालन यज्ञ में समर्पित भावना से गोसेवा करते हैं उन की पौष्टिकता में कभी कमी नहीं होती और उन की समृद्धि निश्चित होती है.

Those who dedicate themselves to taking care of their cows appropriately are blessed immensely with great riches.

2.1.4.5. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः । पूषा वाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

हमें गोपालन का उत्तम ज्ञान विज्ञान और सुविधाएं प्राप्त हों जिस से हमारी पौष्टिकता और बल बना रहे

We pray to have the wisdom and means to protect and nurture our cows and horses appropriately to ensure good nutrition and strengths. ..

2.1.4.6. पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः । अस्माकं स्तुवतामुत ।। ऋ**6.54.6**

यजमान की गोसेवा और स्तुति के फलस्वरूप गो दुग्ध से उत्तम शिक्षित सुंदर वाणी और संस्कार प्राप्त होते हैं .

Dedicated well managed care of the cows provides excellent quality of milk and ensure civilized amiable speech and temperaments.

2.1.4.7. माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे ।अथारिष्टाभिरा गहि ।। ऋ**6.54.7**

हमारी गौएं जो गोचर में स्वपोषन के लिए जाती हैं, किसी कुएं इत्यादि में गिर कर आहत न हों और सुरक्षित घर लौट आएं.(गोचर सुव्यवस्थित हों)

Cows as they go to pastures should be able to return safely without suffering any accidents there. (Pastures should be well managed to ensure safety of the foraging cows.)

2.1.4.8. शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम् । ईशानं राय ईमहे ।। ऋ **6.54.8**

विद्वत्जनों से पौष्टिकता के बारे मे ज्ञानप्राप्त करें जिस से निर्बलता दूर हो कर समृद्धि प्राप्त हो.

Learn the science of nutrition from experts to protect you from loss of vitality and have good life.

2.1.4.9. पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन । स्तोतारस्त इह स्मसि।। ऋ**6.54.9** उत्तम शिक्षा द्वारा उपयुक्त आहार के नियमों का सदैव पालन कना चाहिए. (आहार संयम)

By good learning and education, in the observance of good nutritional habits one should never be lax.

2.1.4.10. परि पूषा परस्ताध्दस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ।। ऋ **6.54.10**

जहां हम अपने दक्षता पूर्ण कर्म से पौष्टिकता के लिए उत्तम गोपालन और खाद्यान्न का प्रबंध करतेहैं,वहां हमें साथ साथ जो पीछे कुछ त्रुटि के कारण अनिष्ट हो गया हो तो उसे भी सुधारने का कार्य करें.

On one hand while we exercise all our knowledge and skills in the management and production of excellent nutritive food products, onthe other hand side by side we should also rectify if any mistakes

have crept in our programs.

2.1.5.0 मातेति गामुपस्पृश्य जपन् गास्तु समश्नुते । वचोविदमिति त्वेतां जपन् वाचं समश्नुते ॥ ऋग्विधान 2.187

जिन की गोपालन द्वारा उत्तम गोवंश और गोपालन के परिणाम स्वरूप उत्तम वाणि की इच्छा हो वे गौ माता को स्पर्ष करते हुए 'माता रुद्राणाम, वचो विदम्' से आरम्भ होने वाले ऋग्वेद सूक्त **8.101** के **15, 16** मंत्र का जप करें

He who desires good Cows & obtain gracious speech by grace of cows should while touching the cow, utter Rigved Sookt 8.101.15-16 beginning with 'मातारुद्राणाम' & 'वचोविदम्' – Rigvidhaan 2.187

RV 8.101.15

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ।। ऋ **8.101.15**

RV8.101.16

वचोविदं वाचमुदीरयन्ती विश्वाभिर्धीभिरुपतिष्ठमानाम्।

देवीं देवेभ्यः पर्येयुषीं गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः ।।ऋ **8.101.16**

Tying of bells गौ के घण्टी बांधना

2-1-2 गृहादिग्नाशाय एष धूपो गँवा हितः।

घंटाचैव गँवा कार्या धूपानेन धूपिता।। अग्नि पु. **292 (34)**

After wards a bell should be tied around the necks of the cows toward off evil spirits. (It is now confirmed by modern science that proper ultrasonic waves have a significant role in controlling air borne viruses).

2.2–Releasing Cows For Feeding in Pastures.

Pasture Feeding *was a very well organised and managed activity according to our scriptures,* ***Cows should feed themselves freely in good pastures.***

Modern scientific investigations have endorsed this ancient Indian belief. The products of Pasture grass fed cows according to Vedas and Shastras provide complete nutrition for body and more importantly for the development of proper mental and intellectual qualities. Raw fresh from cow's udders Milk, its curd and Butter were known to prevent all Self Degenerating human body diseases and also acted as remedies for most of such human diseases

According to modern science, the actions of solar radiations are the only known source of the mysterious "Activator X" the precursors through which host of vitamin A and D like substances, provide nutritive actions for the human beings.

Modern medicine uses vitamin D additives, as the main ingredient for preventing loss of tissue regulatory functions of human body. Chronic Calcium metabolism disorders, which lead to Osteoporosis and inveterate skin problems like Psoriasis are caused by inadequate solar radiation exposures and not getting Cow's Milk.. Inadequate natural vitamin D is also linked to cancer of colon, prostate, breast and ovaries due to inability of the human body to regulate cell growth. Vitamin D metabolism also regulates insulin secretion in pancreas and thus has a role in controlling incidence of Diabetes type 2.

But only natural Vitamin D as found in Sun's rays and cow's milk is most effective. The efficacy of artificially produced and used as an additive is often a commercial tactics of very little proven efficacy..

Diseases and conditions caused by Vitamin D deficiency

1. *Osteoporoses- due to impaired calcium absorption.*

2. *Impaired cell growth-due to disturbed cell growth regulation resulting in cancers.*

3. *Rickets -in children (a bone wasting disease.)*

4. *Type2 Diabetes -due to impaired insulin Production.*

5. *Schizophrenia*

6. *Fibromyalgia*

7 Skin troubles like Psoriasis

The above note is based on "The Healing Power of sunlight and vitamin D" based on Dr. Michael Holick researches, Truth Publishing Public Release Document dated May 18th 2004.

Buffaloes Milk contains no natural vitamin D. It is not surprising that Indian Dairy Milk, which is nearly 80% buffalo milk, is totally devoid of natural Vitamin D. No amount of artificial Vitamin D additives in Dairy products, can replace natural vitamin D present in Cow's milk. It is therefore not surprising that urban population in India, which depends literally on Dairy milk is suffering from all the vitamin D deficiency diseases listed above. The addition of synthetic Vitamin D to Dairy milk has not proved its effectiveness in replacing natural solar radiation activated milk of a cow.

Only Pasture fed cow's milk and its products contain -Conjugated **Linoleic Acid-CLA.** *Such milk also has a very high proportion of* ***Omega 3 to Omega 6.*** *This makes only grass fed cowsङ milk act as protection and medicine against all self-degenerating diseases in Human body. These self degenerating diseases are such as Obesity, Cardiac problems, Diabetes, Arteriosclerosis, cancer etc. This explains the importance of pasture feeding. Latest researches carried out in University of Wisconsin and the NIH Bethesda in USA have confirmed this.*

(Appendices have been provided giving up-to-date scientific information on these topics)

Grihya Sutras describe the following Mantras to be recited when releasing cows for grazing.

2-2-1 इमा मे विश्वतो वीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतम्।

पूषञस्त्वं पर्यावर्तानष्टा आयन्तु नो गृहान्।। मं ब्रा **1.8.1** गो भिल गृह**0** सूक्त **3-6-1**

Oh Cow as you go out to graze in pastures, let this be the provider of Vigor for you to motivate the world for its sustenance and nutrition, without you causing any damage to the environments while grazing, and come back to your home safely.

2.3 Receiving the cows back after grazing.

Recite the following:-

2-3-1 प्रत्यागताः चरणभूमितो गृहागता गाः।

इमा मधुमती र्मह्य, मनष्टाः, पयसा सह।

गाव आज्यस्य मातर इहेमाः सन्तु भूयसीः।। **Go Gr Su 3-6-1Mantra Brahman 1-8-2**

Here returns from pastures, leaden with milk full of nutrients, fats, satisfied by roaming freely for our good fortune.

2-3-2 आगावों अग्मन्नुत भद्रमक्रन् त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।प्रजावतीः पुरुरुपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वी रुषसो दुहानाः ।। **RV 6-28-1**

Welcome to cows making pleasant sounds, laden with nourishing milk, bearing and supporting lot of progeny, of various colors, and with good record of high productivities.

2-3-3 परिपूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्। पुनर्नो नष्टमाजतु।। **RV 6.54.10**

Let Pusha the protector not only push you from behind but from also from all sides, to hold our cows in protection from any fatalities.

2.4.1 About Heifers बछियों के बारे में

2.4.1.1 RV 3-55-16 Raise heifers without stress and separately

आ धेनवो धुन्यन्तामशिश्वीः सबर्दुधाः शशया अप्रदुग्धाः। नव्यानव्या युवतयो भवन्तिर्महद् देवानामसुरत्वमेकम् ।। ऋ **3-55-16**

With potential to meet our expectations of providing their bounties, the indolent looking , unstrained with hard work stress free young heifers ie without any offspring , turn in to daily milk providing excellent cows, by the blessing of gods.(There also a message here that heifers should be segregated from milk giving cows and raised under stress free conditions.)

2 .4.2 Putting Nose Ring on Young Bulls. नासाभेद ककिलमानकथनम

2-4-2-1 चतुर्थे ब्दे तृतीय ब्दे यदा वत्सो दृढो भवेत।

तदा नासाऽस्य भेत्तत्वा नैव प्राग् दुर्बलस्य च।।पाराशर कृषीशासनम।।**16**।।

In the 4th year or 3rd year never less than three years depending upon good body condition, the male calve is to be fitted with a nose ring by piercing the nose.

(Breeding Soundness Evaluation formed a very elaborate system in directives given. Visible physical features of body, including shape and size of testicles, the past records of productivity of the lineage were all considered. Inbreeding was avoided by observing elaborate systems of pedigree recognition and tattoo marking the new born calves.

2.4.2..2 नासाभेद ककीलमानकथनम्।।

नासाभेदन कीलस्तु खदिरो बाथ शैशपः।।

द्वादशाञ्गुलकः कार्य स्तज्ज्ञै स्तैर्नस एव सः।। पाराशर कृषीशासनम्।।**17**।।

The needle for nose piercing should me made of wood of khair (Accacia) Khair or Shisham (Dalberfia Sissoo Rokb. About 12 anguls (Nine inches) long. Only an experienced person should perform the operation.

2. 5 Releasing Bull for servicing the Herd. वृषोत्सर्

2.5.0 Avoid inbreeding वृषभ दूसरे कुल मे कार्य करे

2.5.0.1 RV 3.55.17

यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन यूथ नि दधातिरेतः।

स हि क्षपवान्त्स भगः स राज महद् देवानामसुरत्वमेकम् ।। ऋ **3.55.17**

The roaring breeding bull is all powerful and very able, but this bull roars and deposits its semen in a different herd, this is very important tradition of nature.

यह वृषभ अत्यन्त सामर्थ्यवान है, परन्तु इसे अपना वीर्य दूसरे वंश में जा कर स्थापित करना है। यह देवताओं का एक बड़ा महत्वशाली विधान है।

2.5.1 कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यात्र रेवत्या वा ऽऽश्रवयुजस्य। पास्कर गृह सूत्र **3-9-3**

Bulls should be released on full moon of kartik or revati Nakshatra of Ashwin month.

2-5-2

मधये गवात्र सुसमिद्धमग्निं कृत्वाऽऽज्य संस्कृत्य हरितिरिति षट् जुहोति प्रतिमन्त्रम्।। पागृसू **3-9-4**

Perform Agnihotra, among the cows with Yajurved Mantras as given here,. Use Cow Ghee for the Agnihotra.

(वोषट् ***VOUSHUT*** **is an offering in to the sacred fire while standing, whereas** ***SWAHA*** **is an offering made while sitting. This point is to be noted that among the cows these offerings made in to the fire may be given while standing.)**

वृषोत्सर्ग यज्ञ- आहुतियां

2.5.2.1 इह रतिः स्वाहा ।। पागृस **3.9.4.1**

इह रमध्वं स्वाहा ।। पागृसू **3.9.4.2**

इह धृतिः स्वाहा ।। पागृसू **3.9.4.3**

इह स्वधृतिः स्वाहा ।।पागृसू **3.9.4.4**

उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् स्वाहा

।। पागृसू **3.9.4.5**

2.5.5.2 3.9.4.6 रायस्पोषमस्मासुदीधरत् स्वाहा

।।**पागृसू 3.9.4.6**

गोशाला यज्ञ

2.5.3Yaju 3.5 भूर्भुवः स्वः द्यौरिव भूम्ना पृथिवी वरिम्णा

तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।। यजु **3।5**

2.5.4 Yaju3.6 समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोदयतिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ।। यजु **3।1**

2.5.5Yaju3.2 सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ।। यजु**3।2**

2.5.6Yaju3.3 तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचायविष्ठ्य ।।यजु**3।3**

2.5.7Yaju 3.4 उप त्वाग्ने हविष्मतीचीर्यन्तु हर्यत ।जुषस्य समिधो मम।। यजु**3।4**

2.5.8Yaju3.6 आयं गौः पृश्निक्रमीदसदन् मातर पुरः । पितर च प्रयन्त्स्वः।। यजु**3।6**

2.5.9Yaju3.7 अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन् महिषो दिवम् ।। यजु**3।7**

2.5.10Yaju3.9 अग्निर्ज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा

सूर्यो ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा ।

अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा ।

सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वच्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ।। यजु

2.5.11Yaju3.10 सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।

जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ।

सजुर्देवेन सवित्रासजूरुषसेन्द्रवत्या ।

जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।यजु **3|10**

2.5.12Yaju3.21रेवतीमध्वमस्मिनयोनावस्मिनगोष्ठेऽस्मिंल्लोकेऽस्मिन् क्षये । इहैव स्त मापगात ।। यजु**3|21**

2.5.13Yaju3.22 संहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन । उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्द्धिया वयम्। नमो भरन्तऽएमसि ।।यजु**3|22**

2.5.14Yaju3.23 राजन्तमध्वराणा ग़ोपांमृतस्य दीदिवम् । वर्द्धमानं स्वे दमे ।। यजु**3|23**

2.5.15Yaju3.24 स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।सचस्वा नः स्वस्तये ।।यजु**3|24**

2.5.16Yaju3.35 तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्।।यजु**3|35**

2.5.18 RV6.54.5 पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषावाजं सनोतु नः ।। ऋ **6.54.5**

2-5-19 After the Agnihota Rudra Jap is recited.

रूद्रान्

जपित्वैकवर्णं द्विवर्णंवा यो वा यूथं छादयति यं वा यूथं छादये द्रोहतितो वैव स्यात्। सर्वाण्ग़ैरुपतो जीववत्सायाः पयस्विन्यः पुत्रो यूथे च रुप स्वित्तमः स्यात मलङ्कृत्य यूथे मुख्याश्च तस्त्रो वत्सतर्यस्ताश्चालञ्कृत्य-एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडन्तीश्चरथ प्रिये ॥

यजुर्वेद **16** के मंत्रों से रुद्र जप करे

मा नः सात्प्रजनुषा ऽसुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेमेत्येतयै वोत्सृजेरन्।। पागृसू **3-9-6**

Rig Vidhan of lays down Rudra jap as consisting of Rigved 1.43 and 1.114, 2.33 and 7.46 chapters. is recited.

ऋ1.43RV1.43

1. Shankaayan shraut sootra prescribes recitation of this hymn in Shoolgava Ceremony to ward off ailments and troubles of domestic animals- cows, horses, and also family.

1. Ashwalayan Grih sootra prescribes hymn for attaining powers and achieving one’s desires.

The seer of this hymn here is Kanw-Super intelligent – one who listens to everything very attentively. That is the reason that his every action is based on proper analysis and appropriate. Actions under him are known for beauty, charm, grace, grandeur, sublimity. He

personifies venerable sublime Enlightenment, Intelligence, Resolution and Determination.

। रुद्रः, मित्रावरुणौ च, 7-9सोमः। गायत्री, 9 अनुष्टुप् । ऋ**1.43RV1.43** रु द्र

The seer of this hymn here is Kanw-Super intelligent – one who listens to everything very attentively. That is the reason that his every action is based on proper analysis and appropriate. Actions under him are known for beauty, charm, grace, grandeur, sublimity. He

personifies venerable sublime Enlightenment, Intelligence, Resolution and Determination.

। रुद्रः, मित्रावरुणौ च, 7-9सोमः। गायत्री, 9 अनुष्टुप् ।

1.कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे ।

वोचेम शंतमं हृदे ।। **RV1.43.1**

Let us invoke in the intellect to promote in our hearts the shower of blessings of the great Rudra for our well being For providing healthy disease free life, and to give comfort to our hearts, wise men tell about the appropriate actions to be taken and precautions observed for ensuring disease free healthy life at different times and situations.

हम बड़े बुद्धिमान् (अभीष्टों के लिए) अत्यन्त मेघ बरसाने वाले महाबली रुद्र के लिए हृदय से अत्यन्त सुख देने वाले किस (वचन) को कहें?

(रुद्र परमात्मा की वह शक्ति है जिस का विकास बिजली की गरज के समान चमत्कारी होता है । रुद्र मनुष्यों के लिए वर्षा इत्यादि के द्वारा वायुमंडल से और वनस्पतियों द्वारा रोग को नाश करने वाली औषधियों को देने वाले हैं । भयंकर होने पर भी रुद्र अपने आर्य्य उपासकों के लिए अत्यन्त मृदु हैं ।) ऋ संहिता- शिवनाथ आहिताग्नि से

रोग रहित स्वस्थ जीवन के हेतु, बुद्धिमान जन, रुद्र के रोगाणुओं को नष्ट करने और हमारे स्वास्थ्य के लिए भिन्न भिन्न परिस्थितियों में भिन्न भिन्न समय पर हमारे आचार व्यवहारका उपदेश करते हैं.

2.यथा नो अदितिः करत् पश्वे नृभ्यो यथा गवे ।

यथा तोकाय रुद्रियम् ।।**RV 1.43.2**

By which the environments may be (induced) to grant the gifts of Rudra to our animals, our people, our cows and our progeny.Like what a mother of new born desires, like what a keeper of cows desires, like what a king desires for his people, like what a farmer desires while working with soil on the farm the divine wisdom of Rudra (about sanitation and destroying of

disease carrying germs pathogens) may be made available to preserve the health and wellbeing. (of all).

जिस के द्वारा हमारे पशु, गौ, समाज, सन्तान सब रुद्र सम्बन्धित भेषज से निरोग स्वस्थ हों। माता जिस प्रकार अपने नवजात शिषु के लिए , सूर्य पृथ्वी और वनस्पति के लिए उत्तम, राजा अपनी प्रजा और गौवों के कल्याण के लिए स्वास्थ्य प्रद रोग रहित परिस्थितियां बनाते हैं, उस रुद्र का विशेष ज्ञान उपलब्ध कराना चाहिए.

3.यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति ।

यथा विश्वे सजोषसः ।। **1.43.3**

May we learn to get familiar with the मित्रः probiotics the health giving nutritive,वरुण „ – the omnipresent microorganisms like viruses, and the रुद्रः disease destroying agents , for our good health. Where all natural elements are friendly and provide disease free healthy environments, they by Rudra render all our habitat safe and healthy.

जिस से हम को मित्र वरुण रुद्र सब देवता समान प्रीति वाले हों समस्त प्राकृतिक सम्पदाएं, पर्यावरण, रुद्र कि कृपा से रोग रहित स्वास्थ्य प्रद हमारे मित्र वत हों

4.गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् ।

तच्छंयोः सुम्नमीमहे ।। **1.43.4**

Rudra bless us through the *gaathpatim* traditional folklore wisdom to avoid disease and maintain healthy environments for a peaceful society and *jalaash bheshajam* to turn waters in to medicines for our total wellbeing.

HHWilson in his Ved Bhashya comments on *jalashbheshajamas* follows " he who has medicament conferring delight; from *ja*,one born and *lasa*, happiness; an unusual word except in a compound form, as *abhlasha*, which is of current use; or it may mean , sprung fromwater(*jala*), all vegetables depending over water for their growth.and temperaments pure and *jalaash bheshajam* ability to turn waters in to medicines for our total wellbeing.

(This makes clear reference to *jalaash* being specially treated water endowed with enhanced medicinal curative properties . Modern scientists of Biophysics call such water 'activated water'. This water is being increasingly prepared in Biodynamic Agriculture of Rudolph Steiner and Compost Tea preparations. Activated water being made by electronic devices is increasingly finding use for drinking purposes. Dairy industry is using Activated Water to enhance milk production of the cows by more than 20%. Ganges water in its pristine purity is the naturally formed jalaash i.e. Activated Water and is well known for its innumerable divine qualities.)

(This is clear reference to *jalaash* being a preparation of what modern scientists of Biophysics call activated water)

(हम)स्तुति के पालक यज्ञ के स्वामी सुख रूप औषधि से युक्त रुद्र से उस रोग शान्ति (और) सुख को मांगते हैं। जलाष विषय- महान वैज्ञानिक न्यूटन ने कहा था कि वह अपने वैज्ञानिक अनुसन्धान करते हुए ऐसा अनुभव करता है कि वह प्रकृति के एक विशाल समुद्र के तट पर केवल छोटे छोटे पत्थरों से एक बालक की तरह खेल रहा है। वेदों मे ऋषियों के विज्ञानकी जान कारी इतनी विस्मय कारी है कि

आधुनिक विज्ञान सचमुच में अभी छोटे छोटे पत्थरों से ही खेल रहा है। जलाष के सन्दर्भ में यही कहा जा सकता है। पवित्र गंगा जल में रोग नाशक तत्व क्या हैं और गंगा जल किस प्रकार सामान्य पानी से भिन्न है यह अभी तक विश्व भर के वैज्ञानिक पता नहीं कर सके हैं। आधुनिक विज्ञान **Activated Water** के विस्मयकारी परिणामों का अभी अध्ययन कर रहा है। अधिकांश वैज्ञानिक इसे **pseudo science** की संज्ञा देते हैं। परन्तु होम्यो पैथी और ओस्ट्रियन वैज्ञानिक रुडोल्फ़ स्टाइनर के बायोडायनमिक पदार्थों की उपयोगिता अब अमेरिका की सरकारी कृषि नीति में आते हैं।

जलाष शब्द पर विभिन्न वेद भाष्य, निरुक्त इत्यादि ग्रन्थों बहुत कम ज्ञान मिलता है। Monier Williams के अनुसार जलाष से **mechanically subdued water** अर्थ बनता है। इस प्रकार कृष्टी द्वारा उपचारित जल को जलाष कहा जा सकता है । इस प्रकार उपचारित जल को **Activated Water**कहा जाता है। यही वैदिक भाषा में जलाष कहलाता है। विशेष – गोमूत्ररूपेण जलेन। जलाषमिति उदकनामसु पठितम्। जलाष को रुद्र संबन्धी भेषज के लिए अन्यत्र भी श्रुति में कहा गया है— "गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्" (ऋ **1।43।4**। कौ**0** सू**0(31/11)** विनियोग के अनुसार बिना मुख वाले फ़ोड़े फुन्सी आदि व्रणों को गोमूत्र से धो कर उस का उपलेप करना चाहिए। गो मूत्र इस प्रकार रोगों की अव्यर्थ महोषधि है यहा तक कि उस का नियमित सेवन कुष्ट आदि के घावों को भी ठीक कर देता है। आयुर्वेद में इस के गुणवर्णन करते हुए लिखा है– " शूल गुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षि-मुखरोजित्।" तथा च — कासं सकुष्ठ-जठरकेड्मिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपि पीतमपाकरोति (भाव नि**0** मूत्र वर्ग **4)**

रुद्र के प्रभाव से हमारा पेय जल ओषधि रूप बने, और समाज में उच्च विचारो के प्रचार से जीवन सुख शांति मय बने. (पेय के लिए शुद्ध पवित्र ओषधि गंगा जल उपलब्ध रहे)

5.यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।

श्रेष्ठो देवानां वसुः ।। **1.43.5**

Establish the ever dazzling golden sun to provide the best naturally available health ensuring gifts. (Recognize the supreme position of ever dazzling golden sun as protector and enabler of entire life and habitat on this planet.

(Modern science has come to the conclusion that Solar energy is the supreme source of disinfection, provider of Vitamin D, and photosynthesis to create carotenoids and numerous nutritive elements for life.

Modern science confirms that solar light is the most sustainable sanitizer. Solar radiations only by photosynthesis are the precursor of Vitamin D, Essential Fatty Acids and Carotenoids the best natural antioxidants that ensure disease free healthy life. It is now realized that newer diseases such as Cardiac heart problems, diabetes, eye problems cataract, age related macular degeneration are spreading like epidemics in the community due to non availability of good cow milk and organic food)

देदीप्यमान सूर्य के प्रभाव से समस्त वसुः -निवास,गो दुग्ध इत्यादि उत्तम वीर्य प्रदाता हो कर श्रेष्ठ साधन प्रदान करें.

(आधुनिक विज्ञान मानता है कि प्रात:कालीन सूर्य नमस्कार सूर्य अर्चना का मानव स्वास्थ्य पर विटामिन डी द्वारा और सूर्य के प्रभाव से वनस्पति, हरे चारे पर पोषित गो दुग्ध मे ओषधि गुण प्राप्त होते हैं. आधुनिक जीवन शैलि मे सूर्य भगवानसे दूर रह कर, गौओं को गोचर में हरे

चारे से वन्चित रखने से ही समाज में सब मधुमेह, हृदय, नेत्र रोग इत्यादि महामारि की तरह फैल रहे हैं)

6.शं नो करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये ।

नृभ्यो नारिभ्यो गवे ।। **1.43.6**

Sun similarly provides beneficial effects to all the domestic animals the sheep, goats, kings , community and cows with health providing healthy peace loving temperaments. Natural straight path is the right and easy path to follow for health and welfare of all, in all matters of living connected with families of horses, *meshaaya* small rumens animals , men, women and cows.

(It is interesting to note here that Veda is classifying horses and goats, sheep etc separately from Humans and Cows in that order, for welfare in management practices. Cows occupy the highest position in this order of priorities, Horses, Goats, Sheep, Men Women and then Cows. Cows were not bracketed with animals but were treated in the category of human beings and placed above humans. It is also noted that Buffalo was not admitted as a domesticated animal. This is a clue to how cow gets elevated to the status of universal mother in Indian tradition.)

उसी प्रकार उत्तम सूर्य ज्योति से सब भेड,बकरियां, राजा, प्रजा, गौएं सुख शांति प्रदाता हों.

7.अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् ।

महि श्रवस्तुविनृम्णम् ।। **1.43.7**

For the entire community ensure availability of excellent cow milk and cow enabled organic food to provide excellent intellects and peace loving temperaments.

समस्त समाज के लिए उत्तम गोदुग्ध और गो आधारित जैविक कृषि द्वारा उपलब्ध अन्न से कुशाग्र बुद्धि, और सौम्य पकृति के समाजका निर्माण करो.

8.मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त ।

आ न इन्दो वाजे भज ।। **1.43.8**

Develop the strength to defeat the antisocial, selfish, consumerist, non charitable, greedy, selfish life styles from community.

असमाजिक विचारों,प्रवृत्तियों, अयज्ञशीलता, अदानशीलता, भोगवादिता के उन्मूलन की शक्ति सामर्थ्य उत्पन्न करो.

9. यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।

मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ।। **1.43.9**

Thus by establishing Vedas in the mind and temperament of the society excellent peaceful world may evolve.

जिस से समस्त प्रजा की मूर्धा चेतना अमृत मयि वेदों के उपदेशों से आभूषित हो कर अत्युत्तम संसार समाज का निर्माण करें.

Rudra Jap रुद्र जप **RV2.33 12 to 15**

कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रति ननानाम रुद्रोपयन्तम्।

गृणीषे स्तुतस्त्वं ं भेषजा रास्यस्मे ।। **2.33.12**

या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमावृषणो या मयोभु।

यानि मनुरवृणीता पिता नस्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि ।। **2.33.13**

परि णो हेतीरुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात्।

अव स्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।। **2.33.14**

एवा बभ्रो वृषभ चेकितान यथा देव न हृणीषे न हंसि ।

हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।। **2.33.15**

RV7.46

ऋषिः मैत्रावरणिर्वासिष्ट देवता रुद्रः :

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने।

अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः।। ७.०४६.०१

स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति।

अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव।। ७.०४६.०२

या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तु नः।

सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः।। ७.०४६.०३

मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य।

आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ७.०४६.०४

Afterwards with recitation of the following mantras the young Bull along with at least four young heifers is marked with decorations and released.

To prevent inbreeding, for the group of cows, which one bull will cover, Vedas and Grihya Sutra, talk at length about pedigree, Phenotypes (the physical features) and Genotypes (the genetic traits with regard to producing good quantity of milk, cool and social temperaments of the cows, hardiness etc and the different breeds. Selection of the bull is also decided by giving due considerations of Size Match. **These instructions are given at one place in Grihya Sutras.**

Complete text of Paraskar Grihya Sutram (HariHar Bhashyam) is reproduced below:-

HariHar Bhashyanam हरिहर भाष्य-‘रुद्रान…जेरन्’।

रूद्रान्नामस्त इत्यधयायाम्नातान् जपित्वा जपधर्मेण पठित्वा

अत्र शूलगवातिदेशप्राप्तोऽपि रुद्र जपविधिः प्रथमोत्तमानुवाकजअविकल्पनिवृत्यर्थः जपावसरज्ञापनार्थो वा। तन्न। अपूर्व एवायम्, जप्यत्वेनाप्राप्तत्वात्। प्रकृतौ हि रुद्राणां पशूपस्थाने करणत्वेन विहितत्वात्। एक एव शुक्लादिवर्णो रूपं यस्य स एक वर्णः तम्। अथवा द्वो वर्णौ यस्य स द्विवर्णः तं वृणम्। एवं वर्ण विशेष नियमम भिधायाध्ुना वृषस्य परिमाण विशेष नियममाह-यो वृषो यूथं कृत्स्नं वर्ग छादयति स्वपरिमाणेनाधाः करोति तं वा यं वृषं यूथं वर्गश्च्छादयेत् अधाः कुर्यात् तं वा यूथादधिकपरिमाणं वा न्यूनपरिमाणं वेत्यर्थः। रोहितो लोहित एव वा यः स्यात्, एवकारेण लोहितस्य एकवर्णद्विवर्णाभ्यां प्राशस्त्यमुच्यते, पुनः कीदृक्? सवैर्ङ्गैरूपेतः समन्वितः न पुनर्हीनांगोऽधिकांगो वा, तथा जीवाः प्राणवन्तो वत्साः प्रसूतिर्यस्याः सा जीववत्सा तस्या गौः पुत्राः। तथा पयः क्षीरं ¤É½Ö±É विद्यते यस्याः सा पयस्विनी तस्या गोः पुत्रः। तथा यूथे वर्गे विषये रूपमस्यास्तीति रूपस्वी अतिशयेन रूपस्वी रूपस्वित्तमः वृणः स्यात् तमुक्तगुण विशिष्टं वृषमलंकृत्य वस्त्रमाल्यानुलेपहेमपट्टिकाग्रैवेयकघण्टादिभिर्वृषोचितभूषणैर्भूषयित्वा न केवलं वृषमात्रं ताश्च वत्सतरीरप्यलंकृत्य, कीदृशीः? याः यूथे स्ववर्गे मुख्याः गुणैः श्रेष्ठा वत्सतर्यः कति? चतस्र चतुःसङ्ख्योपेतास्ताः, एवं युवानमित्येतयर्चा उत्सृजेरन् त्यजेयुः।। पा गृ सूक्त **3-9-6**

नभ्यस्तमभिमन्त्रायते मयोभूरित्य नुवाकरोषेण।। पा गृ स् **3-9-7**

This is followed by recitation of RigVed 10-169 Go Sukta of four mantras (which is as follows) while releasing the young bull with the cows

2.5-20 RV 10-169

RV 10-169-1 मयोभूर्वातो अभिवातूस्रा। ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम।

पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र मृळ।। ऋ **10.169.1**

2.5.21

RV 10.169.2 याः सरूपा विरूपा एक रूपा या सामग्निरि ष्टया नामानि वेद।

यअङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्मयच्छ।। ऋ **10.169.2**

2.5.22

RV10.69.3 या देवेषु तन्व मैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद।

ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि ।। ऋ **10.169.3**

2.5.23

RV 10.169.4 प्रजापति र्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैः पितृभिः संविदानः।

शिवाः सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सं सदेम।। ऋ **10.169.4**

Finally the following mantras are recited while giving offerings into yagyani.

तत् पश्चाद इन मत्रों से आहुति दें

2-5-24

shukla yaju 18-45 to 50

समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरसि मा वाहि स्वाहा ।

मारुतोऽसि मरुतां गणः श्म्भूर्मयोभूरसि मा वाहि स्वाहा ।

अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरसि मा वाहि स्वाहा।। यजु **18-45**

यास्ते अग्ने सूर्यो रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः।

ताभिर्नो अऽद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि स्वाह ।। यजु **18-46**

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वेषु य रुचः ।

इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धत्त बृहस्से ।।यजु **18-47**

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुच$ राजसु नस्कृधि ।

रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ।। यजु **18-48**

तत्व यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेड्मानो वरुणेह बोध्यरुश$ स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा ।। यजु **18-49**

स्वर्ण धर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा

स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यस्वाहा ।। यजु **18-50**

2.2.6 Procedure on calving पुष्टि कर्म

पृष्टिकामः प्रथम जातस्य वत्सस्य प्राङ्गमातुः प्रलेहनाज्जिह्वया ललाट मुल्लिमह्य निगिरेद् गवा ञ श्लेष्मा सीति।।**3**।। गोपालन विधान-गोभिल गृह सूक्त**3।6।3**

First thing a cow does on delivering a calf is to lick the new born with her tongue starting from its face, to clean it and swallows all the coverings. She may be helped in this operation by the persons attending to her.

पुष्टिकाम एव संप्रजातासु निशायांगोष्ठेऽग्निमुपसमाधाय विलयनं जुहुयात् संगृहाणेति ।।**4**।।

गो**0** गृ **0**सू**0 3।6।4**

For the protection and providing strength to the newborn and mother, (if it is night time a fire should be lit. Also homa/Agnihotra should be performed by giving special oblation of cowsङ **milk mixed with curd while reciting the following mantra.**

2-6-1 संग्रहण संगृहाण ये जाताः पशवो मम।

पूषैषां शर्म यच्छतु यथा जीवन्तो अप्ययात। मंत्रा **1।8।4**

Significance of the cow licking the newly born is to clean and to help the calf to gain in strength to stand up. The fire is made in the vicinity, (Agnihotra Fire performs this function automatically) for protection from stray predator attackers.

Fumigated environment provides, to calf and calving cow for better health. It is for modern science to investigate the beneficial effects of making specific oblations of cow milk mixed with curds into fire.

This homa is also part of Darsh Pourn Maseshthi and is known by the same title Pushti karan by Sannaya Havi- सान्नाय हवि **(milk + curd) mixture in** दर्शपोर्ण मासेष्टिस्र्. This clearly confirms the link of दर्शपोर्णमासेष्टि in every day life

2.7 Tatoo Marking the New Born

(for good breeding practice)

Vedas and subsequent Indian traditions show remarkable scientific understanding of genetics. Vedas very clearly say that the same considerations of GOTRA apply to Cows as

to Human beings for maintaining good progeny. To avoid inbreeding the inbreeding coefficient of less than unity is planned, by Heterozygous mating. A six generations gap, in mating is planned to achieve this by the system of Gotras and Sapinda considerations. By the seventh generation, inbreeding coefficient drops to below unity.

Modern Veterinary Science confirms that for every one percent increase in the inbreeding coefficient the milk yield among cows registers a drop of up to 10%. Lack of importance given to the Breeding Bulls has been one of the main reasons for declining milk yields and population of good Indian Cows. The other reasons are lack of adequate feed, clean drinking water , sanitary condition of the cows and love and affection practiced in the care of cows.

2.7.1 AV6.141.2 लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि।

अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु ।। अथर्व वेद **6-141-2**

-

2.7-2 पुष्टि काम एव संजाता स्वौदुम्बरेणासिना वत्स मिथुन योर्लक्षणं

करोति पुत्रसएवाग्रेऽथ स्त्रिया भुवनमसि साहस्रमिति। गो**0** गृ**0** सू**0 3-6-5**

For improvements of the cows by recognizing, their traits for further strengthening breed of the future progeny, relevant marks are tattooed on the ears of the new born, by an instrument made of copper.

(Asper BhavPrakash Nighantu Udumbar also means copper).

Then recite "भुवनमसि साहस्रमिति**"* as given here.**

2.7.3 या फाल्गुन्या उत्तरामावस्या सा रे वत्या संपद्यते तस्याम ङ्कलक्षणनि।।

शाञ्खायन गृह सूत्र

Falgun month amavasya Revati Nakhatra is recommended as the appropriate season for carrying out identification branding of cattle.

2.7.4 भुवनसि साहस्रमिन्द्राय त्वा सृमोऽददात् अक्षतमरिष्टमिलान्दनम्

गापोषणमसि गापोषस्येशिषे सहस्रपोषाय त्वा।

सहस्रपोषणमसि साहस्रपोषस्येशिषे सहस्र पोषाय त्वा।। मंब्राह्मण् **1.8.5**

2.7.5 लोहितेन स्वधातिना मिथुनं कर्णयोः कृतम।

यावतीनां यावतीनां व ऐषमो लक्षणकारिषम्।

भूयसीनां भूयसीनां व उत्तरांमुत्तरां रूह्ममाम् क्रियासम्।। मंब्रा **1.8.6**

Sanitation in Milking

2.8 Washing the string used for tying the legs of cow at milking time

तन्त्री प्रसार्य्यमाणांबद्धवत्साञ्चानुमंन्त्रयेतेयंतन्त्रीगवांमातेती ।

गो**0**गृ**0** सू**0 3।6।7**

Washing and /drying of the string used for tying the calves and legs of the cows during milking.

2.8.1 इयं तत्री गँवा माता सवत्सानां निवेशनी।

सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरां समाम्।। मं**0** ब्राह्मण **1-8-7**

With this mantra the string should be washed and hung to dry every day for milking the cows.

2.8.2 तत्रै तान्यहरहः कृत्यानि भवन्ति । गो**0**गृ**0**सू**03।6।8**

2.8.3 निष्कालनप्रवेषने त्न्त्री विहरणमिति । गो**0**गृ**0**सू**03।6।9**

2.8.4 गोयज्ञे पायसश्चुरुः । गो**0**गृ**0**सू**0 3।6।10**

Modern Dairy Industry is very concerned about in house hygiene and cleanliness. But no control is exercised in this matter at the place where the cattle is kept, fed and milked. The result is that the milk collected by the Dairy Industry all over the world and not only in India, is very unhygienic, with extremely high Total Bacteria Counts. Good clean Raw milk never spoils. It will get sour and settle as curds, like in making of Cheese. The Dairy Industry therefore has to Pasteurize all the Milk, before it can be handled any further. Natural Milk contains the microorganisms which are pathogenic, and keep the raw milk clean. But external bacteria on entering raw milk, introduce mainly disease carrying germs in it. By Pasteurization all the germs and Bacteria in the milk are destroyed. In the process of sanitizing the milk from disease carrying bacteria which get introduced due to unhygienic handling, all the health giving disease preventing enzymes present in the natural milk are also lost. The Pasteurized milk is there fore 'Dead milk' without the qualities of nutrition , disease prevention and promoter of mental intellectual qualities, with which it is associated in our Vedic Indian Traditions.

There is a very strong world wide movement for promotion of Raw and Organic Milk. In fact all Cheese in Western countries is made only from Raw Milk.

Our Vedic tradition go very deep on this subject of producing clean milk, by following the definite systems laid down as below.

1. ***1. It ensured cleanliness of environment by fumigation/Homa as above twice a day.***

2. *2. Elaborate directives on planning of cow shelter, with considerations of Ventilation, Natural Sun light by orientation of the shelters and Clean Floors etc.*
3. *3. For the persons milking the cows and looking after the cows proper behavior to provide affectionate care.*
4. *4. Requirements about the good clean hands of the milking men to keep the च्bacterial infectionछ to utmost minimum is laid down. Here it has laid down the instruction to use only clean string, for the handling of cows and calf by the milk men, by washing it daily.*
5. *5. There was a scheme to milk the cows three times a day. This had two very specific advantages. One the fresh from Udders Raw milk was available three times a day. Two with three times milking, the Udder stress is reduced. This practice is accepted to increase the milk yield by cows by up to 10%.*

These are the daily procedures to be followed in Gopalan as explained above:

1.Keep cows under very clean and peaceful environments.

2.Allow cows to have daily outing to self feed in well managed pastures.

3.Keep the young calves behind.

4. On return after their daily outings, receive , collect and manage them properly.

5. More attention is required to be paid to the nutrition and health of the young ones.

6. Arrange for proper selection and raising of Breeding Bulls.

7. Identify all young ones by tattoo marking for preventing inbreeding and breed improvement.

8. For GoYagnas Cow milk cooked rice, Cow Ghee , Milk and Curds should be used.

2.9 Darsh Pourn Maseshti

दर्शपोर्णमासेष्टि

From the above elaborate and detailed ritualistic tradition it is seen that Breeding, was considered and observed as the most important area of animal husbandry and covered all aspects as per modern scientific practice.

Functioning of the elaborate वृषोत्सर्ग procedure described here, also points to the existence of a central community based institutional system which operated as a community resource center. This institution played the role of Monitoring the skills and practices followed for Promoting, Training and Educating the community by dissemination of good knowledge and Skills in all aspects related to Pastoral livelihood and life support activities, involving.

1.Animal husbandry,

2.Agriculture related areas like

a. Selection and Preservation of Quality Seed

b. Seed Banks for next harvests,

c. Inspection of farm implements like tools, carts,

d. Community decisions on health , feed strategies for cows

e .Disposal of non productive not fit for domestic purposes cattle etc.

All these activities formed the subject of a community base yagna called Darshpournmaseshti.

.Modern concept of Krishi Vigyan Kendras could evolve to play this role.

The rituals of दर्शपोर्णमासेष्टि Darsh Pourn Maseshti, are seen as the Vedic system of modern management like ISO 9000, covering entire Macroeconomic activities of the society.

This calls for a very scholarly study in to the institution of this tradition for the Indian Cows and Sustainable Organic Agriculture.

2.10 COW practices according to PANINI (circa 500 B.C).

2.9.0 Terms and nomenclature prevalent related to Cows, Milk preparations

2.9.1.0 Practices relating to breeding, Identification of herds, Judging Age of cattle,



ENGLISH, **SOCIAL REFORM**, वेद मंत्र, समाज सुधार, हिन्दी

COWS DOMESTICATION IN VEDAS

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

Cows domestication in Vedas AV12.4

AV Sukta12.4 अथर्व वेद 12-4 सूक्त -वशा गौ ,ऋषि- कश्यप:

4.1.0.1 AV 12.4.1 अथर्व 12-4-1 On Donating a cow

गौ दान किस को

ददामीत्येव ब्रूयादनु चैनामभुत्सत।

वशां ब्रह्मभ्यो याचद्भ्यस्तत्प्रजावदपत्यवत् ॥ अथर्व **12.4.1**

Cows should be given in keeping of learned persons

(veterinarians) who have noble temperaments.

गौओं को ब्राह्मण वृत्ति के पशु पालन वैज्ञानिकों के ही दायित्व में देना चाहिए ।

4.1.0.2 AV 12-4-2 Curse of a sick Cow दुःखी गौ का श्राप

प्रजया स वि क्रीणीते पशुभिश्चोप दस्यति।

य आर्षेयेभ्यो याचभ्दयो देवानां गां न दित्सति ।। अथर्व **12-4-2**

Those who do not give cows in the keeping of such

virtuous persons to bring about improvements in the

cows, merely trade and do no service for society.

They suffer from curse of unhappy cows.

जो लोग कुशल कार्य कर्ताओं की सहायता से गौ संवर्द्धन का कार्य

नहीं करते, वे केवल व्यापार वृत्ति से कार्य कराते हैं। वे दुखी गौ के

श्राप के भोगी होते हैं।

4.1.0.3 AV 12-4-3 Underfed Cow's Curse

दुःखी गौ का श्राप

कूटयास्य सं शीर्य-ते श्लोणया काटमर्दति।

बण्ड्या दह्य-ते गृहाः काणया दीयते स्वम् ।। अथर्व **12-4-3**

Society that trades in unhealthy cows gets destroyed

By curse of unhappy cows.

जो समाज गौ को व्यापार मान कर चलाते हैं, वे दुखी गौ के श्राप से

नष्ट हो जाते हैं।

4.1.0.4 AV12-4-4 same as above फिर वही

विलोहितो अधिष्ठानाच्छद्विक्लिदुर्नाम विन्दति गोपतिम् ।

तथा वशायाः संविद्यं दुरदभ्ना ह्युच्यसे ।। अथर्व**12-4-4**

Miserly person's looking after the cows neglect their

Feed and health. Cows suffer bleeding and such

ailments which become incurable.

कंजूस गोपालक की गौ,रक्त स्राव जैसे असाध्य रोगों से ग्रसित हो

कर नष्ट हो जाती हैं।

4.1.0.5 AV 12-4-5 Foot and mouth disease

मुंह खुरपका

पदोरस्या अधिष्ठानाद्विक्लिन्दुर्नाम विंदति|

अनामनात्सं शीर्यन्ते या मुखेनोपजिघ्रति ।। अथर्व **12-4-5**

By sniffing her feet/ place where cow puts her feet, A

disease 'Wiklindu' is contracted that finally destroys

the cow. (The obvious reference is to the contagious

Foot and mouth disease)

गौ अपने खुर सूंघने से मुंह खुर पका रोग से ग्रस्त हो कर नष्ट हो

जाती है।

4.1.0.6 AV12-4-6 Do not make Cut marks on Cow

ears

गौ की पहचान के लिए कान मत काटो

यो अस्याः कर्णावास्कुनोत्या स देवेषु वृश्चते ।

लक्ष्मं कुर्व इति मन्यते कनीयः कृणुते स्वम् ।। अथर्व **12-4-6**

Those persons who make cut marks on cow's ears for

Identification, are as if cutting short their own wealth.

गौ की पहचान के लिए के कान नहीं काटने चाहिएं।

4.1.0.7 AV 12-4-7 Do not cut COW Hair गौ के बाल नही

काटे जाते

यदस्याः कस्मै चिद्भोगाय बालान्कश्चित्प्रकृन्तति ।

ततः किशोरा म्रियन्ते वत्सांश्च धातुको वृकः ।। अथर्व **12-4-7**

Those who cut hair of a cow for any reasons, are

Cursed to suffer in life.

जो किसी तांन्त्रिक कार्य के लिए गौ के बाल लेते हैं उन को श्राप

लगता है।

4.1.0.8 AV 12-4-8 Protect Cows from attack by birds गौ को कौए इत्यादि पक्षियों से बचाएं

यदस्या गोपतौ सत्या लोम ध्वाङ्क्षो अजीहिडत् ।

ततः कुमारः म्रियन्ते यक्ष्मो विन्दत्यनामनात् ।। अथर्व **12-4-8**

If crows are allowed to attack a cow, the lazy care

taker of cows will suffer from tuberculosis.

(Lazy persons attract Tuberculosis)

जो चरवाहा गौ को कौए जैसे पक्षियों से नहीं बचाता , उस आलसी

को क्षय रोग होगा ।(आलस्य के कारण क्षय रोग होता है)

4.1.0.9 AV12-4-9 Cow Dung and Urine

गोबर गोमूत्र

यदस्याः पल्पूलनं शकृद्दासी समस्यति ।

ततोऽपरूपं जायते तस्मादव्येष्यदेनसः ।। अथर्व **12-4-9**

Throwing away in to waste the Cow Dung and Cow

Urine disfigures the society.

गोबर गोमूत्र व्यर्थ करने से समाज के रूप की सुन्दरता नष्ट हो जाती

है ।

VETERINARY SERVICES

पशु चिकित्सा सेवाएं

4.1.0.10 AV 12-4-10 Cow Protection गौ सुरक्षा

जायमानाभि जायते देवान्त्सब्राह्मणान्वशा ।

तस्माद ब्रह्मभ्यो देयैषा तदाहुः स्वस्य गोपनम् ।। अथर्व **12-4-10**

Cow should always be under the care of

Knowledgeable persons having altruistic attitudes.

This is the best form of COW PROTECTION

गौपालन में ब्राह्मण वृत्ति के कुशल गोपालकों से ही गौ सुरक्षित

रहती है।

4.1.0.11 AV12-4-11 No Cow protection is cruelty

गौ की असुरक्षा अपराध है

य एनां वनिमायन्ति तेषां देवकृता वशा।

ब्रह्मज्येयं तदब्रुवन्य एना निप्रयायते ।। अथर्व **12-4-11**

Not providing cow in to proper hands for care is

cruelty to cows.

गौ को ब्राह्मण वृत्ति के लोगों के हाथ न देना गौ पर अत्याचार है।

4.1.0.12 AV 12-4-12 Same again वही विषय

य आर्षेयेभ्यो या चद्भयो देवानां गां न दित्सति ।

आ स देवेषु वृश्चते ब्राह्मणानां च मन्यते ।। अथर्व **12-4-12**

Not providing the cows with such care, destroys good

traditions of society.

गौवों को ऐसी सुरक्षा न देने से सामाजिक परम्पराओं का नाश

होता है।

4.1.0.13 AV 12-4-13 pre parturition post parturition care

दूध से हटी गर्भिनी गौ सेवा विषय

यो अस्य स्याद् वशाभोगो अन्यामिच्छेत तर्हि सः ।

हिंस्ते अदत्ता पुरुषं याचितां च न दित्सति ।। अथर्व **12-4-13**

Productive cows can be kept for the immediate benefits but unproductive cows must be given for care by selfless persons.

बाखड़ी, गर्भिणी, दूध से सूखी गौ को निस्वार्थ सेवा चाहिए।

4.1.0.14 AV 12-4-14 Same as above वही विषय फिर

यथा शेवधिर्निहितो ब्राह्मणानां तथा वशा ।

तामेतदच्छायन्ति यस्मिन्कस्मिंश्च जायते ।। अथर्व **12-4-14**

Like the protection to be provided for hidden treasures, such cows must be provided with due protection .

(Modern science calls it Pre parturition & post parturition- a 90 days regime two months or more before calving and at least one week after calving care under best hands)

जैसे किसी कोष की सुरक्षा की जाती है, उसी प्रकार विद्वान कुशल

हाथों से बाखड़ी, कम/बिना दूध की गर्भवती गौ की सुरक्षा होती है।

4.1.0.15 AV 12-4-15 denial of this service is cruelty to Cows

यह गौ सेवा उप्लब्ध न होना गौ पर अत्याचार है

तस्मेतदच्छायन्ति यद् ब्राह्मणा अभि ।

यथैनानन्यस्मिञ्जिनीयादेवास्या निरोधनम् ।। अथर्व **12-4-15**

It is the duty of selfless good persons (veterinarians)

To provide this service. Denial of this service is cruelty towards Cows.

गौ वंश की ऐसी सेवा समाज का दायित्व है। इस सेवा का प्रबंध न

होना गौ पर अत्याचार है।

Importance of Veterinary Services गो विज्ञान का महत्व

4.1.0.16 AV 12-4-16 Increase of Cows and identification

गो वंश विस्तार और उसे चिह्नित करना

चरेदेवा त्रैहायणादविज्ञातगदा सती ।

वशां च विद्यान्नारद ब्राह्मणास्तह्येष्याः ।। अथर्व **12-4-16**

Up to three years of age a heifer moves around with

its mother. Then it Caves and has to be given an

identity and donated to a deserving good household.

तीन वर्ष तक की उस्रिया माता के संग रहती है। बछड़ा देने पर उस

का नामकरण करके किसी उपयुक्त परिवार को दान की जाती है

4.1.0.17 AV 12-4-17 Nonobservance of such practice

Is not in best interests of society

ऐसे गोदान न करना समाज कल्याण हित में नही होता

य एनामवशामाह देवानां निहितं निधिम् ।

उभौ तस्मै भवाशर्वौ परिक्रम्येषुमस्यतः ।। अथर्व **12-4-17**

Those who realize the wealth in cow’s udders and

milk, but do not share these cows with population, are

doing great disservice to welfare of the community.

जो गौ के दुग्ध का महत्व जानते हुए भी ऐसे गोदान नहीं करते वे

समाज के लिए कल्याण कारी नहीं सिद्ध होते

4.1.0.18 AV 12-4-18 Same again वही विषय फिर

यो अस्या ऊधो न वेदाथो अस्या स्तनानुत ।

उभयेनैवास्मै दुहे दातुं चेदशकद्वशाम् । । अथर्व **12-4-18**

Even ignorant persons if they donate cows for

Spreading them, do a great community service.

अविद्वान लोग भी जो गोदान से गौ संवर्द्धन करने के लिए यथा

समय गौ सेवा के लिए गौ दान करते हैं, वे समाज सेवा का बड़ा

काम करते हैं

4.1.0.19 AV 12-4-19 Same again वही विषय फिर

दुर दभ्नैनमा शये याचितां च ना दित्सति।

नास्मै कामाः समृध्यन्ते यामदत्त्वा चिकीर्षति ।। अथर्व **12-4-19**

Motivated by selfish considerations those who do not

Lend their cows at appropriate times for proper care

by experts, make their cows suffer and are in the end

not able to derive the benefits they were trying to

protect in the first place .

बाखड़ी गर्भ वती गौ की विशेष सेवा के लिए जो लोग अपनी गौओं

को विशेषज्ञों के पास दान रूप से नही भेजते, उन की गौएं कष्ट में

रहती हैं और जो लाभ अपेक्षित था वह नहीं मिलता।

4.1.0.20 AV 12-4-20

Provide Vet experts honorable place

गो चिकित्सकों का आदर करो

देवा वशामयाचन्मुखं कृत्वा ब्राह्मणम् ।

तेषां सर्वेषामददद्धेडं न्येति मानुषः ।। अथर्व **12-4-20**

Veterarian's offer for providing help to community to

take care of Cows should be gratefully accepted .

Ignoring the Vet Services angers the Vet Experts

पशु चिकित्सक गो सेवा के लिए उत्सुक रहते हैं। उन सेवा ने लेने

पर वे क्रुद्ध होते हैं।

4.1.0.21 AV 12-4-21 Veterinarians पशु चिकित्सक

हेडं पशूनां न्येति ब्राह्मणेभ्योऽददद्वशाम् ।

देवानां निहितं भागं मर्त्यश्चेन्निप्रियायते ।। अथर्व **12-4-21**

Veterinarians are to be made available to serve cows.

By not taking their services properly even the cows

are put to great discomfort.

गौ सेवा के लिए प्रशिक्षित जन गोसेवा अवसर की प्रतीक्षा में उत्सुक

रहते हैं। उन की सेवा न लेने से गौ को भी बहुत पीड़ा होती है।

4.1.0.22 AV 12-4-22 Veterinary help

पशु चिकित्सा दायित्व

यदन्ये शतं याचेयुर्ब्राह्मणा गोपतिं वशाम्।

अथैनां देवा अब्रुवन्नेवं ह विदुषो वशा ।। अथर्व **12-4-22**

Hundreds of people seek help from veterinarians, and

All their cows are said to belong to him.

बहुत से लोग अपनी गौएं पशु चिकित्सक के पास ले जाते हैं। वे सब

गौ उस चिकित्सक की कही जाती हैं।

4.1.0.23 AV12-4-23 Expert Vet Services

कुशल पशु चिकित्सक सेवा

य एवं विदुषेऽदत्त्वाथान्येभ्यो ददद्वशाम् ।

दुर्गा तस्मा अधिष्ठाने पृथिवी सहदेवता ।। अथर्व **12-4-23**

Those who do not take help of trained Vets and go to

Seek help from illiterates, cause lot of misery and loss

to society.

जो लोग विद्वान पशुचिकित्सकों को छोड़ कर अविद्वानों के पास

जाते हैं, वे समाज में दुःख का कारण होते हैं।

4.1.0.24 AV 12.4.24 Ignoring Vet help

पशु चिकित्सा न लेना

देवा वशामयाचन्यस्मिन्नग्रे अजायत ।

तामेतां विद्यान्नारदः सह देवै रुदाजत ।। अथर्व **12-4-24**

First time pregnant cow needs extra care. House

Holders may think of such cows to be their blessing

and feel that it can take care of itself on its own as a

routine.

पहली बार गर्भ वती को गृह स्वामी अपना सौभाग्य समझ कर यह

सोच लेता है कि सब अपने से ठीक होगा। यह ग़लती है

4.1.0.25 AV 12-4-25 Continued वही विषय

अनपत्यमल्पपशुं वशा कृणोति पूरुषम्।

ब्राह्मणैश्च याचितामथैनां निप्रियायते ।। अथर्व **12-4-25**

Ignoring the expert Vet help those who confine such cows to their family out of misplaced affection, unknowingly cause harm to their cows and bring damage to the interests of their family.

विशेषज्ञों की सहायता न ले कर ये गो स्वामी गौ और अपने परिवार का और गौ का अहित करता है।

4.1.0.26 AV 12-4-26

अग्नीषोमाभ्यां कामाय मित्राय वरुणाय च ।

तेभ्यो याचन्ति ब्राह्मणास्तेष्वा वृश्चतेऽददत् ।। अथर्व **12-4-26**

Knowledge, Skills, Expert help, Implements and Resources all are needed for proper care. Ignoring this is a retrograde step.

विद्वत्ता, ज्ञान , हर प्रकार के संसाधन उपयुक्त स्थान और समय पर उपलब्ध रहने चाहिएं।

इन सब पर ध्यान न देना समाज में पिछड़ापन बढ़ाता है।

PASTURE FEEDING गोचर विषय

4.1.0.27 AV 12.4.27 Time to release Cows for Pastures प्रातः काल गोचर

यावदस्या गोपतिर्नोपशृणुयाद्दचः स्वयम् ।

चरेदस्य तावद्गोषु नास्यं श्रुत्वा गृहे वसेत् ।। अथर्व **12-4-27**

Morning strains of mantras when heard being recited at Agnihotras indicates the time to release cows to go to pastures for self feeding.

प्रातः कालीन मंत्रो के पाठ की ध्वनि जब सुनाई देती है, तब जानिए कि गौओं को गोचर में जाने का समय हो चला

4.1.0.28 AV 12-4-28 Stall feeding is harmful घर में गौ को बंध कर मत रखो

यो अस्या ऋचउपश्रुत्याथ गोष्वचीचरत् ।

आयुश्च तस्य भूतिं च देवा वृश्चन्ति हीडिताः ।। अथर्व **12-4-28**

One who keeps Cows at home to feed even after hearing the morning mantra patha suffers in life.

जो प्रातःकाल मंत्र ध्वनि सुनने के पश्चात भी गौ को अपने घर पर बांध कर खिलाता है, वह जीवन मे दुख पाता है।

4.1.0.29 AV 12.4.29 Time to stay in Pastures गोचर में रहने का समय

वशां चरन्ति बहुधा देवानां निहितो निधिः ।

आविष्कृणुष्व रूपाणि यदा स्थाम जिघांसति ।। अथर्व **12- 4-29**

As long as the cows like to feed in pastures they represent community assets. When cows want to retreat from pastures they indicate it by many signs.

गोचर में गौएं समाज की धरोहर के रूप में रहती हैं।जब वे पुनः अपने गृह स्वामी के स्थान जाना चाहती हैं, स्वयम् संकेत करती हैं।

4.1.0.30 AV 12-4-30

आविरात्मानं कृणुते यदास्त्थाम जिघांसति।

अथो ह ब्रह्मभ्यो वशा याञ्च्याय कृणुते मनः।। अथर्व **12-4-30**

Cow herself indicates the time for her to go back to her home for help from her master

जब गोचर से गृह स्वामी के पास जाने का समय होता है गौ स्वयम् ऐसे संकेत देती है।

4.1.0.31 AV 12-4-31Cow's desires are to be complied , गौ के अनुकूल आचरण हो

मनसा सं कल्पयति तद्देवाँ अपि गच्छति ।

ततो ह ब्रह्माभ्यो वशामुपप्रयन्ति याचितुम् ।। अथर्व **12-4-31**

When Cows want to leave pastures to return to their homes, their desires should be complied with. (It is the udder stress when it is full of milk, that prompts cow to return to her master for milking her and feeding her calf)

गौ के घर लौटने के संकेत पर दूध दुहने के लिए गौ को गृह स्वामी के यहां ले जाना चाहिए।

4.1.0.32 AV 12-4-32 Cow's Blessings गौ के आशीर्वाद

स्वधाकारेण पितृभ्यो यज्ञेन देवताभ्यः ।

दानेन राजन्यो वशाया मातुर्हेडं न गच्छति ।। अथर्व **12-4-32**

Cows blessings flow by long life and presence of elders in Society, Ajya for havi in yagyas, for the Society by her bounties (organic agriculture).

पितरों को अपने स्वरूप से, ब्राह्मणों को यज्ञ में आज्य की हवि से,राज्य को अपनी उपलब्धियों से धन्य करती हैं।

4.1.0.33 AV 12-4-33 Cows belong to the learned गौ बुद्धिजीवियों की होती है

वशा माता राजन्यस्य तथा संभूतमग्रशः ।

तस्या आहुरनर्पणं यद ब्रह्मभ्यः प्रदीयते ।। अथर्व **12-4-33**

Cow on first priority provides for protecting the welfare of society like a

mother does. But Cow really belongs to the Veterinarian intellectuals, who

provide for its upkeep.

गौ सामाज को सर्व प्रथम माता कि तरह संरक्षण प्रदान करती है।

परन्तु वास्तव में विद्वान बुद्धिजीवि ही गौ को सुरक्षा प्रदान करते

हैं।

4.1.0.34 AV12-4-34 Gross treatment of Cows a Crime गाव से दुर्व्यवहार अपराध है

यथाज्यं प्रगृहीतमालुम्पेत्स्त्रुचो अग्नये ।

एवा ह ब्रह्मभ्यो वशग्नय आ वृश्चतेऽददत् ।। अथर्व **12-4-34**

Like Ajya havi dropping outside the fire is a crime, not providing the cows

with good Veterinary care is also a crime.

जैसे यज्ञाग्नि से बाहर स्रुवा से आज्य गिराना अपराध है, उसी प्रकार गौ को पशु चिकित्सक की

सेवा से दूर रखना भी एक अपराध है।

4.1.0.35 AV 12-4-35 Productive cow fulfils all needs दुधारु गौ सम्पन्नता प्रदान करती है

पुरोडाशवत्सा सुदुधा लोकेऽस्मा उप तिष्ठति

सस्मै सर्वान्कामान्वशा प्रददुशषे दुह ।। अथर्व **12-4-35**

Productive Cows fulfill all needs of the society

सवत्सा दुधारु गौ सब कामानाएं पूर्ण करती है

4.1.0.36 AV 12-4-36 Denying provision of cows leads to hell गो सेवा न करना नरक देता है

सर्वान्कामान्ययमराज्ये वशा प्रददुशे दुहे ।

अथहुर्नारकं लोकं निरुन्धा नस्य याचिताम् ।। अथर्व **12-4-36**

Not making provision for good cows, denying cow products to the needy,

turns the society in to a living hell

गो सेवा से यम राज के यहां भी सब इच्छा पूरी होती हैं, परन्तु गौ की सेवा न करने से नरक

से छुटकारा नहीं मिलता।

4.1.0.37 AV 12-4-37 Cows denied mating are angry cows

गौ को वृषभ आवश्यक है

प्रवीयमाना चरति क्रुद्धा गोपतये वशा ।

वेहतं मा मन्यमानो मृत्योः पाशेषु बध्यताम् ।। अथर्व **12-4-37**

Denial of breeding to good cows makes them infertile makes cows angry and curse the keepers to Death.

(Modern practice of artificial insemination is known to cause infertility. This is a challenge for modern Dairy Practice.))

गौ को वृषभ का सहवास न मिलने पर गौ क्रोधित और बांझ होने लगती हैं। (क्रित्रिम गर्भाधान में गौ बांझ होने लगती हैं)

4.1.0.38 AV 12-4-38 Cow Breeding facility

गौ प्रजनन व्यवस्था

यो वेहतं मन्यमानो ऽमा च पचते वशा ।

अप्यस्य पुत्रान् पौत्रांश्च याचयते बृहस्पति ।। **12-4-38**

Neglect of breeding a good cow makes the coming generation of society in to beggars

जिस समाज में गौ प्रजनन सुव्यवस्थित नहीं होता वहां के लोग भीख मांगते हैं।

Pasture Significance गोचर महत्व

4.1.0.39 AV 12-4-39 Pastures should have free access गोचर महत्व

महदेषाव तपति चरन्ति गोषु गौरपि ।

अथो ह गोपतये वशाददुषे विषं दुहे ।। अथर्व **12-4-39**

Barriers in pastures angers the cows, the milk from such cows is likened to poison. (महदेषाव – Big barriers)

(This fact is fully supported by latest dairy science researches. Only milk of green forage fed cows is rich Essential Fatty acids-Omega3 & Omega 6 and has much lower saturated fat content and is rich with all Carotenoids. This is confirmed by the researches shown here.)

वेद मंत्र, हिन्दी

प्रकृति का वरदान – मधुविद्या

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

RV6.70 Nature's bounties

Including Honey Doctrine

प्रकृति का वरदान – मधुविद्या

ऋषिः- बार्हस्पत्यो भारद्वाजः । देवताः- द्यावापृथिवी । जगती।

बार्हस्पत्यो -विद्वानों का भी विद्वान, भारद्वाजः- अत्यन्त शक्ति से

सम्पन्न

इस सूक्त की व्याख्या में तीन बड़े महत्वपूर्ण शब्द प्रयुक्त हुए हैं.

घृतः – घृतवती,घृतश्रिया , घृतपृचा , घृतावृधा – घृत को स्नेहन भी कहते हैं- जीवन में सदा स्नेहयुक्त

मनमुटाव रहित रहने से समाज में सौहर्द्र , संगठित रहने से समाजशक्ति , अस्पृश्यता भेदभाव जैसी विकृतियों के स्थान पर समृद्ध सुखमय समाज का निर्माण देखा जाता है.

मधु – स्नेह युक्त होना ही तो मधु जैसा मिठास जीवन में स्थापित करताहै. भारतीय दर्शन में मधुविद्या का बड़ा महत्व दिखाया

In proper understanding this sookt three words described below have to be considered in their wider context.

1.घृत ;-

Ghrit;- Commonly it is known as ghee. Ghee is also performs the function of a Lubricant. Metaphorically in personal relations Ghrit by removing friction adds to closeness, feelings of calm, mutual cooperation and affection. To the human body Ghrit provides strength and wellbeing. Thus Ghrit while it provides physical health and wellbeing to human body, metaphorically it provides the society with calm pleasant cooperative attitudes.

2.मधु ;

Madhu Vidya is elaborately dealt with in Bridaranyakopanishad 2.5.(बृहदाराण्यकोपनिषद 2.5)

Basic premise is that honey is a sweet and highly desired material, both literally and metaphorically. Honey has physically sweet taste and stimulates health. Metaphorically Honey promotes by sweet agreeability and happy peace in all situations and experiences in life.

It is also not possible to trace as to which bee picked which flower for which part of this honey. Similarly in life pleasant living is made up as the sum total of contributions of very small sweet agreeable, compliments from all elements the earth, unpolluted air, water, our pets, our relations, friends, colleagues, strangers on the street, innumerable sources that are hard to identify individually. Thus like honey there is no traceability for happiness in life.

As Upanishad says; *Iyam pṛthivī sarveṣāṁ bhūtānām madhu:*

This earth is the honey of all beings. It is the essence and milk of all beings. People suck this earth as if they suck honey which has such a beautiful taste; and earth sucks everybody and everything as if they are honey to it. The earth is the honey of all, and everyone is the honey of the earth. The earth is absorbed into the 'being' of everything, and everything is absorbed into the 'being' of the earth. That is the meaning of saying that earth is the honey of all beings, and all beings are the honey of the earth. It is the honey that you absorb into your being by sucking, by licking, by enjoying, by making it a part of your own 'being'. So does the earth make everything a part of its own 'being' by absorbing everything into itself. And so does every 'being' in the world suck the earth into itself and make it a part of its own 'being'.

3.असश्चन्ती ;-Stands for selfless, anonymous actions without seeking rewards of actions for self. This is what Ved describes in -कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छ्त^ समा: | एवं त्वयि नान्यथेतो न कर्म लिप्यते नरे || यजु 40.2 , And Geeta ;कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन | मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि || 2.47

Food Safety – Security जैविक पदार्थ

1.घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ।।**AV 6.70.1**

सम्पूर्ण पृथ्वी भूमि और सौर ऊर्जा द्वारा प्रकृति के(वरुणस्य) सर्वव्यापी नियमों की व्यवस्था में सदैव उत्तम माधुर्य लिए हुए (अन्नदि) पौष्टिक (स्वास्थ्य हितकारी) वीर्यवर्धक पदार्थों को प्रदान करने की अक्षय क्षमता रखती है.

(पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भूमि की उर्वरकता, प्रदूषन रहित कार्य योजना और सौर ऊर्जा का अधिक से अधिक उपयोग का उपदेश इस वेद मंत्र से प्राप्त होता है)

Nature's omnipotent omnipresent laws by combination of land and sun tirelessly supply of highly nutritious sweet (food) products from the entire expanse of land.
Biodiversity जैव विविधता का महत्व

2.असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते ।
राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितं ।।**AV 6.70.2**

भिन्न भिन्न क्षेत्रों में परस्पर स्वतंत्र रूप से स्थापित पर्यावरण द्यावा पृथिवी,सब जीव पशु, पक्षी, पर्यावरण के हितों की सुरक्षा से मानव के पवित्र हितों की रक्षा के लिए जीवन को पवित्र मानसिकता और पौरुष प्रदान करने वाले सब सात्विक दूध, घी, इत्यादि साधन प्राप्त कराते हैं. (इस मंत्र में मानव जीवन के हित में जैव विविधता का महत्व दर्शाया गया है.)

Different diverse seemingly independent unconnected species of Nature make vital complimentary contributions to make available sustainable non corrupting disease free healthy food and environment.

Innovations आविष्कार महत्व

3.यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति ।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता ।।**AV 6.70.3**

जो बुद्धिमान समाज को जन प्रकृति के साधनों के सरल अधिक लाभकारी मार्ग दर्शाते हैं वे समाज में धर्मानुसार जीवन आचरण की व्यवस्था स्थापित करने मे सहायक बनते हैं.

Devise innovative & simple processes to employ the natural complimentary bounties of naturally available resources like people, animals, sun and land, and provide society and its progeny with traditions of just and better sustainable lifestyle.

Rains वृष्टि जल

4.घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा ।
उर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद् विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये ।।**AV 6.70.4**

वर्षा के जल घृत की तरह अत्यंत महत्वपूर्ण गुणवान और सर्वव्यापी हैं. पृथ्वी की ऊर्वरक बनाने के साथ साथ इन की गुणवत्ता विद्वत्जनों के जीवन में इष्ट की पूर्ति के लिए यज्ञादि सात्विक कर्मों के प्रेरक हैं.

All encompassing rain waters are of great importance and bring glory, satiation and growth. They provide soil with riches to promote bliss and enlightened temperaments in wise persons to perform yajnas to achieve their goals.

Honey Doctrine (Sweetness/happiness in life) मधुविद्या

5.मधु नः द्यावापृथिवी मिमिक्षतां मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते ।
दधाने यज्ञं द्रविणं च देवता महि श्रवो वाजमस्मे सुवीर्यम् ।। **AV6.70.5**

जीवन में सब ओर से क्षरित मधु जैसा धन धान्य स्वास्थ्य युक्त प्रसन्न चित्त समाज में यज्ञादि (दान,देवपूजा,संगतिकरण) के परिणाम होते हैं. यज्ञ ही मधुविद्या है.

All things that endow with all pervading, health wealth and happiness and derive from Nature's resources on earth and atmosphere above it are results of efforts that are made selflessly, in charity and cooperation in all walks of life like performing Yajnas. And result in providing to all life desirable like sweet honey. (All actions that in combination consist of Charity, Care of environments, and Collective good for society are called Yajnas in Vedic terminology.)

6.ऊर्जं नः द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा ।
सं रराणे रोदसी विश्वशंभुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम् ।।**AV 6.70.6**

द्युलोक वृष्टि के जल द्वारा सेचन करने से पिता समान है, उस जल को धारण करने वाली पृथ्वी माता समान है,और ये दोनो पृथिवी लोक, प्राण शक्ति , अन्न , ऊर्जा, बल और सब आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले हैं . ये द्यावापृथिवी सब को उपकार भाव से सुख शांति दे कर सब दुखों को दूर करते हैं . समाज अपने हित में इस सत्मार्ग पर सदैव चले.

Nature's action to bless us with Rain is likened to actions of a father, and earth's action in receiving the rains and provide for our welfare are likened to the actions of a mother. Nature thus like both the parents provides us with all that is required to sustain us – breath of life, food, energy, comfort and happiness, remove our miseries and discomfort . To ensure this it is required of us to follow in correct path and behavior.



मनसापरिक्रमा विषय

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

About Mansaparikrama मनसापरिक्रमा विषय

AV3.26 & 3.27

दो अथर्व वेद सूक्त 3.26 और 3.27 एक ही विषय पर समष्टि और व्यष्टि रूप से उपदेश द्वारा मानव जीवनके मार्ग का निर्देश करते हैं. दोनों को एक साथ स्वाध्याय पर आधारित मेरे व्यक्तिगत विचार विद्वत्जनों के टिप्पणि के लिए प्रस्तुत हैं .

Two Atharv ved sookts 3.26 and 3.27 appear to give guidance on the same subject , AV3.26 on macro level and AV3.27 on micro earthly level. My personal understanding and interpretation of these two complimentary Vedic sookts is submitted for consideration and comments of learned persons

ऋषि:- अथर्वा | देवता-अन्न्यादय: नाना देवता

1. येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।। **AV3.26.1**

पूर्व दिशा में हमारे सम्मुख स्थित (सूर्य) प्रत्यक्ष रूप से तम के आसुरी भावों (आलस्य, निद्रा , प्रमाद , अवसाद जैसी तामसिक अंधकारमयी वृत्तियों का) नाश कर के समस्त संसार को रात्रि की निद्रा से उठा कर स्वप्रेरित दैनिक दिनचर्या में उद्यत करता है | सूर्याग्नि – ऊर्जावान देवत्व से उपलब्ध निरन्तर चरैवेति चरैवेति प्रगतिशील कर्मठता की प्रेरणा देता है. यही हमारे सुखों का साधन होता है, विद्वत्जन- वेद विद्या , इस (सुर्याग्नि) की ऊर्जा के विज्ञान का अनुसंधान करें और हमें उपदेश करें, जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं. (यही संदेश 'तमसोमामृतं गमय मृत्योर्मामृतं गमय' में निहित है. एक उदाहरण के लिए संसारिक भौतिक सुख साधनों में आत्मचिंतन द्वारा आधुनिक विद्युत उत्पादन द्वारा पर्यावरण की हानि को देखते हुए सौर ऊर्जा के प्रयोग मे प्रगति इसी दिशा में प्रगति का द्योतक है. कहा जा रहा है कि जर्मनी शीघ्र ही अपनी विद्युत उत्पदनकी आवश्यकता का 80% सौर ऊर्जा द्वारा प्राप्त करने का लक्ष्य पा लेगा. इसी प्रकार स्वीडन निकट भविष्य में अपने 80% वाहनों को अर्यावरण को क्षति पहुंचानेवाले डीज़ल पेट्रोल की बजाए पुरीष इत्यादि नागरिक कूड़े कचड़े से गैस उत्पाद से चला पाएगा.)

In the East in front of us as sun rises all negative dark tendencies (of sleepiness, laziness, procrastination, and despondency) are dispelled. Entire world by itself wakes up from rest & slumber of night and sets about its daily chores. Sun provides the inspiration to be activated with energy in our efforts to make continuous progress. This is the forbearer of our comforts in life; learned persons should explore these energy sciences and educate us in their use. For

this act of kindness we are ever grateful to the Almighty and follow him with full dedication by making our offerings in Agnihotra .

(This is the essence of Vedic exhortation 'तमसोमामृतं गमय मृत्योर्मामृतं गमय' . One example is that on realising the threat and damage to environments and population by reliance on fossil fuels and damage to ecology in conventional methods of electricity generation, Germany is aiming to reach the target of producing 80% of its electricity needs by Solar cogeneration. Similarly Sweden is aiming to make use of its municipal waste methane production to replace 80% of its fossil fuel needs in transport sector.)

1.प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । **।AV3.27.1**

प्राची पूर्व की दिशा में सूर्याग्नि अधिपति स्वामी है, जो स्वतंत्र हैं और सीमा बद्ध नहीं हैं . इन की रश्मियां (पृथ्वी पर आने वाले) बाण स्वरूप हैं जो(भिन्न भिन्न प्रकार से) हमारी रक्षा करते हैं. इस सूर्य देवता को हम नमन करते हैं. उस के इन रक्षक बाणों के प्रति हम नमन करते हैं |और जो हम से द्वेष करने वाले (तमप्रिय) रोगादि शत्रु हैं उन्हें ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

In the East infinite and independent solar radiations are directed like missiles to provide energy and protection us (in many forms known as photo biology in science). We show our gratefulness to Sun for these bounties and leave our enemies such as sloth and pathogens at his disposal to deal with.

२ .येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्यविष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.2**

दक्षिण दाहिने हाथ में स्थित कार्य कुशलता परिश्रम का संकल्प हमारे जीवन में सुरक्षा प्रदान करने का मुख्य साधन है. विद्वत्जन- वेद विद्या से प्रेरणा लेकर , (कार्यकौशल-कृष्टी) तकनीकी विज्ञान का (अनुसंधान करें) और हमें उपदेश करें, जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.और जो हमारे अभ्युदय मे बाधक शत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

In our right hand dwell the dexterous life support skills. The resolve to lead skilful action oriented life ensures self preservation and protection. Learned persons should research and develop science and technologies and educate us in their use. For this act of kindness we are ever grateful to them and make our offerings in Agnihotra dedicated to Him..

2.दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.2**

दक्षिण – दाहने हाथ से कर्म प्रधान जीवन का संकल्प हमारे भीतर इन्द्र का दैवत्व स्थापित करता है.(इन्द्र का भी तो आचरण स्वयं में निर्दोष नहीं था) अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मतान्ध बुधि भ्रष्ट हो कर हम अपना संतुलन खो सकते हैं और (तिरश्चिराजी) जैसे कुछ टेढ़े मेढ़े रास्ते भी अपना लेते हैं . ऐसे अवसरों पर हमारे पितरों का, पूर्व जनों का, शास्त्रों का मार्ग दर्शन हमारे लिए ठीक दिशा में कार्य करने लिए हमें दिशा निर्देश करता है . इस इन्द्र देवत्व के प्रति हम प्रणाम करते हैं , इंद्र द्वारा जीवन में सुरक्षा प्रदान करने वाली उपलब्धियों को हम प्रणाम करते हैं . और जो हम से द्वेष करने वाले हमारे अभ्युदय मे बाधक शत्रु हैं उन्हें ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

1. येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । **AV3.26. 3**

प्रतीची दिशा में हमारी पीठ के पीछे की दिशा में (वैराजा:) अन्न के स्वामी – कृषक जन और (देवाः) व्यवहारी अर्थात व्यापारी जन स्थित हैं जिन के लिए जल (सिंचाई के लिए) मुख्य बाण है, हमारे जीवन में सुरक्षा प्रदान करने का मुख्य साधन है. विद्वत्जन- वेद विद्या से प्रेरणा लेकर , कृषि तथा जल के विज्ञान का अनुसंधान करें और हमें उपदेश करें,जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.

Unconcerned with our activities – behind our backs-without our urging, the growers of food and commercial interests operate to provide us with food security. Water resource is the most significant for their proper operations. Scientists should carry our researches in to food production and water utilizations and educate us in their use. For this act of kindness we are ever grateful to them and will follow with full dedication.

3.प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नं इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.3**

हमारे पीछे हमें बिना बताए वरुण देवता जल के भौतिक स्वरूप में भूमि के नीचे हर स्थान पर पहुंच कर वहां पलने वाले सूक्ष्माणुओं के अधिपति हैं. इन का दायित्व भूमि से उत्पन्न होने वाले अन्न के उत्पन्न करने की सुरक्षा है. इस के लिए हम वरुण देवता को नमन करते हैं, उन के द्वारा इस प्रकार अन्न की सुरक्षा की व्यवस्था को हम नमन करते हैं . और जो हमारे शत्रु जन (इन प्रकृति के नियमों के विरुद्ध चल कर भूमि को जल विहीन, सूक्ष्माणुओं रहित मरुस्थल बना कर अनुपजाउ बना देते हैं) उन्हें हम ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं.

At our backs, (without our urging) Warun dewataa (through water) is in charge of Rhiozosphere where he commands by reaching everywhere in the kingdom of microorganisms living in soil. Food grown thus is the protector of our lives . We prostate ourselves to Him, and for His bounties, and leave our enemies such as destroyers of Rhizosphere and the food products to face the harsh justice of Nature. (Modern environmental science confirms that by damaging the Rhizosphere micro flora man is turning fertile lands in to barren life less food less deserts. This is result of Nature’s relentless justice.)

1. येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.4**

Aurora borealis उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टिगोचर प्रचण्ड प्रकाश

यह जो उत्तर दिशा में हमारे बाएं ओर वेगवान वायु द्वारा (पृथ्वी को) बींधने वाले प्रक्षेपित बाण हैं (जिन के कारण यह प्रचंड प्रकाश दृष्टिगोचर होता है) वे हमे आनंद प्रदान करें . जिस के लिए सदैव श्रद्धा पूर्वक नमन कर के यज्ञाहुति अर्पित करते हैं.

(इस वेद मंत्र में ऋषियों ने पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टिगोचर प्रचण्ड प्रकाश को देख कर चिंतन के आधार पर अंतरिक्ष में अपार विद्युत के स्रोत की कल्पना की थी. उसी भविष्यवाणी को आज का वैज्ञानिक यथार्थ में देखने का प्रयास करता दीखता है . आधुनिक विज्ञान के अनुसार आकाश में सूर्य द्वारा प्रक्षेपित अत्यंत वेग प्रचंड प्रकाश और गति से सूर्य की वायु समान उल्काएं Solar winds आती हैं . पृथ्वी के 100 किलोमीटर ऊपर उन के विस्फोट के परिणाम स्वरूप एक ध्रुवीय ज्योति का प्रकाश पुंज दिखाइ देता है . इस उत्तरी ध्रुव पर पृथ्वी से दृष्टीगोचर आकाश में दिखाइ देने वाले प्रकाश को ओरोरा बोरिआलिस- Aurora Borealis उत्तरीय ध्रुव प्रकाश नाम से जाना जाता है. यह ज्योति पुंज पृथ्वी और सूर्य में निरन्तर एक विद्युत प्रवाह द्वारा क्रियामान होता है. इस विद्युत प्रवाह का वेग 50,000 वोल्ट की 20,000,000 एम्पीअर करेन्ट तक माना जाता है. विख्यात वैज्ञानिक विद्युत के महान आविष्कारक निकोला टेस्ला ने लगभग 100 वर्ष पूर्व अपने अनुसंधान पर आधारित आकाश में इस अपरिमित विद्युत के भन्डार से पृथ्वी पर मानव की समस्त विद्युत की आवश्यकताओं को प्राप्त करने की भविष्य वाणि की थी.

विद्युत को मोटर आदि चला कर प्रयोग में लाने के लिए वैज्ञानिक Fleming’s Left Hand Rule फ्लेमिन्ग के बाएं हाथ का नियम बताते हैं . यह विद्युत क्रिया प्रकृति का सहज नियम है.)

(The aurora borealis (the Northern Lights) have always fascinated mankind. The solar wind and explosive events like coronal mass ejections (CMEs) carry solar plasma (primarily energetic protons) out in to the Earth’s orbit. Often, they interact with the geomagnetic field and spiral down toward the poles (where the magnetic field is directed). On interacting with the atmosphere, light is generated, producing the aurora.

Thus auroras, the north magnetic pole (aurora borealis) occur when highly charged electrons from the solar wind interact with elements in the earth’s atmosphere. Solar winds stream away from the sun at speeds of about 1 million miles per hour. When they reach the earth, some 40 hours after leaving the sun, they follow the lines of magnetic force generated by the earth’s core and flow through the magnetosphere, a teardrop-shaped area of highly charged electrical and magnetic fields. This phenomenon is said to take place above 100 Km of earth’s surface. All of the magnetic and electrical forces react with one another in constantly shifting combinations. These shifts and flows can be seen as the auroras lights “dance,” moving along with the atmospheric currents that can reach 20,000,000 amperes at 50,000

volts. (In contrast, the circuit breakers in your home will disengage when current flow exceeds 5-30 amperes at 220 volts.)Tesla the famous inventor of AC electricity and induction motor had a favourite research topic bordering on science fiction. It was visualized that it should be possible to tap in to the inexhaustible electrical energy in the auroras for our electricity needs by every individual to have a proper antenna in his home and draw all his electricity needs, without the present systems of electricity generation and transmission).The NASA Time History of Events and Macro scale Interactions during Sub storms (THEMIS) mission The "ropes" are a 650,000 Amp electric current flowing between the Earth and the sun.In utilization of electric power in applications involving motion activity

4.उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.4**

ये बांए दिशा मे शरीर में स्थापित मानव हृदय जो हमारी मानसिकता में उत्पन्न मानव जीवन मूल्यों का भाव प्रधान है, जिस का सोम अधिपति है, उस के लिए प्रणाम | मानव हृदय स्वचालित विद्युत नियन्त्रक नियम से सहज कार्य करता रहता है. यह नियम संसार में हमारे जीवन के सुखों का आधार बनता है. प्रकृति के इस दान के लिए हम अत्यन्त आभारी हैं . और इस दिशा में जो बाधा पहुंचाने वाले तत्व हैं उन्हें हम न्यायोचित परिणाम के लिए प्रकृति को ही समर्पित करते हैं .

(आधुनिक शारीरिक विज्ञान के अनुसार मानव हृदय जो निरंतर एक निश्चित गति से रक्त को स्वच्छ कर के सारे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार और दूषित पदार्थों का निकास कर रहा है, वह मानव शरीर मे प्रकृति द्वारा स्वतः उत्पन्न विद्युत प्रणाली के कारण से ही है. (यही ऋषि चिंतन में स्वजोरक्षिताशनि:इषवः का विज्ञान है)

इस अद्भुत विद्युत प्रणाली के लिए हम नमन करते हैं , इस व्यवस्था के द्वारा हमारे शरीर की रक्षा के लिए हम नमन करते हैं , और जो हमारे हृदय के सुचारु कार्य करने में बाधा रूपीशत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर छोड़ते है.

On our left side is situated the ruler of all our motivations and emotions (our HEART).Its proper working operates and protects our physical body to ensures orderly life and human existence. For this blessing of Nature we are ever grateful.

{It was in deep meditation on the left side of human body that the Rishi could perceive the working of the human heart that operates continuously because it generates its own electrical signal (also called an electrical impulse.

(Fleming's Left Hand Rule on relations between electrical forces is very famous. This motive action of heart electricity comes as a natural, property of electrical phenomenon.)

Modern medical science is able to record this electrical impulse by placing electrodes on the chest. This is called an electrocardiogram (ECG, or EKG).The cardiac electrical signal controls the heartbeat in two ways. First, since each impulse leads to one heartbeat, the number of electrical impulses determines the *heart rate*. And second, as the electrical signal "spreads" across the heart, it triggers the heart muscle to contract in the correct sequence, thus coordinating each *heartbeat* and assuring that the heart works as efficiently as possible.

The heart's electrical signal is produced by a tiny structure known as the *sinus node*, which is located in the upper portion of the right atrium. (You can learn about the heart's chambers and valves here.) From the sinus node, the electrical signal spreads across the right atrium and the left atrium, causing both atria to contract, and to push their load of blood into the right and left ventricles. The electrical signal then passes through the *AV node* to the ventricles, where it causes the ventricles to contract in turn.

This left hand motor action natural property of electricity (Fleming's Rule) provides us with great comforts in our life. For this act of kindness we are ever grateful to Nature and present the impediments in our path for Nature itself to resolve.

There is another more direct way to perceive a very close connection of self generated electricity with human body that could not escape a Rishi's perception in meditation. Human heart located on our left side of the body is self regulated by electronic oscillator at 60 to 70 beats per minute to make us live. Modern scientific explanation of the phenomenon is being furnished below.

The rhythmic contractions of the heart which pump the life-giving blood occur in response to periodic electrical control pulse sequences. The natural pacemaker is a specialized bundle of nerve fibers called the sinoatrial node (SA node). Nerve cells are capable of producing electrical impulses called action potentials. The bundle of active cells in the SA node trigger a sequence of electrical events in the heart which controls the orderly pattern of muscle contractions that pumps the blood out of the heart.

The electrical potentials (voltages) that are generated in the body have their origin in membrane potentials where differences in the concentrations of positive and negative ions give a localized separation of charges. This charge separation is called polarization. Changes in voltage occur when some event triggers a depolarization of a membrane, and also upon the re-polarization of the membrane. The depolarization and re-polarization of the SA node and the other elements of the heart's electrical system produce a strong pattern of voltage change which can be measured with electrodes on the skin. Voltage measurements on the skin of the chest are called an electrocardiogram or ECG.

1. येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.5**

वे जन जो भूमि पर आमोद प्रमोद के जीवन में स्थिर रहते हैं. उन्हें स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए शिक्षा और ओषधियों की आवश्यकता पड़ती है. वे ओषधियां हमारे सुख का साधन है के आभारी हैं, उन के बारे में विद्वत्जन हमें उपदेश करें और हम अग्निहोत्र के द्वारा उन की उप्लधि से लाभान्वित हों .

Those persons who stick to worldly routines and make merry are in need of directions by being spoken to for use of proper health care medicines. We are grateful for these remedies and perform Agnihotras dedicatedly.

5.ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । । **AV3.27.5**

ध्रुवा पृथ्वी पर हमारे भौतिक जीवन के विकास का आधार विष्णु है जिस की रक्षा नाना प्रकार की वनस्पति लताओं का उदाहरण है जिन का विकास और उन्नति पृथ्वी के स्वाभाविक गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध दिशा में कार्य करने से होती है. इसी प्रकार समस्त विकास और उन्नति आराम आलस्य जैसी स्वभाविक वृत्तियों के विरुद्ध कर्मठता द्वारा ही होता है. इस व्यवस्था के द्वारा हमारे विकास और उन्नति की व्यवस्था के लिए हम नमन करते हैं , और जो हमारे अध्यवसयी कर्मठ आचरण के हमारा चित्त विचलित कर के सुचारु कार्य करने में बाधा रूपीशत्रु हैं उन्हें हम ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर छोड़ते है.

(सृष्टि के नियमानुसार हर मरणधर्मा जब तक प्रकृति के क्षय नियम के विरुद्ध सहज स्वभाव और सद्प्रेरणा से निज प्रयत्न द्वारा जन्मोपरांत वृद्धि और शारीरिक उन्नति द्वारा यौवन बल और उन्नति को प्राप्त करता है, वही काल के नियमानुसार भौतिक जीवन में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर भौतिकक्षय को जरावस्था से होते हुए मृत्यु को पाता है. परंतु अपने प्रयत्न द्वारा 'मृत्युर्मामृतं गमय' के लक्ष को प्राप्त करनेमें सदैव लगा रहता है) .

On the physical plain according to laws of nature Entropy tends to infinity. Progress and growth are products of negative Entropy. We are grateful for our growth and progress for being provided with the wisdom to operate by negative Entropy. We want to protect ourselves by distractions that form obstacles by diverting us from the path of living a life of hard work to make progress by negative Entropy, and leave the superior forces of Nature and society to deal with these distractions.

(All things born grow and make progress till they progress proceeds as programmed to peak out by negative entropy on physical plane. Inevitable march of time takes its toll by natural law of entropy tending to infinity and leads to result in extinction of the life born.)

1. येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा । । **AV3.26.6**

पृथ्वी पर उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए सब दिशाओं की परिस्थितियों से सचेत रह कर ज्ञान और उत्तम वाणी के द्वारा बृहस्पति जीवन में उन्नति का साधन होता है. बृहस्पति हमारे सुख और आनंद की रक्षा करता है. उस के लिए हम बृहस्पति को नमन करते हैं. विद्वत्जन हमरे सुख और हर्ष केलिए सदैव ज्ञान का उपदेश करें और हम सदैव अग्निहोत्र द्वारा प्रगति करें .यहां पर अग्निहोत्र का प्रसिद्ध मंत्रः-

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते |तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ||भी इसी उपलक्ष से देखा जाता है.

The strategies that provide for our rising high in life are keen awareness about what is happening about us in all the directions. For this Brihaspati बृहस्पति knowledge and appropriate articulation are the enablers. Brihaspati provides for our comforts and happiness.

We should always get wise education and counsel to this effect. We express our obeisance for this and dedicate Agnihotras for this. Here to the same effect reference can seen in very important Agnihotra mantra: – यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते |तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ||

6.ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षं इषवः ।

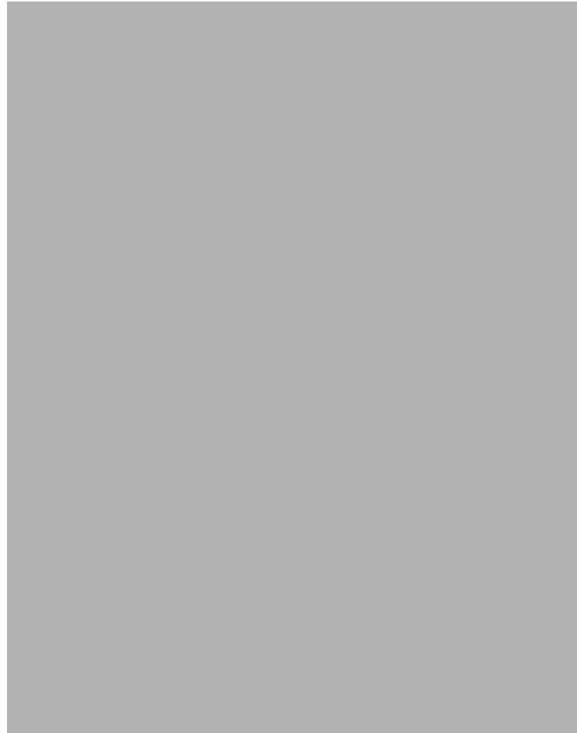
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।। **AV3.27.6**

भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुंचने के लिए बृहस्पति का आश्रय मिलता है ,जो निष्कपट निश्छल उत्तन ज्ञान और वाणी द्वारा इसी प्रकार आवश्यक है जैसे मेघ से वर्षा के बाण पर्यावरण को शुद्ध और निर्मल बना कर हमारी रक्षा करते हैं.

हम इस व्यवस्था के प्रति नमस्कार करते हैं, इस प्रकसर हमें सुर्क्षा प्रदान करने के लिए नमस्कार करते हैं और जो ममारे इस मार्ग में शत्र्य रूपी बाधाएं होती हं उन्हें हम समाजिक ईश्वरीय न्याय पर छोड़ते हैं .

To attain great heights of success and progress we have dedicate ourselves to selfless wisdom and good articulate communication. Brihaspati is the lord of these faculties. Our conduct should be as free of dirt and pollutants as the environment made clean by good rains from the clouds. We are grateful to Nature for this order of things and dedicate our efforts to Him and leave the impediments in our path to be dealt with higher wisdom and justice of Nature and society.



ENGLISH, **VEDIC RELIGION**, वेद मंत्र, वेद विशेष, वैदिक धर्म, हिन्दी

LONG LIFE IN VEDAS

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

Long Life in Vedas

RV10.59

Integrating Ashtang Yog in life.

अष्टांग योग द्वारा दीर्घायु

ऋषिः – बन्धुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुर्गौपायनाः; बन्धु ‘बध्नातिइति बंधुः’ जो बांधता है वह बंधु है . जिस को बांधना सब से कठिन है उस को जो बांधताहै वह सच में बंधु है. किस का बांधना सब से कठिन है ? मन का. जो मन को बांधता है, इधर उधर नहीं भटकने नहीं देता वह ‘बंधु’ है . श्रुतबंधु वह बंधु जिस ने श्रुतियों- वेदों वेदों के ज्ञान से विप्र बन्धु अपने को विद्वान बंधु बनाया.गोप कहते हैं इंद्रियों को ,इंद्रियों का पालन करनेवाला गोपायन कहलाया. इस प्रकार मन को बांध लेने से इंद्रियों के व्यर्थ इधर उधर भटकने से

रोकने वाला – बन्धुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुर्गौपायनाः ऋषि कहलाया. । आधुनिक भाषा में ‘पातञ्जलअष्टांग योग’ का उपदेश करने वाला ही हमारा सब से प्रिय बंधु के रूप में इस ऋग्वेदीय सूक्त का ऋषि है.

Rishi= Seer of this Sookt is

bandhuh shrut bandhuviprabandhugopaayanah ,bandhu is one who ties up in love and affection- Mind is the most difficult to tie up or control,Thus one who helps in tying up mind and prevents it from straying from its chosen straight path is Bandhu. This Bandhu is also Shrut bandhuvipraBandhu – has made himself learned by imbibing guided by Vedicwisdom, He is also Gopayanah; Gopas are physical senses, by tying up and controlling the mind by the genius of Vedic wisdom physical sensuality is brought under control. To sum up This Seer propounds the wisdom of what is named as Patanjali’s Ashtang Yog for welfare of humanity.

देवताः -1-3 निर्ऋतिः, 4 निर्ऋतिःसोमश्च, 5-6 असुनीतिः, 7 पृथिवी-द्वयन्तरिक्ष-सोम-

पूष-पथ्या-स्वस्तयः, द्यावापृथिवी, 10 (पूर्वार्धस्य) इन्द्र द्यावापृथिव्यः, ।

छंदः -त्रिष्टुप्, 8 पंक्ति, 9 महापंक्ति, 10 पंक्त्युत्तरा ।

प्रथम **4** मंत्रों की ध्रुव पंक्ति है ‘परातरं सु निर्ऋति र्जिहाताम्’- दुर्गति हम से दूर हो जाए,पूर्णतया चली जाए.

First 4 mantras have a refrain line ‘परातरं सु निर्ऋति र्जिहाताम्’ निर्ऋति is described as lady of misfortune that entices people to lives devoted to sensual pleasures and forget about higher ideals in life. ‘May this lady of misfortune go away far from us’

1.प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयः स्थातारेव क्रतुमता रथस्य ।

अध च्यवान उत्तवीत्यर्थं परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.1**

जैसे एक कुशल सारथी के रथ का यात्री सुदूर प्रदेश की लम्बी यात्रा कर के नए नए स्थानों का आनंद लेना चाहता है उसी तरह सद्बुद्धि से दीर्घायु प्राप्त करके नित्य ज्ञान वर्द्धन की साधना करें (धियो यो नः प्रचोदयात्) जिस से दुर्गति दूर चली जाए

Life of a devotee is to be blessed with enhanced life span for manifestationand realization of newer powers and wisdom, just like the passenger of car being driven by a skilful driver, wants to prolong his ride to visit and see newer places. Thus a person may desire to live longer as he has more powers and wisdom to acquire, that drives all the miseries and misfortunes far away.

2.सामन्नु राये निधिमन्न्वन्नं करामहे सु पुरुष श्रवांसि ।

ता नो विश्वानि जरिता ममत्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.2**

श्रद्धा से सामगायन, मंत्रोच्चार द्वारा यज्ञादि में हवि दे कर, उत्तम ज्ञान को श्रद्धा से धारण कर के अन्नादि समृद्धि के साधनों को प्राप्त कर के विश्व को आनन्दित करो जिस से दुर्गति दूर चली जाए

With great devotion Yajnas are performed by reciting mantras and singing hymn of Sam Ved. Great attention with faith is paid to wise counsel. Hard work is put in to obtain the material bounties and food. Thus life is sweetened and such a life drives away all the miseries and misfortunes

3.अभी ष्वर्यः पौंस्यैर्भवेम द्यौर्न भूमिं गिरयो नाज्रान् ।

ता नो विश्वानि जरिता चिकेत परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV10.59.3**

By our learning to live according to laws of the nature, just as Solar radiations enrich the entire earth, rains from clouds enrich the entire earth, by living a natural life style , all the opposing elements are overpowered by the blessings of the Almighty, and that drives all the miseries and misfortunes far away.

4.मो षु णोसोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम् ।।**RV 10.59.4**

We pray for the wisdom to follow a life style that ensures for us to behold the rising sun to bless us with long life by providing good health (Vitamin D) . With every passing day, our physical body may be aging but we continue to grow in strength of our wisdom that drives all the miseries and misfortunes far away.

Yoga in life योग साधना

5.असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः ।

रारन्धि नो सूर्यस्य संदृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व ।।**RV 10.59.5**

By wisdom of Dhyaan control the mind concentrate on desired goals in life. Make best utilisation of visible bounties of sun. Make best judicious use of fats to enhance your physical health.

{ On the subject of making judicious use of dietary fats following two Rig Ved directives provide health guidance that completely endorsed by modern science.;

1. ***1. " तयोरिद् घृतवत् पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः" RV 1.22.14a***

Wise people consume fat bearing milk products cautiously.

1. ***2. a.एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।घृतस्या धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययोवेतसो मध्य आसाम्।। RV 4.58.5***

From (human) heart emanates the ocean of thousands of warm streams (of blood) which carry in them golden colored particles shaped like bamboo plants (cholesterols), to fight the forces of diseases and self-degeneration in the human body.

(Cholesterol as seen under laboratory microscope are said to look like golden colored small elongated particles)

2.b .सम्यक स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तहृदा पूयमानाः।

एते अर्षन्त्पूर्मयो घृतस्य मृगाइव क्षिपणोरीष माणाः।।6।। ***RV 4.58.6***

Flowing Streams (of blood) in the (human) heart system uniformly in natural manner are like streams of light fluid, not thick-viscous and heavy, but like water, having the agility of a deer, which with its agile active operation provides for cleansing and purifying action in human body for its physical & mental well being of humanity.

2c. *सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।*

घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठी भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।7।। ***R.V. 4.58.7***

There are components of lipids which in red blood stream perform scavenging speedy action on the edges of their paths (the linings) of blood arteries to speed up the flow and maintain the blood pressure measure to desirable levels.

(This is a very clear reference to HDL-High Density Lipids, which

keeps the arteries clean and unclogged)

2d. अभिप्रवन्तु समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।

घृतस्य धाराः समिधो न सन्तु ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ***RV4.58.8***

These lipid particles act like fuel in the physical activities which bring forth healthy cheerful states of temperament. Intelligent persons live life of good physical activity – exercise that burns this fat as fuel to provide total mental & Physical fitness.

2e. कन्याइव वहतुमेतवा उ अङ्ज्यङ्जाना अभिचाकशीमि।

यत्रा सोमः सूयते यत्रा यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥ ***RV 4.58.9***

These lipids in conjunction with suitable foods with proper intellectual life styles of people engaged in their daily householder duties of performing various Yagnas. That leads to provide praiseworthy results, like maidens decorating to maintain their good looks thus engaging themselves in actions for achieving good lives in desirable households.

2f.अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविजानि धत्त।

इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ ***RV. 4.58.10***

These lipids obtained from blessings of cows provide all the riches, bounties of health & wealth to wise people.}

6.असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्।

ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति।।**RV 10.59.6**

By wisdom of Yoga strengthen your physical faculties such as eyes etc, and develop energy to enjoy life. By achieving long life gain the blessings to see many sun rises and achieve sustainable prosperity by affirmative positive actions.

चक्षुः पुनः प्राणं इह नो धेहि भोगम्।

ज्योक् पश्येम सूर्यं उच्चरन्तं अनुमते मृळया नः स्वस्ति।।**RV 10.59.6**

With wisdom of Yoga strengthen your Pran प्राण to enjoy long physical health of eyes and body. By achieving long life gain the blessing to see many sun rises and achieve sustainable prosperity by affirmative positive actions

Organic Food. जैविक अन्न

7. पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनद्र्यौदेवी पुनरन्तरिक्षम् ।

पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां3 या स्वस्ति ।।**RV 10.59.7**

पृथ्वी,सूर्य, अंतरिक्ष पुनः पुनः स्वादिष्ट रस से युक्त अन्नादि हमारे पोषण दीर्घायु और कल्याण के लिए सदैव प्रदान करें.

The soil, the solar bounties, the atmospheric bounties nature's elements may bless us every day, with life enhancing food for our welfare and prosperity.

8. शं रोदसी सुबन्धवे यह्वी ऋतस्य मातरा ।

भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवी क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ।।**RV10.59.8**

By following the directives Ashtang yog the twin Bounties of nature indeed establish the true wisdom in us. By exercising control on our sense organs an individual attains the wisdom of life style that prevents any harm to come to him physically or mentally.

महान द्युलोक और पृथ्वी लोक की अनुकूलता से उत्तम धातुओं का निर्माण होता है, शरीर और मन स्वस्थ रहता है. मन पर उत्तम नियंत्रण द्वारा वीर्य की सुरक्षा से मस्तिष्क दीप्त बनता है.यही ऋत का निर्माण करते हैं. बाह्यलोकों और और आध्यात्मलोकों के अनुकूल आचरण से कोइ भी दोष हमारे शरीर, हृदय, और मन को क्षति नहीं पहुंचा सकता है.

9. अयं द्वके अव त्रिका दिवश्चरन्ति भेषजा ।

क्षमा चरिष्ण्वेककं भरतामप यद्रपो

द्यौः पृथिवी क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ।।**RV 10.59.9**

For leading a life pure in body and mind, three medicinal roles of Earth and Sun duo are important.

Sun through its photobiology produces Vitamin D in living beings , Carotenoids and other body building life supporting elements in plant kingdom, and by its rain making clouds provides water that is a great medicine.

Earth by its microphages acts as ultimate sterilizer, and producer of all plant as nutritional and medicinal products.

An individual by wisdom of life style thus prevents any harm to come to him physically or mentally.

पृथ्वी और अंतरिक्ष में सूर्य यह दोनो जीवन में तीन प्रकार की ओषधियां प्रदान करते हैं.

पृथ्वी सब प्रदूषण को स्वच्छ करने की क्षमता द्वारा,जिसे आधुनिक विज्ञान मे माइक्रोफाजिज़ का नाम दिया जाता है. जिस का उदाहरण मट्टी से हाथ साफ करने, झूठे बर्तन इत्यादि साफ करने कि प्रथा में देखा जाता था, प्राकृतिक चिकित्सा में पेट पर मट्टी के लेप में देखा जाता है, जैविक वनस्पति द्वारा अन्न और ओषधियों के पृथ्वी मे उत्पादन में पाया जाता है.

इसी प्रकार सूर्य के प्रभाव से मेघों द्वारा वर्षा का ओषधि तुल्य जल, उदय होते समय के सूर्य द्वारा विटामिन डी तत्व और दिन में सूर्य के प्रकाश द्वारा वनस्पतियों में पौष्टिक ओषधि तत्व का निर्माण , इस प्रकार से तीन तीन प्रकार के ओषधि तत्व का प्रकृति मे पृथ्वी और अंतरिक्ष में सूर्य उपहार प्रदान करते है. इस प्रकार बाह्यलोकों और आध्यात्मलोकों के अनुकूल आचरण से कोइ भी दोष हमारे शरीर, हृदय, और मन को क्षति नहीं पहुंचा सकता है.

{ Sun's importance in health by photobiology forms a part of Vedic wisdom quoted below; Cardiac Health Photobiology in Veda

Photobiology Cardiac HEALTH in Vedas
RV 1-125-1, RV1.50, RV1.43, AV1.22
प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान् प्रतिगृह्या नि धत्ते ।
*तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः ।। ऋ **1-125-1***
प्रातःकाल का सूर्य उदय हो कर बहुमूल्य रत्न प्रदान करता है। बुद्धिमान उन रत्नों के महत्व को जान कर उन्हें अपने में धारण करते हैं।
तब उस से मनुष्यों की आयु और संतान वृद्धि के साथ सम्पन्नता और पौरुष बढ़ता है।
(वैज्ञानिकों के अनुसार केवल UVB किरणें, जो तिरछी पृथ्वी पर पड़ती हैं
(संधि वेला प्रातः सायं की सूर्य की किरणें ही विटामि¬न डी उत्पन्न करती हैं।)

RV1-50-11
RV 1-50-1
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृषे विश्वाय सूर्यम्| || RV1/50/1
उदय होते सूर्य की किरणें जातवेदसंबुद्धिमान के लिए ईश्वर की कृपा से उत्पन्न कल्याणकारी पदार्थों के वाहक के रूप मे प्राप्त होती हैं, जब कि सामान्य विश्व के लिए सूर्य दृष्टीगोचर होता है.

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ।। ऋ 1-50-11
दिवस के उदय को प्राप्त होते हुए, मित्रों में महासत्कार के योग्य उदय होते हुए सूर्य और प्रकाश संश्लेषण से उत्पन्न हरियाली (greenery by photosynthesis) से हमारे हृदय और दूसरे हरणशील (पीलिया) आदि रोगों का¬नाश होता है ।
(नवजात शिशु सामान्य रूप से आज कल पीलिया –jaundice रोग से ग्रसित होते हैं। आधुनिक अस्पतालों में बच्चों की नर्सरी में जन्मोपरान्त पीलिया –Jaundice- से पीड़ित बच्चों के उपचार के लिए कृत्रिम सूर्य के प्रकाश का प्रबंध होता है । कोई कोई चिकित्सक नवजात बच्चे को सूर्यस्नान कराते हैं .

शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि ।
अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि ॥ ऋ 1-50-12 , अथर्व 1-22-4

रोपित हरे वनस्पतियों कुशा घास हरे चारे इत्यादि पर पोषित दुग्ध में रोग हरण क्षमता है। इस लिए ऐसे हरे चारे पर पोषित गौओं के दुग्ध का सेवन करो।

आज विश्व के विज्ञान शास्त्र के अनुसार केवल मात्र हरे चारे पर पोषित गौ के दुग्ध में ही CLA (Conjugated Linoleic Acid) और Omega 3 वांछित मात्रा मे आवश्यक वसा तत्व मिलते हैं। केवल यही दुग्ध मा¬नव शरीर के सब स्वज¬न्य रोग निरोधक और औषधीय गुण रखता है। इस स्थान पर वेदों में एक और आधुनिक वैज्ञानिक विषय photosynthesis प्रकाश संश्लेषण का उपदेश भी प्राप्त होता है। सब व¬नस्पति के बीजों में जो तैलीय तत्व होता है उसे वैज्ञानिक ओमेगा6, Omega 6 नाम देते हैं। आज कल के सब प्रचलित रिफाइन्ड खाद्य तेलों में मुख्यत: केवल ओमेगा6, Omegta 6 ही होता है। विज्ञान बताता है की अंकुरित होने पर सूर्य के प्रभाव से photosynthesis प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया से ओमेगा 6 हरे रंग को धारण करता है जिसे आहार में ग्रहण कर¬ने पर ओमेगा 3 पोषक तत्व उपलब्ध होता है । यही गौ के पोषण मे हरे चारे का महत्व है।

(Omega 3 is found to be anti obesity, anti cancer, anti artheschelorosis – heart and brain strokes due to clogging of arteries and High blood pressure, anti Diabetes in short preventive as well as a medicine against all Self degenerating Human diseases)

उदगादयमादित्यो विश्वे¬न सहसा सह।
द्विषतम्मह्यं रधयमो अहं द्विषते रधम् ॥ ऋ 1-50-13

उदय होते सूर्य के द्वारा विश्व को साहस सामर्थ्य प्रदान कर के, धर्माचरण पर न चलने वालों के शत्रु रूपी रोगों को नष्ट करके,आनन्द के साधन प्राप्त होते हैं ।

इसी विषय पर अथर्व वेद में निम्न मन्त्र मिलते हैं।

अनु सूर्यमुदयतां हृदद्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन स्वा परि दध्मसि ॥ अ 1-22-1

हृदय में उत्पन्न हरणशील व्याधि का उदय होते सूर्य से तथा हिरण्य वर्ण (Golden colored) गौ दुग्ध के सेवन से उपचार करो।

गौएं दो प्रकार की मानी जाती हैं अधिक दूध देने वाली तथा दूध और खेती में दोनो मे उपयोगी पाइ जाने वाली.

(Milk breeds and Dual purpose breeds.) सनहरे रंग की हिरण्य वर्णा गौ लाल सिंधी,साहीवाल, गीर इत्यादि अधिक दूध देनो वाली पाइ जाती हैं। इन्ही के दूध का हृदय रोग में महत्व बताया गया है ।

परि त्वा रोहितैर्वर्णै दीर्घायुत्वाय दध्मसि ।
यथाऽयरपा असदधो अहरितो भुवत् ॥ अ 1-22-2

लाल रंग से तुझे दीर्घायु प्राप्त हो। जो रोगों के हरण से प्राप्त होती है॥

या रोहिणीदेवत्याय गावो या उत रोहिणीः।
रूपं रूपं वयो–वयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि॥ अ–1-22-3

उदय होते हुए सूर्य और गौ की लालिमा रूप और आयु की वृद्धि के लिए देवता प्रदान करते हैं ।

हृदय स्वास्थ्य यज्ञ ऋग्विधान के अनुसार
ऋग्वेद सूक्त ***1-43***
ऋषि कण्वो घोरः, देवता रुद्रः , मित्रावरुणौ, सोमः च
के ***9*** *मन्त्रों से*
अपने स्वास्थ्य लाभ के हेतु आहार, व्यवहार, उपचार के साथ परमेश्वर स्तुति व्यक्तिगत ,सामाजिक मानसिकता और पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए इस यज्ञ को भी सम्पन्न करना हित कर होगा।

(इस यज्ञ का विधान रोग निवृत्ति हेतु मनुष्यों, गौओं अश्वों इत्यादि के लिये किया जाता है। गोशाला में किये गए इस यज्ञ को शूलगवां यज्ञ कहते हैं)
कद रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे ।
वोचेम शंतमं हृदे ॥ ऋ 1-43-1
विद्वान पुरुष कब महान रोग नाशक रुद्र की हृदय के लिए सुखदायी शांति की प्रशंसा के स्तोत्र सुनाएंगे ?

यथा नो अदितिः करत् पश्वे नृभ्यो यथा गवे ।
यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ ऋ 1-43-2
(अदिति से यहां तात्पर्य सन्धिवेला के आदित्य से है.) संधि वेला का सूर्य राजा, रंक, पशुओं ,गौवों सब के अपनी संतान की तरह रुद्र रूप से रोग हरता है.
यथा नो मित्रा वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति ।
यथा विश्वे सजोषसः ॥ ऋ 1-43-3
प्राण व उदान सूर्योदय के समय उसी प्रकार स्वास्थ्य प्रदान करते हैं जैसे विद्वान पुरुषों के उपदेश के अनुसार सूर्य की किरणों से उत्तम जल, प्रकाश संश्लेषण – Photosynthesis- औषधीय रस से हरी शाक इत्यादि.

गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् ।
तच्छंयोः सुम्नीमहे ॥ ऋ 1-43-4
अनिष्ट को दूर करा के सुख शांति के लिए ,विद्वान लोग स्वास्थ और उत्तम जल के औषध तत्वों के ज्ञान का उपदेश करें.
यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते ।
श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ ऋ 1-43-5
जो सुवर्ण जैसा दीखता सूर्य है, वही देवताओं मे श्रेष्ठ और महान वीर्यादि तत्व प्रदान करता है.
शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये ।
नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ ऋ 1-43-6
वही हमारे समस्त पशु, पक्षियों, राजा, रंक, नारी, गौ सब का रोग नष्ट कर के स्वास्थ्य प्रदान करता है.
अस्मे सोम श्रिय मधि नि धेहि शतस्य नृणाम् ।
महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥ ऋ 1 -43-7
हमें यह ज्ञान होना चाहिये हमारी सैंकडों की संख्या के लिए वह एक अकेला तेजस्वी अन्न, औषधी, बल प्रदान करने में समर्थ है.

मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त ।
आ न इन्दोवाजे भज ॥ ऋ 1-43-8
हमारे ज्ञान मे विघ्न डालने वाले, और धन के लोभी हमें न सतावें.
हमारा ज्ञान हमारा बल बढावे.

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।
मूर्धा नाभा सोम वेन आभूपन्तीः सोम वेदः ॥ ऋ 1-43-9
अमृत और सत्य श्रेष्ठ ज्ञान सदैव हमारा मार्ग दर्शन कर के हमें उत्तम स्थान पर प्रतिष्ठित करें

अथर्व वेद 1/12 देवता यक्ष्मानाशन्
जरायजः प्रथम उस्रिया वृषा वात्व्रजा स्तनयन्नेति वृष्टया!
*स नो मृडाति तनव ऋजगो रुजन् य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे!! अथर्व **1/12/1***

This Ved Mantra is very interestingly describing a very modern topic regarding the medicinal efficacy of colostrums of a new born cow. It is equally applicable as directive in Vedas about importance of breast feeding.
Colostrums is the pre-milk fluid produced from the mother's mammary glands during the first 72 hours after birth. It provides life-supporting immune and growth factors that insure the health and vitality of the newborn.
Commercial Exploitation of Colostrums of Cows for Human beings is a big modern pharmaceutical industry.
Breastfeeding in humans as also for new born calves provides natural "seeding" — the initial boost to immune and digestive systems –.
Loss of youth & Vigor
In western medicine which gives no importance to ब्रह्मचर्य ,it is observed that after puberty, the amount of immune and growth factors present in human bodies begin to decline. Human body become more vulnerable to disease, its energy level and enthusiasm lessens, skin loses its elasticity, and there is gain of unwanted weight and body looses muscle tone. The modern humans also live in a toxic environment, with pollutants and allergens all around us.
Research has shown that Colostrums have powerful natural immune and growth factors that bring the body to a state of homeostasis — its powerful, vital natural state of health and well being. Colostrums help support healthy immune function; & also enable us to resist the harmful effects of pollutants, contaminants and allergens where they attack us.
Plus, the growth factors in Colostrums create many of the positive "side-effects" of a healthy organism — an enhanced ability to metabolize or "burn" fat, greater ease in building lean muscle mass, and enhanced rejuvenation of skin and muscle.
It is a very common modern medicine practice to collect colostrums from freshly calved cows to produce medicinal products for boosting disease resistance, and health promotion tonics for sick and elderly humans, specifically in debilitating diseases such as tuberculosis. New born calves particularly males are immediately taken away for slaughter. Cow's Colostrums are collected for making medicines for the Pharma industries. Calves in general are fed on an artificial feed called Milk Replacer.
References to in the above ved mantra Atharv 1.12.1- जरायुजः, उस्रिया, वृषा, स्तन्यन्नेति, वृष्टया, त्रेधा, are clear references to Colostrums – first few days milk of a cow just after calving. Literal meaning of these vedic words are – produce of a just calved cow which is in the process of releasing the placenta, milk giving cow, shower of milk from the udder and three rumens of a cow having played the important role in giving rise to the extraordinary medicinal value of this early milk of a cow. In this Sookt this is being promoted for curing Tuberculosis, as
the very Dewata of this sookt- यक्ष्मानाशन्
suggests.-

अङ्गे अङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम!
अङ्कान्त्समङ्कान् हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता!! अथर्व **1/12/2**
हे सूर्य आप की और समीपवर्ती देवताओं चंद्रमा, नक्षत्रादि तारादि की दीप्ति इस जगत और प्रत्येक प्राणी के अंग अंग में प्राण रूप से स्थित है. तुझ को नमस्कार करते हुवे हम हवि द्वारा तुम सब को परिचर्या द्वारा तृप्त करते हैं.

मुञ्च शीर्षक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य!
यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च!! अथर्व 1/12/3
हे सूर्य इस पुरुष को शिरोवेदना से मुक्त करो.वह खांसी जो इस के अंग अंग (संधिस्थलों) में घुस कर बैठा है, उस से भी मुक्त कर, जो शरीर को सुखा देने वाला पित्त विकार है उस से भी मुक्त कर, जो वर्षा काल मे श्लेष रोग वात विकार से होता है उस से भी मुक्त कर. सब त्रिविध रोगों की निवृत्ति के लिए वन वृक्षों, वनस्पतियों द्वारा यह सब रोग दूर हों.
शं मे परस्मै गत्राय शमस्त्ववराय मे!
शं मे चतुभ्यो अङ्गेभ्य: शमस्तु तन्वे3 मम!! अथर्व 1/12/4
मेरे ऊपर के शिरोभूत अङ्ग के लिए, मेरे नीचे के शरीर के लिए, मेरे हाथ पैर, तन सब अङ्गों के लिए सुख हो.}

10. समिन्द्रेरय गामनड्वाहं य आवहदुशीनराण्या अनः ।

भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवी क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ।।**RV 10.59.10**

इस प्रकार जोअपने शरीर को निर्दोष स्वस्थ बना कर, और इन्द्रियों का अधिष्ठाता बन कर सम्यक बुद्धि से इस शरीर रूपि जीवन रथ को निर्बाध आगे ले चलता है, उस के बाह्यलोकों और आध्यात्मलोकों के अनुकूल आचरण से कोइ भी दोष शरीर, हृदय, और मन को क्षति नहीं पहुंचा सकते |

Thus those who live a life by making their physical body free from all ailments and keep all their sensual cravings under complete control by exercising Vedic wisdom, attain the life that suffers from any harm to come to them physically or mentally

वेदों में सौर ऊर्जा विषय

DECEMBER 3, 2013 LEAVE A COMMENT

सौर ऊर्जा विषय

RV 5.48 Strategy for Progress in this world

1.कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम्|
आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी|| ऋ**5.48.1**

किस प्रकार अपने राष्ट्र अपने जन्म स्थान – क्षेत्र के यश और प्रगति के लिए चारों ओर प्रकृति की मेघादि जलों की उदार वृत्तियों को स्वीकार करती हुयी अनुकूल बुद्धि ग्रहण करें?

What are the strategies for adopting one's place of birth, his life and nation to attain fame and prosperity by making use of nature's benevolent bounties like rains and sun shine?

2.ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः।
अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः॥ ऋ**5.48.2**

देवताओं की विद्वत्ता की कामना करते हुए साधारण जन और वीर जनों के कर्म और प्रज्ञान के आवरण को लोक लोकांतर में उसी प्रकार सब को नीचे की ओर बढ़ाते हैं, जिस प्रकार जल अपनी पूर्ववत् वृत्ति से नीचे को बह कर निरन्तर उदाहरण प्रस्तुत करता है

It is by intelligent use nature's bounties to employ them in the form of negative entropy like working against water's tendency to flow from higher levels to lower levels that scientists devise means of progress by using negative entropy.
3.आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति मायिनि।
शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा॥ऋ**5.48.3**

यद्यपि सूर्य की सैंकड़ो किरणें दिन रात के चक्र को चलाती हुइ पाषानों को वज्र के समाकरती और न विदीर्ण मानव की आयु /जीवनको क्षीण करती लगती हैं. परंतु बुद्धिमत्ता से जीवन शैलि सूर्य के इस व्यवहार का उत्तम रूप देख पाती हैं. जैसा यजुर्वेद में विस्तार से कहा है;

It appears that Solar energy that destroys rocks with strong force and works on aging of human body , but there is a hidden positive aspect to this. By intelligent life style the solar bounties are a boon. " अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाणामद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि सम्भ्रतं पयः।

तां न इष्मूर्जं धत्त मरुतः संरराणा अश्मँस्तेक्षुनमयि त ऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥ यजु **17.1"**

यह सूर्य की किरणो पर्वतों पर चट्टानों को विदीर्ण कर के उर्वरक भूमि और मेघों से जल की वृष्टि द्वारा अन्न और ओषधी के साधन उत्पन्न करके कर मानव को जीवन को संरक्षण प्रदान करते हैं.

Solar heat in conjunction with microbes facilitates the disintegration of rocks in the mountains to create fertile virgin soil for excellent growth of pants and herbs.
4.तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः।
सचा यदि पितुमन्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे॥ऋ**5.48.4**

1. परशु के समान तीक्ष्ण चुभने वाली अग्नि के समान सूर्य के ताप का सुंदर रूप मानव को ऐश्वर्य पदान करने के लिए है. यदि उस सौर ऊर्जा का सद्प्रयोग किया जाए.

2. The scorching heat of sun by its intelligent use is an excellent source to provide sustainable prosperity to human life style .

5.स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम।
न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम॥ऋ**5.48.5**

3. उत्तम जीवन व्यवस्थाके लिए सूर्य की ज्योति का उपयोग करने के चार प्रकार के साधनों पर अनुसंधान करके पुरुषार्थ से कार्यान्वित करना चाहिए. (आधुनिक विज्ञान प्रौद्योगिकी के अनुसार सौर ऊर्जा से इन चार प्रकारसे लाभ लेना चाहिए.

4. 1. गृह निर्माण पद्धति जिस से प्राकृतिक रूप से घर में रहने के तापमानको नियंत्रित किया जा सके.

5. 2. सौर ऊर्ज से ऊष्णता के साधन जैसे पानी गरम करना,सौर ऊर्जा चालित चुल्हा, सुअर ऊर्जा से भिन्न भिन्न वस्तुओं का उपचार

6. 3. सौर ऊर्जा से विदुत उत्पादन

7. 4. सूर्य की ज्योति का कृषि उत्पादन में बुद्धिमत्ता से प्रयोग. ,

For excellent (sustainable) living four strategies are talked about to make use of the solar bounties to pursue research, develop knowledge, make efforts and utilize them.

Modern technology mentions the following four strategies.

Four Methods of Solar energy utilization

1.Passive solar energy: This is the simplest and least expensive form of solar power. Unfortunately, it requires that your home be specifically designed to take advantage of solar heat, and situated on a lot to take maximum advantage of the sun’s rays. You can design passive solar capability into new construction, but this method is not applicable to existing homes.

2.Solar energy for heat: This is the oldest use of solar energy. Using relatively inexpensive flat plate collectors, heat from the sun’s rays is used to heat air, water, or other fluid that flows through coils in the panels. This heat can then be used to heat the water for your home or the home itself.

3.Solar energy for electricity: This method uses a photovoltaic (PV) solar power panel that converts sunlight into electricity. This power can be used to power your home’selectrical lighting and appliances. However, ancillary systems (storage batteries, inverters) are required to provide the right kind of electricity throughout the day and night. And it still takes a large surface area of PV cells to provide sufficient electrical power for the average home.

4. Inexpensive applications for solar energy in the yard or garden: You can use very inexpensive small photovoltaic panels to provide electrical power for yard lighting, solar pumps for water features, solar electric fencing, even a solar oven. These applications won’t save as much as powering your home with solar, but they also don’t cost much.